

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. २८६१
क

Title जीत-गोविन्द काव्य
(हिन्दी-संस्कृत)

Author जयदेव : राग-संस्कृत

Age

Subject काव्य

No ६१२६ पत्र
८४०

७०७

रा-रा
स-

नी रामकली जाल । सवैया । पाइपै स
नसार करै पलका परपाय दियो भयभीने । सो
यगई कहि केशव कैसेहूँ कोरही कोरक सौह
न कीने । साहसकै सबसौं सबछै छिनमे
हरि मानि सबै सबलीने । एक उसासही
के उससे सिगोई संगेथ विदा करि दीने ।

रागिनी रासकली ताल सवेया मोहिबो मो
नकी रातिको रातिही पढ्यो वैत कह्यौ पढ़े
गी । ओप उरो जनकी अपजे दिन कहि मढ़े अंगि
यान मढ़ेगी । नैननकी राति गरु चला चल के
शवदास अकास चढ़ेगी । माई कह्यो यह माय
गी दीपतिजौ दिनहै इहि भाति बढ़ेगी । रागि

रा-रा
से

रागिनी रामकली ताल सवैया बोली न सवे
बलाय रहे हरि पायपरे अरु डो लिये डोरी । के
सव भेटि वेको भरि अंक छुड़ाउ रहे जकमै नहि
छोरी । सूर्ये चित्त वेकौ केतो कियो सिर चापि उ
दाय अंगदति होरी । मै भरि चित न ऊन चित्यौ न र
ही राहि नैनति लाजति गोरी । रागिनी रामकली ताल

रागिनीरामकली ताल सवैया थनभूथरि
लोचन लोलसोमेलि स्र कोड कटाक्षकी कोरक
छो । सख माथरि वानी वसी चतराईयो केश मोह
न तास पछी । ऊच तेहू तेनै तन लाज विराजति
वार गहे चहे ओरमछी । नवछी इति बालहि
बालकता इति अंग अनेरा की फौज चछी ॥

रा रा
स

सवैया । आजमै देखी है गोपसनाइ कहोयन अ
सो असीरकी जाई । देखत ही रहिये इति देखकी
देखते औरन देखी सहसई । एकही बेक विलोक
ति ऊपर वारो विलोकि विलोकति काई केसव
दास कलानिय वरु हूजिय काम किमैरो क
हाई । रागिनी रामकली नाल सवैया-

सवैया । वौलै न बाल बुलावत रहे न परेष लिखै
भुव प्रेम परेषौ । आपन हाथ विलोकि विलो
कि कही तव केसव बुहि वसेषौ । छोटी बड़ी
विधि रेष लिखी जरा आशु को रेष सब कौन जले
षौ । प्रेम ते बोल सस्यो न पश्यो प्रकलाय कस्यो
पिय कैसी है देखौ । रागिनी राम कली ताल ।

रा-रा
स-

हैगति मेद मनोरु केसव आनेद केद हिये उलहे
हैं। भौह विल्याति कोमल हासति अंग सवास
निगाछे गहैहैं। बेक विलोकनि को अविलो।
कि समारुके नेद ऊमार रहेहैं। एई तो काम के
वान कशावत फूलन के विधि भूलि कहैहैं। रा
गिनी राम कली ताल सवेया तोरिन गायव

कान्ह भले जूभली समुजईहैं मोहि समुझको
जौ उमस्योहो । केशव आपनो मानिक सो मन
राय पयाय दै कौनै लयोहो । नैनन हो मिलवो
करियै अब वैनन को मिलिवो नो रयोहो । जाउ
कसो तम जै सो सखी सइ अहो गुणालमै असो क
ह्योहो । रागिनी रामकली ताल सवैया

रा-रा-
से दि आगे कै केश आपदि आसन दीनौ । आपदि पा
इ पषारि भलै जल पान कौ भाजन लाइन वी
नौ । वीरा बनाइ कै आगे थरे जव वै शरी कौ कर
वीजन लीनौ । वारे गरी शरी असो कह्यो हसि
मैतो शनो अपराध न कीनौ । रागिनी राम कली
ताल सवैया चितवौ चित्त बोए हसा ऐ

जावत नावत वार अनेक सिंगार वनायो । जीह
मै आनको आनिवो क्योपे तेरो नऊन भयो म
न भायो । भावै सुने करिवो करि भासिति भाग
वडेव सनै करि पायो । कान्हो सथे जवाहति
नाही सचाहति है अव पाइ लगायो । रागिनी रा
म कली नाल सवैया आवत देखिलिये उ

रा-रा-
क- जू देखो सवै हित बात सवौ जू सनी सबहीहैं य
ह नौ कछु और वहे सबही अव सौह करौ वकरी
जतहीहैं । समजार कहौ समझी सबके सब
रूढी सवै हमसौ जकहीहैं । मान कियौ अपमा
न करौ तो हसो अवके हसिके को रहीहै । रागि
नीराम कली ता- सवैया वैदी सषीन की

हमै हो बुला एतै बोलौ रहै नित मोनै । मोह
अनेकनि आवइ अंक करौ रतिकौ प्रति रैन की
गौनै । बवाएतै पाऊ वस्याइ विरीजन आईहो के
शव आजही गौनै । मोहन के मनको मोहनी
सकहौ यह थो सिष इसिष कौनै । रागिनी रा
मकली ताल । मवेया । हित के इत देषइ

रा-रा-
स-
उपरी । एकचित्तै मसकाय उतै उत वात कहै
वड भायपरी । चारुचकोर विलोचन भासित
जे दिसतै अंगरी पमरी । सखि आजगई होनी गो
कल हौं सबही मिलि हैजको चोदकरी । रागि
नी रामकली ना- संवेया हौं सब पाइ सिपाइ
रही सिख सीखे नए सिख नैहू सिपाई । मैवहुनै अष

सोभे सभा सवरी के सनै नन माऊ वैसे । वृजे ते वा
न वस्याय कहै मनरी मन केशव दास हूँ । बेल
तिरै इत बेल उतै पिय चित पिलावति यों विलसै
कोई जानै नरी दृगदौरिक वै कितकै हरि ओषिन
छै निकसै । रागिनी राम कली ताल सवेया
केशव राय की सौंर कै कै कछू एकन आप्रमै हो

रा-रा
सं
बोल हसौं हैं । देवदूथौ इक बार सकोचन आर
स लोचन आरसी सौ हैं । आपन वैसेही साजसौ
आज सभूलि गई पिय काल्हिकी सौ हैं । रागि
नीराम कली ताल सवैया वैदिकनी हजना
रिनमै वनिश्री हषभान ऊमारि सुभागी । घलति
ही सखि चौपर चारि भई नहि बिल षरी अनरागी

पाइसी देखोपै केशव केहे कटेवन जाई । देउदिये
वित साथनिहे संग छूटत कौं बलकी बलताई ।
देखउ दैमधकीपट कोटि मिटै नचटै विषकी विष
ताई । रागिनी रासकली ताल सवैया केश
व औरनसौ रसरासि रसो रस वाड सवै हमसौहैं ।
हैं मन मैलेन जो लोकछु अब छाड्डु वो लिबो

रा-रा
स-

है मरा आय गये कियौ आवेहिरो सजनी सुख
दाई । आयन नेद कुमार सवा सवकौन विचार
अवेर लगार्इ । रागिनी राम कली ताल सवेया
केशव जीवन जो हज को निज जीव झेते अति वा
पहि भावै । जापर देव अदेव कुमार नि वारत माई
नवार लगार्वै । ताहरि पैं नूरा वारि की वेदी मरु

पीछेते केसव बोलि उदे सति कै चित चान रि आन
रि जागी । जानिन काऊ कवै हरि के हर मारग
ही सरसी दग लागी । रागिनी राम कली ता
सवैया । सधी भूलि गई भूल प कियौ काह कि
भूलेई डोलत वादन पाई । भीत भये कियौ केश
व काहू सो भेट भई कोऊ भामति भाई । आवत

रा.रा. सं. केज विराजति गोप दधु कमला जल केज ऊटी
महसोई । रागिनी रास कली ताल सवैया पं
य एरेहते प्रीतम तौ कहिके शवके हनमै दयादी
नी । तेरी सखी सिख सीपीन एकहे रोषझकी सिख
सीखि जलीनी । चंदन चंद सरोज समीर जौ अवदेह
भरे सखसीनी । मैउलटी जकरी विधि मोकड़ न्यायन

वर पाय ऊँवाय दिषावै । हौं तो वची अव सासति
हे ऐसे और जदे पै तो ऊतर आवै । रागिनी राम क
ली ताल सवैया भाषति है सष्वेन सषीन सौं ला
षहिये अभि लाषनियो है । कोमल सासति नैन वि
लासति अंग सवासति कोमल मो है । मूरति वे
न किथौं तलसी तलसी वन में रति मूरति को है

रा-रा-
स-

काहूके प्रेम पगीहैं । रागिनी रामकली ता-
सवैया केशव कैसेहैं एख प्रण मिल्यो मनभा-
वतो भाग भयोरी । जानैको मारि कहा भयो कैौ
हेजो औथीको आयु ऊयो सटह्योरी । ताकड
तून अजौ हसिबोलै जरु मेरो मोहन पाय प
ह्योरी । काढहूँ इह तेरो कठोर इहे विर

हैं उलटी विधि कीनी । रागिनी रामकली ता
सवेया आज कछु अखियो हरी औरसी मानो
महावर मोहि रेगी हैं । मोहन मोहि सी लागत
मोहि उतेपर मोहन मोहि लगी हैं । मेरी सौ
मोहसौ मानऊ बेगि हिये रस रोसकी रीति ज
गी हैं ॥ मेरे वियोगके तेज तवी कियौ केशव

रा रा
स

हैं। रागिनी रासकलीताल सवैया हलमे
हल सवास कवाससी भाकसीसे भये भौनस
भागे। केशव वाग महे वनसों जरसी चढीजो
नह सवै अंगदयो। नेह लग्यो उरना हरसों निस
नाह चरी ककहे अनरागे। गारि सो गीत विरी
सिससी सिगोरे सिगार अंगार सोलागे। रा-रास-

होनल हून जह्योरी । रागिनी रामकली ता-
सवैया औधिदै आय उहो उनसौ यह भोजन
कै अवही हम अहै । ताकहुनौ अवलौ वहराहै
राषी वर्याइ मरु करि महे । बैठे कहा इनकी फि
राके शव जाहुनही कोऊ जाय जकैहै । जानत
हौ उन आषितिते अस ओउमरो वहुह्यो अनिर

रा.रा.
स.

मली जाल सवैया गोप वडे वडे वेहे अथाइति
केशव कार सभा अवगाही। विलत बालक जा
ल गलीनमे बाल विलोकि विकाही। आवत जा
तिलगाई चहेदिस चंचरमे पहिचानत काही। वे
दमो आनन काफि कहे चली सृजन है ककुनो
ही किनाही। रागिनी राम कली ना सवैया

नाल सवैया लाडिली लीलिक लोरि ल
री कहे लाल लके कहे अंगि लगायके । आज
तो केशव के सहै लैरुपे लागन देतिन देष
आयके । वेराचलौ उदि आई लिवावन दोरि
केली एही अऊलायके । भूलेहूँ गोकुल गाउमै
गोविंद कीजै गुरुन गाउ चरायके । रागिनी रा

रा-रा-
स-

नही वितयो इह कान्हू कियो लविलालच केतो-
झझाके झरिबहे प्रति केशव पाय परे तो परेई
रहे तो । हौं तो यहै तबही की विचारति होतो उ
मान कौं याही तो एतो । लामा लहैं घन पात
रि देह जनै कवरी विधी ओंघें न देतो ॥ इति
रागिनी रास कली नाइका नाइक समाप्तम् ॥

होत कदा अवके समुके समुकेन तवै जवहे स
मजाए । एकहि देक विलोकनि माहि अनेक अ
मोल विवेक विकाए । जान पयो नजना वझू
जनमावधि लौउहि जातिहो पाए । वात वनाय
वनाय कदा कहौ लेइ मनाय मनाय जौ आए ।
रागिनी राम कली नाल सवैया । भूलेहे सुखे

ग-रा
क- सो दास रूपकीसी माला प्रेमकीसी माला आज
लौ न देवी सति जैसी आज दीसी है ॥ रागिनी
रामकली ताल कवित चंचलनहूँ नश्य
प्रचरा नहूँ नश्य सोवे नैऊ सारिकाऊँ सकतो
सवायोजू । मंदकरोँ दीपउति चंद मुख देखि य
न दौरिकै उगई आऊँ हारतै दिषायोजू । मयाज

शशिनी रामकली ताल कवित सकता
मनित की है मक्त उरीसी नाक दोत दास्यो द
मनी हसनी वनी सी है । मोहन के मेहन के प्र
रोन की सी रेष भुजुटी खेवष भाव भेट कवि
की सी है । वित वन राई उज की सी उज के से
प्ररु ऊच सकुचौ तो नैन जैसे उज की सी है । के

रा-रा
कौ नौ देखतिहैं उंस कच्छुद्धनो नही प्रवहूँते देखि
यत उर उदनयोहै । रहसि खिलन गई नोते जे
व भारी भई किथोयाने वाज भयो महावर द
योहै । ओषनकी मेरी फाटनसी आवतहै जा
नतहैं रीठ लागि केशो जोकिगयोहै । रागि
नी रामकली नाल कविन सबदैससीन

मगल बाल बाहिरै विगारि देखै भाषो तमै केशव
समोह मन भायो जू । कल के निवास ऐसे व
चन विलास सति सैश तो हरति हे ते स्याम स
ष पायो जू ॥ रागिनी रास कली ताल कवि
त । अत उत चाहि देखो जव कोऊ छिगनाहि
वार वार जिय कहो हिये कहा भयो है । अत लो

राधा
की


एसा मै कौन रस है रागिनी राम कली नाल ।
कवित । चंद कैसे भाग भाल मज्ज दी कमान
की सी मन कैसे पने सर नैनन विलास है । ना
सिका सरोज गंध वाह से सरोध वाह दास्यो से
दसन के सो वी जरी सो रास है । भाई की सी गीत
भजनान सो उदर और पंकज से पाइ गति हेस की

वीच दैके सौहै पाय के पवाय कच्छु खाइ वरकीनी
वस वसहै । कोमल मनालकासी मलकाकी मा
लकासी बालिका जइसी मीदि मानस किपसहै ।
जानैको विभातु भयो केशव सनै कोवात देखौ
शानि गात जात भयो कियौ असहै । विजसी ज
राषी यह विजनी विचित्र गति कहौ यौ रसिक न

रा-रा विवौ । बोलनि हसति मउ चातरी चलति चारु
को पल पल प्रति पति वत प्रति पारिवौ । केशोदास
सविलास करउ कअरि राये इहि विधि सोरह सि
गारिवौ । रागिनी रास कली ताल कविन
केशोदास सविलास मंदहास जन अवलोकनि
अलापनि कौ आनेउ अणारहै । बहिरति सान अरु

सी जास है । देखी है गुणाल एक गोपिका से देवता
सी सोने से सरीर सब सोये कीसी वास है । रागि
नी राम कली ताल कवित प्रथम सकल स
वि मजन प्रमल वास जावक सदेस केस पास
को सधारि वौ । अंग राग भूषण विविध मेष
वास राग कज्जल कलित लोल लोचन निश

श-श-
क- बल बल वीर कौसौ मात कौसौ सब मझे सो
हि मन भायो है । यल सौ अचल सील अतल से
चल चित जल से अमल तेज तेज कौसौ गायो है
के सो दास वसत अकास के प्रकास चोष चर चर
बट बट चेरु चनौ छायो है । रति की सी रति ना
थ रूप रति नाथ कौसौ कहौ के सो राइ फूट



श्रेतरति सात प्रतिरति विपरी तितिकों विविधि
विचारुहै । कूटिजाति लाज जहो भूषन सदेस
केस दूटिजात शर सब मिरत सिंघारुहै । कूजि
कूजि उदै रति कूजि तति खन घरा सोई नौस
रति सधि औरु विवहारुहै । राशिनी रामक
ली ताल कवित । तात कोसो गात सब

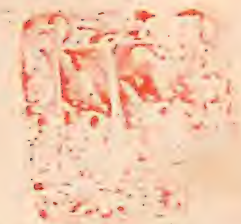
स-श-
क ति देवता बषानी है । ऐसी बातें कौन जनमा
नी सति मेरी सती उनके तो तेरी बानी वेदकी
सी बानी है । रागिनी राम कली ता-४ कवित
कैथौ गदह काज कैथौ कूट्योन सष समाज कै
थौ कछु आज बत वास विधातै । दीनोतै न
सोय किथौ काहु सो भयो विरोध उपज्यो प्रबोध

कौन परि पायो है ॥ रागिनी राम कली ता
कविता । चोली को सो पान तोहि करत सेवा
रि वोई दर्पन ज्यों तोही मोऊ मूरती समनी है ।
तेरे मनोरथ भरी रथ रथ पीछे पीछे डोलत
गुणाल मेरो गंगा को सो पानी है । तेही निय
देवता पै पायो पति केशो सर पतिनी बद्धन प

रा-रा की । केशोदास नामे उरी दीपकी सिपासी दौरी
के उरावति नीलवास उति अंग अंगकी । पौनपा
ति पेछीपशू वासमे सवदसति जित तित वौ
कि वौकि चाहै चोप संगकी । नंदलाल आराम
विलोकै कुंज जाल वाल लीनी गति तरि का
ल पिंजर पतंगकी । रागिनी रामकली ता-

कियौ उर प्रव दानतैं । साव मैत देह कियौ मोह
सौ कण्ठ नेह कियौ देखि मेह अति उर प्रथियानतैं ।
कियौ मेरी प्रीत की प्रतीत लेत केशो रात्र अजह
न आय मन सथौ कौन वाततैं । राशिनी राम
कली ताल कवित चंदन बिट वष कोमल
विमल दल ललित वलित लता लपटी लवेरा

रा-रा- मायो न मनायो मन भ्रैसी तोहि ह्वजिपज्ज पी
कं छे पछितात है । रागिनी रासकली ताल ।
कवित आषन ज्यौ सूरजत न काननतौ सनि
यत जैसे केशोराइ तम लोगनमै गायेसौं । वे
सकी विसारे सथी काकज्यौ वनत फिरै जूहे
सीदे सीतपात ईद सीद दायसौं । हरि हरि करत ही



कवि । बार बार बोली जव बोलीन विहसि
तव बालक ज्यों बोलि वेको कत विललात हैं ।
ज्यों ज्यों प्ये पायन त्यों पाहन तै पीन भयो होत
करा किये अब माघनसो गात हैं । केशोदास
सब छाई कीनो इहरे सो होत तोरू छाडि जिय
जिये विन करा जात हैं । ऐसे प्यारे पियरे को

रा-रा
के
प्रतिफल माल तो रिझारी वीरा बग़ाईकै । लैलै
दीह मास तजि विविध विलास हास के सो दास
है उदास चली अकलाइकै । सेइकै संकेत सुनो
कान्हू जसो बोली ऊनो मोसो जोरे कर हनो हनो
उष पाइकै । रागिनी राम कली ताल कवित
लीने हम मोल अनबोली आई जायो मोह मोहि

दौरि दौरि गहो पाय जो नौत कहर दौर जानि जि
य पायेहो । काको चर चालवे को वसे कहो चन
साम रहेहो जौ वसन प्रात मेरे चर आयेहो । राशि
नी राम कली ताल कवित । देखति उदधि जा
न देखि देखि निज गात चपकके पात कछू लिखो
हे वनाइके । सकल संगंध फारि हरि काको मारि

रा-रा कवि नैननकी अतवाई वैतनकी चतवाई गा
की तकी अवाई नडरति इति चालकी । अपने चरित्र
निके चित्रत वचित्र चित्र चित्रनी ज्यों सोहै साय प्रवि
काय अलकी । चंदके समाचार वाय सो चली फि
रति करके तिसारे मरानैनन की पालकी ॥
की जैये पान प्राण पारे आई है जू आई अलवेति

चन म्याम चन मात्वा बोलि लाई है । देखो है है उष
जहो देख ऊन देखी परे देखी कैसे बाट के शोदास
नी दिखाई है । ऊचे नीचे बीच कीच के ठकनि पीरे
पर माहस गये दमति अति सखदाई है । भारी य
हकारी निमि निपट अकेली तम नारी प्राण ना
य साय प्रेम जस हाई है । रागिनी गम कली ता

श-श
की

मेदज्यों । निमर वियोरा भूले लोचन वकोर रु
ले आई वज्र चेद चेद वालि चलि चेदज्यों । रागि
नी रामकली ताल कवित उरजत उरग
चपत फति चरनन देषति विविध निशिचर दि
स चारके । गत तिन लगत मसलथार सुनति
न फिली गन घोष निरघोष जलथारके । जा

खालि कलकी । रागिनी रामकली ताल ।
कवित । चंदन चण्डाई चारु अंबर के उर हार स
मन सिंघार सोहैं आने दके कंद ज्यों । वारो कोरि
रति नाथ वाना मै वजाय गाय मराज मराल
साथ वानी जग वेद ज्यों । चौकि चौकि चकई सी
सोति निकी हूती चली सोते भई दीन अविद उति

रा-रा
के

क आनि नीकेरेको लागात है सीताज को हत गी
त कैसे उर आनिये । आविन जो देखियत सोई
सोची केशोदास कानन की सुनी सोची कवजे
नमानिये । गो गल की जलदा प्यौरी उलटा
वति है आज लौनो वेसे हैं कालि की न जानिये
इति रागिनी राम कली कविने समाने शुभम

वज्रित भूषण गिरत पट फटतन कटक अटक
उर उरज उजारके । प्रेतनकी एहैं नारि कौनपे
नैं सीछो यह जोग कोसो सार अभिसार अभि सा
र अभिसारके । रागिनी राम कलीनाल कवि
न । हरिसेहि तू सो भ्रम भूलिहून कीजै मन हो
नो करि स्थिर है ते होत हित जानीये । लोक में प्रलो

रा-वे चन विलता वतरे । उथोजे पदसेवत वीते कल्प
जगामो कवजा उरला वतरे । ज्यो सख ब्रह्मलो
कमैनाही सो कवरी सख पावतरे । सगरे ब्रज
को राज दीयो है हमे लावि जोरा पदा वतरे ॥
रागिनी बेगाली दुमरी ताल । ३ । हरि सख सो
रतीर लीयो तवतै भवत नही भावतरे । गावै शु

रागिनी बेगाली दुमरी ताल । ३ । सोवराजी
होसै जायो थारो जान । रतमानी परभातरी
आया रूढो करो छोटवान । प्रकट प्रकार
करी छेक जरा पीकलोक प्रथमत । इनमें
रूढ नहै तिल जीकाई रेगीला प्रीतमरी आन
रागिनी बेगाली दुमरी ताल । ३ । कवनव

रा-वे मन राम कल राम कल थावरे सोई । महा जय
करे वेहरि प्रसन्न होवेंगे । मन बच क्रम सों
याद करे ज्ञान करे भव पार परोरे । प्यारे क
रुणा सागर तिन पालो सब से सारे पेसे मथ
सूदन मयारे । रागिनी बंगाली दुमरी ता । ३ ।
मोरी गली पाय फेर जो हो मोरी रा- । ह्यो यो

दरमैकरे थाकी सोवस कवहुन आवतरे ॥ रा
गिनी बेगाली दुमरी ताल ॥ ३ ॥ तेरीगत अणरेण
२ ॥ अतप्रचेउ जिनरव्योहैब्रह्मंड अदजोतिनिरेज
न निराकार ॥ जाकौकोउतपायोपाररे ॥ निरा
मगावै पारनपावैब्रह्मा सख उचरे ॥ थ्यानथरेजा
को पेचानन श्रीपत जश अत अमैभक्त दातार ॥

रावे ली दुमरी ताल ॥ ३ ॥ कारीरे वदरीया राम कैसी ड
मड आई । सोवत कीरित आई पीया मिले वन थाई
अरे वहे परवै आसन भावन विना सुना मेदि वा
हो राम कैसी ॥ रागिनी बेगाली दुमरी ता
ल तितारा ॥ ३ ॥ उमगौ उमगौ आवै गोरी
या जीया रहमारहो ॥ कहा कहे कबु वसन

बढ़कर आप मोरे बालम लोक जाने प्रमयावहे
रागिनी बेगाली दुमरी ताल । ३१ । नई लगन ह
म जानीरे । जो तम रसीयो बोली बोलौ तम रहे
ते नारस योनी हो । रागिनी बेगाली दुमरी ता
ल । ३१ । मै गवनै नही जई हे राम । जो गवने की वा
न चलै है ता पर टोना चलै हे राम । रागिनी बेगा

ग.वे

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥

ह्रीं मेरो तन कारो मन पीय राह माय हो ॥ क
स्मानन्द रुकत नही रोके मोही लीयो हेमही
य राह माय हो ॥ इति रागिनी बेगाली हु
मरी ताल तितारा समाप्तम् ॥ ॥

रा-वे टणाल ॥३॥ सयाने वेलियावे हरनया वसंदे
लोक विगाने । मित्र करदि वारि वे पैया ना
पउदी वेमियो खकरेन सिमुदे आवो नैयनादे-
रागिनी बेगाली टणाल ॥३॥ केस जाउरा
कीता वेदिलन कदर ना जाने दर कदर मियो ।
वेषन न सुसाक जि मेरा इस्क लगामत लीता

रागिनी बेगाली टण ताल ॥ ३ ॥ नोडे वेखन दि
नोग मेव । चढवेषो वारिवे राजन नू हरो वेसो
णार वस नले साडी चोगा ॥ रागिनी बेगाली ट
ण ताल ॥ ३ ॥ आया निस भाल वोरो जनयार
किङ्कयो ते नूयार । हीरति मानि नू कि प्रकटा
पीरू दिल दिङ्कई ओसार । रागिनी बेगाली

रावे चोत शोरि मियो सोई गानि मत ईमान प्यायेदा ।
राशिनी बेगाली टपा ताल ॥ ३ ॥ कि जालमा
दिवे मियो योकि सदी यारी दले विसड्डे ना
लन जाने नामन जाने की करवे । माववेवो
नेअ सोवरो योमे दियाने जिंदरी दिवानी मैदा
जिंदरे । राशिनी बेगाली टपा ताल ॥ ३ ॥

दिलतू ॥ रागिनी बेगाली टण ताल ॥ ३१ चल उ
ढकर दीदन याग मियो । दीदन यागेद आमदा
जोदामियो । वाग बहारो निवे वेधन चलिण हो
मियो मैडा दिल परदा वजार मियो । रागिनी बे
गाली टण ताल ॥ ३१ देवणा दिदार जागेद प
रावले परावायले छमियो । खोटा खारा पय

रा-वे- मार चला कौं छोड़ि चलावे मज न इस्क गरी
वो कौं मियो । ईया खदा यद सन मेरी दाहेफि
र याद सो मेरी मियो । रागिनी बगाली टपा
ताल । ३ । बिडनदा परवे लावे भला मियो वे
सान् चाक चाक जवावो भोदा कोईवे । ओदा
नियोदा साडे चरवे शोरी लगि सहवत पाक

जाउडाक मालकी जाये । इस्क लगा में श जीत
र सोदाके हाहाल जिगार परवी जावे । शशिनी
वेगाली टण ताल ॥ ३ ॥ कौन गत भई मोरी आ
नना मिलें पिया मोकों । उन बिन कलन प
र न प लच्छन के सैरेण विशाय आन मिलें पि
या मोकों । शशिनी वेगाली टण ताल ॥ ३ ॥

रा.वे. सवि आंखी मेरे प्यारे तू रात किसे वे सारिओ ॥
आप छुड जादे वारी नाल सही ले सफुड थके
दी मैं सारिओ । रागिनी बेगाली टपा ताल ॥ ३ ॥
कोता वे करे जा सारदा पारदा गम खावा ॥
की प्रच्छेदे वारी आ जय दिल वे करारदा हैं तो या
रियो दे नाल गुजारदा । रागिनी बेगाली टपा

रागिनी बंगाली टणा ताल १३ । होवे फोला म
न पर चोदियो । ओष लउंदिम मा क मोदि चि
न च छयो दियो होवे फोला मे । रागिनी बंगा
ली टणा ताल १३ । जिद मोदिया रोदे ताल ल
गि वे । अदा रेगने जद मै पावो गारे लगावो बिन
डिटे ओ मै दगी । रागिनी बंगाली टणा ताल १३

रा.वे नी बेगाली टपा ताल।३। पलक दो आऊ मे
रा साई। जो चाहे जरा राज कर वोई कर सभ
ऊ दरत उसि ताई। रागिनी बेगाली टपा ता
ल।३। भई लोड़े वो मरी बिन देखिने कना स
हाय। जवने रासन कीनो विदेश वा भवन भा
वे ककुनहिंचा। रागिनी बेगाली टपा ता।३।

ताल।३। तोरिनगरिआमैं नारहोंगि तेतो अ
नत करारस भोगा । सदादेगारसरेग करारै ह
मको दीनी वद्धत विरोग । रागिनी बेगालीट
पाताल।३। आज तोरन गाजै आये पियारवा
वरमेरे । अंग सेंगरेग लागै प्रचट डरावत गा
न छिनल विपल ऊप कत आप डेरै । रागि

रा.वे वैगानि साय साय सानी था पम गारे ॥ इति
रागिनी वेगाली टपा समाप्तम् ॥

मग मथ मेरे मगरे थाति सामरे सानी । पग मे
थरे थरे पगथ म थामरे सासरे सानी । सादेगा
ममे सगरे मगमे थाम थाम पेप थानी । साथ
साथ पगथरे सदारेग मोरी एकत सानी ॥
रागिनी बेगाली टपा तिनारा ॥ ३ ॥ पग
मथरि साति परे मपग थरेरे । गी समाथ हो

रावे धुको रसमेजरीमै प्रेकुत जो वना कही है ॥ रा
गिती बेगाली सवैया ताल ॥ १ ॥ यन मूथ
रि लोचन लोल सो मेलि सकों ड कटाक्ष की
कोर कछी । माव माधुरि वानी बसी चतरा
इयो केश मोहन नास पछी । कुच तेहू नैनै
नन लाज विराजति वार गहरे बड़े डोर मछी

गगिनी बेगाली सदैये ताल।३। मोहिबो मोह
नकी गतिको गतिही पयोबेन कहा थौ पड़े
गी। ओप उयो जनको उपजै दिन कहि मदै अगि
या नमदैगी। नैनन की गति गह चलावल के
शवदास अकास चढ़ैगी। माई कसो यह माय
गी दीपति जौ दिन है इहि भाति वढ़ैगी। नवव

रा.वे. पर सो है । नाहिकरो जिन नागारिह राज राज
दियो तव प्रेऊ स को है । रागिनी बेगाली स
बेया ताल । ३ । पार परै मनुहार करै पलका प
र पाय दियो भय भीने । सोय गई कहि केशव
कैसे रहे कौर हो कौर क सौहन कीने । साहस कै सु
ष सौं सव छै छिन मै हरि साति सवै सुषलीने

नवछो इति बालहि बालकता इति श्रेया श्र
नेगकी फौज बछो । रागिनी बंगाही सवै
या ताल । ३ । ऊरु उरोजनके परसे रिस भौ
रिचछो नवछो कित कोरे । दैरद वच्छद चे
वनही रसरीति गरी उनही मन मोरे । नीवी
की नीवि कुँवे ब्रवि औरसी पेलत पानि पिया

रा.वे सस्यो न पश्यो अकलाय कस्यो पिय कैसी है देषो ।
रागिनी बंगाली सवेया ताल । ३ । आज मै देषी
है गोप सता ३ क होयन ऐसी अहीर की जाई ॥
देषत ही रहिये इति देह की देषते और न देषी स
हाई । एक ही बंक विलोकति ऊपर बाँगे विलो
कि विलोकति काई । के सब दास कलातिथ व

एक उसा सही के उससे सिगरेई संगेय विदा करि
दीने । राशिनी बेगाली सवेया ताल । ३ । बोलै
न वाल बलावत रहे न परेस लिखे भव प्रेम परे
षो । आपन हाथ विलोकि विलोकि कही तव
के सब बहि वसेषो । छोटी बड़ी विधिरेष लिखी
जग आशु कीरेष सकौन जलेषो । प्रेमते बोल

रा.वे. विंद सो है सो तो चेद सो देखौ । रागिनी बेगाली
सवैया ताल । ३ । कान्ह भले जभली समझाई
हैं सोहि समझ कौ जो उम सो हो । केसव आप
नो मानिक सो मन शय परायें कौ नै लयो हो
नैन न ही मिलवौ करिये अव नैन कौ मिलि
वो नौर हो । जाइ कसौ तम जै सो सषी सऊं ये

रु वृजिय कामकि मेरो कन्दाई । रागिनी बेया
ली सवेया ताल । ३ । ज्यों ज्यों इलास सो केसव
दास विलास निवास हिये अवरेष्यो । त्यों त्यों व
ह्यो उर कंप ककु भुम भीत भयो कि थौं सीत वि
सेष्यो । सदित होत सषी वरही मेरे नैन सरोज
नि सोचके लेष्यो । तैंज कसो सष मोहन को प्ररु

श.वे. केविधिभूलिकहेहैं । रागिनी बंगाली सवै
या ताल । ३ । तोहित पाय वजावत नाचत वा
२ अनेक सिंगार बनायो । जीहूँमे अतकौ
आनिवौ छेड्योपै तेरो तऊत भयो मनभायो ।
भावै सते करिवो करि भामिति भागवडे वस
तैं करि पायो । काहु तौ स्येज वाहति नाही

है गणाल मैं प्रेसो कह्यो हो । रागिनी बंगाली
सवैया ताल । ३ । है गति सेद मनोहर के सब
आनंद के देखिये उलहे हैं । भौह विलानि को म
ल हासनि प्रेस सवासनि गाढे गहे हैं । वेक वि
लोकनिको अविलोकि समाह कै नेद ऊमारु
रहे हैं । परितो काम के वान कशवत फूलन

रा-वे वेत सिंचार समीप सिंचार किये किये सेंद
र नाई । रागिनी बेगाली सवेया ताल । ३ ।
आवत देखिलिये उदि आगे के केश आश्रि
आसन दीनौ । आश्रि पाई पसारि भलै ज
लपान को भाजन लाइन वीनौ । वीरावना
इके आगे थरे जब बेहरि को कर वीजन ली

सुचारति नारी सुचारति है अव पाइ लगायो ।
रागिनी बेगाली सवेया ताल ॥३॥ आज वि
राजत है कहि केसव श्री हृषभान कमारि क
न्याई । वाति विरेचि वहि कस कामरवी सुवि
चारि सुबुद्धि बनाई । अंग विलोकि विलोकि मै
ऐसी को नारि नहि जहि नारि निवाई । मूरति

श-वे ज ही गौनै । मोहन के मत को मोहनी सकहौ
यह सिष ईसिष कौनै । रागिनी बंगाली सवैया
ताल । ३ । हित कै इत देखहु जू देखौ सवै हित वा
त सनौ जसनी सवरी है । यहनौ ककु और
वहै सवरी अव सौह कौ वकरी जतरी हैं । स
सुजाइ कहौ समुजी सव के सव कूटी सवै हम

नौ । बाहेगही हरि प्रेसो कस्यो हसि मैतो इतो
अपराध न कीनौ । रागिनी बेगाली सेवेया
ताल ॥३॥ वित्तवौ वित्त वोपे हसापे हसौ होब
ला ऐतें बोलौ रहौ नित मौनै । सौं ह अनेक नि
आवहु अंक करौ रति कौ प्रति रैन की रौनै । व
वापतें पाहु वस्याइ विरी जन आईहौ केशव आ

रावे की घट कोटि मिटै न चटै विष की विषताई । रा
गिनी बंगाली सवैया नाल । ३ । केशव औरत सौं
रसि रसि रस्यो रसवादु सवै हम सौं हैं । हौं मन मे
लेन जो लो ककु अब ह्या डड्ड बोलि वो बोल हमौ
हैं । देखइ यौ श्वार सकोचन आर सलोचन आर सी
सौं हैं । आपज वैसे ही साज सौं आज सभूलि गई

सौं जकरीहैं । मान कियौ अपमान करौ तोइ सो
अवके हसिके कोरहीहैं । रागिनी बंगाती सबै
या ताल । ३ । हौं खाव पाइ रही सिष सीषे नपसि
षतैहैं सिषाई । मैवझतै आवपाइही देख्यो पै के
शव केहैं कुटेव नजाई । देखदिये वित साथतिहैं
संग कूटत को पलकी पलताई । देखझै मथ

रा-वे- निकसै । रागिनी बंगाली सवैया ताल । ३ । वैठिइती
हज नारिन सैवनि श्री हृषभा न ऊमारि सभागी । ऐ
लति ही सवि चौपर चारि भई तहि बिलखी अनरा
गी । पीछे ते के सब बोलि उहे सति के चित चातुरि आ
नरी जागी । जानित काइ कवै हरि के सर मारगारी
सरसी दया लागी । रागिनी बंगाली सवैया समासम

पिय कालि की सौ हैं । रागिनी बंगाली सवैया
ताल । ३ । वैदी सखीन की सौ भे सभा सबही के
स नैनन माऊ बसै । बूझै न वात वस्याय कहै
मनही मन केशव दास हसै । बिलनि है इत धे
ल उतै पिय चित्त बिलावति यौ बिलसै । कोई
जानै नही दृग दारि कवै कित कै हरि ओ बिन छै

श.सो.
गी.

चक्रवर्ती श्रीवासुदेव रति केलि कथा समेत मेतं करो
ति जयदेव कविः प्रबंधं २ यदि हरि सरणि सरसं म
नोपदि विलास कलास ऊत्तरहर्ष १ मधुर कोमलकांत
पदावली शुभा तदा जयदेव सरस्वती ३ वाचं पल
व यत्समा पतिथरः संदर्भं शुद्धि गिरं ॥ जानीते
जय देव एव शरणः आच्छा डरुहडुते = १ शुभा

अथ टोडी रागिनी गीत गोविंद परिच्छेदमाह ता-
ल। ॥ मेवै मे इरमंवरं वतभवः श्यामास्तमालदु-
मे नैकं भीरुरयं त्वमेव तदिमे राथे गृहे प्रापय
इत्येतेदति देशतश्चलितयोः प्रत्यथ केजदुमे राथामा-
थवयो जयति यमना कलेररः केलयः १ वाग्देवता
चरित विवित वितसम्यापस्यावती वराणचारणा

रा. हो.
गी.

चक्रगारिषे केशव धृत कक्ष्य रूप जय जगदेषाहरे २
वसति दशान शिवरे धरणी तवलया शशिनिकलं
क कले वनि मया केशव धृत मकर रूप जय जग दे
श हरे ३ तव कर कमल वरे नाव अद्भुत भृंगे दलित
हिरण्य कशिपु तनु भृंगे केशव धृत नर हरि रूप
जय जग दीशहरे ॥४॥ छल यसि विक

रोन्नर सत्त्वमेय रचने राचार्य गोवर्द्धन स्यङ्गी कोपिनवि
श्रुतः श्रुतिथरो थोयीक विद्वापतिः ॥ अष्टपदी
हीङी रागिनी । ताल । । प्रलय प्रयोधिजले ध
तवानसि वेदं विहित विहित चरित्र सुविदं केश
व धृतमीन शरीर जयजगदेषाहरे । क्षितिरति
विप्रलम्बे तव तिष्ठति दृष्टे थराणा थराणाकिरा

ग. टी.
गी.

यं । केशव धृत रघुपति रूप जय जगदीशहरे ७ व
हसि वषुषि विशादे वसन्तं जलदामं । हल हतिभी
ति मिलित यमनामं । केशवधृत हलथररूप जय
जगदीशहरे ८ निंदसि यज्ञविधेररुह्य श्रुतिजातं ।
सदय हृदय दर्शित पञ्चज्ञानं । केशव धृत वृथ श
रीर जय जगदीशहरे ९ म्लेच्छति दहनि धने

मणो वलि मङ्गल वामन पदनाब नीर जनित जनपा
वन केशव धृत वामन मन रूप जय जग दीशह
रे ५ त्रिविद्य रुथिर मये जगदय गत पापे । स्नापय
सि पयसि प्रामित भवतापे । केशव धृत भगुपति
रूप जय जगदीशहरे ६ वितरसि दिक्षरणे दि
गपति कमनीये । दशम्वार मीलि वलि रमणी

रा. टी. गी. ते हलं कलयते कारुण्य मातन्वते । स्नेहान्तरर्षय
ते दशा कृति कृते कृष्णाय नमः ॥ ११ ॥ अष्टपदी ॥
प्रित कमला कुच मंडल धृत कुंडल । कलित ललि
त वनमाल जय जय देवहरे १ दिनमणि मंडल
मंडन भव विडन सति जन मान सहस्र जय जय
देव हरे २ कालिय विषथर गंजन जन रंजन

कलयसिकरवाले । भूमकेतुमिव किमपि कराले केशव
भूत कल्कि शरीर जय जगदीशहरे १ श्रीजयदेव
कवे रिद मदित मदारं । शृणु सखदं सुभदं भवसा
रं । केशव भूत दश विध रूप जय जगदीशहरे ॥
वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मद्विभ्रते दैत्य दार
यते बलिं हलयते दत्तद्वयं ऊर्वते । पौलस्त्यं जय

ग. हो. संदर धृत संदर श्रीमत्त चंद्रचकोर । जयजयदेव हरे
गी. ७ श्रीजयदेव कवेरिदे करुते सुदे मंगल मज्जलगी
तं । जय जयदेवहरे ८ अष्टपदी । श्लोक । रामो ह्ला
स भरेण विभ्रमभृता साभीरवाम क्रवा मभ्यर्णोपरि
भ्यतिर्भरमरः प्रेमांथया रायया । साधुत्वददने सथाम
यमिति व्याहृत्य गीतस्तुति व्याजाड्डवचुवित

य३ कुल कमल दिनेश । जय जय देव हरे ३ मधुसर
नरक विनाशन गरुडसन । सर कुलकेलि निदान
जय जय देव हरे ४ अमल कमल दललोचन भव
लोचन । त्रिभुवन भवन निधान जय जय देव हरे
५ जनक सत्ताकृतभूषण जित दृषण समर शमि
त दशकंद । जयजय देवहरे ६ अभिनवजल थर

रा. दो. मूर्तिमानि वसथौ मग्यो हरिः क्रीडति ८ नित्यात्मंग
गी. वराङ्गजंग कवल क्लेशादिवेशाचलं प्रलेयलवनेच्छ
यान् सरति श्रीवेङ्ग शैलानिलः । किंचस्त्रिग्यरसात्
मौलिमुकुलान्यालोक्य हर्षो दया । उत्तमीलति कुहूः
कुहूरिति कला ताना = पिकानागिरः ॥ १॥ अष्टप
दी ॥ चंदन चर्वित नील कलेवर पीत वसन ।

स्मित मनो हारीहरिः पातवः अनेक नारी परिरेभसे
अम स्फुरत्मतो हारिविलास लालसे मुरारि रामा दु
पदर्श यत्यसौ सखी समते पुनराह राधिका ७ वि
शेषा मनुरंजनेन जनयत्नानंद मिंदीवर श्रीणीश्या
मलकोमलैरुपनयत्नैर्गौरनेगोत्सवं । स्वच्छंदं व्रजसे
दरीभिरभितः प्रत्यंगमालिङ्गितः शृंगारः सखि

श.टी. सरोज ३ कपि कपोल तले मिलितालपिते किमपि
गी. श्रुति मूले । चारु चुचुव नितेववती दयिते पु
लके रत्नकले ४ केलिकला कतकेनच कावि
द मंयमना जलकले । मंजल वंजल कंजगते
विच कर्ष करेण उकले । करतल ताल तरल बल
या बलिकलित कल स्वत वंशी । रास रसे सह

वनमाली । केलि चलन्मणि कुंडल मंडित मंड युगस्मि
तशाली १ हरिहरमग्य वधुनिकरे । विलासिनि वि
लसति केलिपरे १ पीनपयो थरभारभरेण हरि परि
रभ्यसगगं । गोप वधरन गायति काविडदे चित पेव
म गगं १ कपिविलास विलोचन विलन जनित म
नोजं । ध्यायति मग्य वधरथिके मधु सूदन वदन

रा. हो
गी.
निजोत्कर्षा दीर्घा वशेन गतात्यतः क्वचिदपिलता के
जेगंजन मधुव्रत मेडली सुखरशिखरे लीना दीना
पुवाचरह = सार्वी १० कंसारिरपि संसार वासना वे
थ श्रवलो राधा माथाय हृदये तत्याज व्रज सेद
री ११ उतस्त तस्ता मन सत्यरा थिका मनंग वाण
व्रजवित्त मानस = कृतानता

नृत्य परा हरिणा युवती प्रश संसे ६ स्त्रियतिकाम
पि चेंवति कामपि रमयति कामपि रामो पश्यति स
स्मित चारु परा मपरा मनु गच्छति वामो ७ श्रीजय
देव भागात मित मद्भुत केशव केलि रहस्ये । वेंदा
वन विपिने चरितं वितनोत शुभानि यशस्ये । ८ ।
विहरति वनेराथा साधारण प्राणयेहरी विगलित

रा. दो.
गी.

कटिलक्रीडा भरेण शोण पश्य मिवो परि भ्रमता
कुले भ्रमणेनता महे हृदिसंगता मनिशं भृशं रमया
मि किं वनेन संगमिता मिह किंवदया विलयामि ४
तत्त्विविन्न मस्यया हृदयन्तवा कलयामि तत्त्ववे
यि कतो गतासिनते नते नूनयामि ५ दृश्यसे पु
रतो गता गत मेव किंविदयामि । किंपरे वश से

यः सकलिते नंदनी तदात्त ऊने निषसाद माथवः १२

॥ अष्टपदी ॥ मामियं चलिता विलोक्य द्वेते वधू

निचयेन । सापराधतया मयानति वारितानि भयेन

१ हरिहरि हता दरतया गतासा ऊपितेव । किंक

रिष्यति किं वदिष्यति साचिरं विरहेण कियनेन जने

न किंसम किंसवेन गृहेण २ चिंतयामि तदानने

रा. दो. तस्या एव स्तुती दृष्टो मनसि ज्ञेयवत्कदाचा सुग ।
गी. श्रीणी जर्जरितं सता गयिमनो नाद्यायि संपुल्लते
१३ हृदि विलाशता हारीनार्य भुजंगमना यक=
कुवलय दल श्रीणी कंदेन सागरल युति = मल
यज रजो नेदंभस प्रिया रहिते मयि प्रहरत हर
श्रोत्यानेंग कथाकिमथावसि १४ अष्टपदी ।

भ्रमं परिभ्रमं न ददासि । क्षम्यता सपरं कदापि न वे
दशं न करोमि । देहि सुंदरि दर्शने मम मत्सयेन
इनीमि । वर्णितं जयदेव केन हरेरिदं प्रवणेन किं
उ विल्व समुद्र संभव रोहिणी रमणेन ६ पाणौ
मा कुरु हत सायक ममं माचाप मारोपय क्रीडा
निर्मित विश्व मूर्धित जना ज्ञानेन किंपौरुषं ।

रा.लो.
गी.

वसति विपिन वितानेत्यजति ललित थाम । लढ
ति थरणि शयने वङ्ग विपलति तवनाम ४ भाग
ति कविजयदेवे विरहि विलसितेन । मनसिरभस
विभवे हरि रुदयत सकृतेन ५ श्लोक पूर्वयत्रस
मंत्यारति पते रासा दिताः सिद्धयस्तस्मिन्नेवनि
कंज मन्मथ मन्त्र तीर्थे पुनर्मायवः । आयेरुत्थाम

वहति मलय समीरे मदन मयनिथाय स्फुटति कुरु
मानिकरे विरहि हृदय दलनाय १ सखि सीदति तव
विरहे वन माली । दहति शिशिर मयवे रमण मन
करोति । यतति मदन विशिखे विलपति विकतरो
ति २ धनति मथुय समूहे अवण मयि दधाति । मन
सि वलित विरहे निशि निशि रुजमय याति ३

रा.टो. ग्याहशो विभ्रमास्तद्वज्रौवज्र सौरभं सव सथास्यंदी
गी. गिरं वक्रिमा। साविवाथरमापुरीति विषया संगे
पिचेस्मानसे तस्यालग्न समाधिहेतु विरह व्याधि क
थेवर्तते १ साकृतस्मितमा कुला कुलगलगलमि
ल मलासितं। भ्रुवह्नी कमलीक दर्शितभुजा मूला
ईदृष्टस्तनं। गोपीनान्निभृतन्निरीत्यगमिताकाक्ष

निशं जयन्त्रपितवै वालाय मंत्रावली भूयसात्कवर्जं
भ निर्भरपरी रंभासते वांछति १ विकरति मुद्रः
श्वासा नाशाः पुरो मङ्गरी दत्ते प्रविशति मुद्रः कुंजे
गुंजे गंजन्मङ्गर्वज्जु ज्ञतास्यति । रचयति मुद्रः शय्या
मर्या कुलंङ्गरीदत्ते मदन कदन क्लान्तः कान्ते प्रिय
स्तववर्तते ११ तानिस्पर्शं सत्वा नितेव तरला स्त्रि ।

रा-दो-
गी-

सहचरी अष्टपदी ॥ ललित लवंगलता परिणी
लन कोमल मलय समीरे । मधुकरनिकरकरंवि
त कोकिल कनित कुंजकुटीरे । विहरति हरि रिह
सरस वसंते नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि
जनस्य उरंते । उत्तमदन मनोरथ पथिक वधूज
न जनित विलापे । अलि कुल संकुल कुसुम समू

शिरं चिंतयन्नेतर्मग्य मनो हरोहरतवः क्लेशत्रवः
केशवः २ यमना तीर वानीर निज्जिमेदमास्थितं
प्राह प्रेमभरोद्धान्तं मायवं रायिका सावी । वसंते वा
सेती कसम सज्जमारै रवयवै । अमंती कोतारे व
द्ग विहित क्लृप्तान् शरणं । अमंदं केदर्यज्वरजति
तचिंता कुलतया । वल्लहाथं राथं सरसमिद मूवे

श.टो. गी. रुण कृतज्ञासे । विरहिति कृतन कृत सखाकति
केतिकि दंतदिनाशे ५ मायविधा परिमलललि
तेनव मालति यात सुगंधौ । मुनि मनसा मयि ।
मोहन कारणा तरुणा कारणा वंथ ६ स्फुरदति
मुक्त लता परि रंभाण मुकुलित पुलकित चूते
। हंदावन विधिने परि सुर परि गत ।

हनिराकुल वकुल कलाये २ मृगमदसौदमरभसव
शंवद नवदल माल तमाले । युवजव हृदयविदा
राग मनसिज नावरुवि किंशुकजाले । मदनमहरी
पति कनक देउरुवि केसर कुसुम विकामिलित ।
शिली मख पाटल पटल कृतस्मर त्राणविलासे
४ विगलितलंजित जगदवलोकन तरुणक

रा. दो.
गी.

२१ उत्तरीलक्षधुगंधु लव्यमधुपद्याभूत हृतांक
२ क्रीडत्कोकिल काकली कल कलै रुझीण क
र्णज्वराः नीयंते पथिकैः कथं कथ मपि ध्याताव
थानक्षणा शप्त प्राण समा सम गम र मोह्लासैरमी
वासराः २२ इरा लोक स्लोक स्तन कन वकाशो कल
तिका विकाशः कासारो पवन पवनीयं व्यथ ।

यमुना जल पूते । श्रीजयदेवभणिते सिद्ध सुदयति ह
रि चरण स्मरति सारं । सरस वसंत समय वन वार्ण
न मन्त्रगत मदन विकारं ८ अष्टयदी ॥ दर विद
लित मल्ली बलि चंचल्यराग प्रकटित पट वार्मे
वीसयन्काननानि । इह हि दहति चेत = केतकी
गेथवेधु = प्रसरद समवाण प्राण वज्रंथवाह =

श. हो
गी.

अविरत निपतित मदन शरादिव भवद वनाय वि
शालं । स्वहृदय मर्म करोति सजल नलिनी द
लजालं २ कुसुम विशिख शरतल्य मनल्य विला
स कला कमनीयं । व्रत मिव तव परि रंभ सखा
य करोति कुसुम शयनीयं ॥ ३ ॥ वहति च गलि
त विलोचन जलधर मानन कमल मदारे । विधु

यति अपि आम्यङ्गेगी रणित दमणीयान मुकुल प्रसू
ति श्रुतानां सखि शिवरिणीये सुखयति । अष्टप
दी ॥ निंदति चंदन मिंद करण मनु विंदति विदम
थीरे ॥ व्याल निलय मिलनेन गरल मिव कलय ।
ति मलय समीरे ॥ ११ ॥ साथव साविरहे तवदीनाम
नसिज विशिवभया दिव भावनया त्वयिलीना

श-दो वि कल्य भवंत मनीव इरायं । विलपति हसति
गी- विषीदति रोदति चंचति मंचति नायं ॥ श्रीजयदे
व भणित सिद्ध मयिकं यदि मत्तसा नदनीयं । ह्रि
विरहा कुल बलव युवति सखी वचनं पटनीयं ८
अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ आवासे विपिना यते प्रिय सखी
मालापि जालायते ॥ नायोपि असितेन दा

मिव विकट विधेत्तद दन्त दलन गलिता मृत्यारं
४ विलिखति रङ्गसि करंगम देन भवेत्तम समशर
भूते । प्रणमति मकर मथो विनिधाय करेच शारे न
वहते ५ प्रतिपद मिदमपि निगदति माथव तव
चरणे पतिताहं । त्वयि विम्वरे मयि सपदि स्थयानि
थि रपि कुरुते तन्नदाहं ६ ध्यान लयेन पुर= प ।

श दो
गी-

त पवत मनपम परिणामे । मदत दहन मिव दह
ति सदाहे ३ दिशि दिशि किरति मजल कण जाल
॥ नयन नलिन मिव विगलित नाले ४ नयन विष
य मिव किशलयतल्ये । कलयति विहित ज्ञताश
नकल्ये ५ त्यजति पाणि तलेन कपोले । बाल
शशिन मिव सायमलोले ६ हरिरिति हरि रिति

वरुन ज्वाला कलापायते । सापि त्वद्विरहेण हन्त
हरिणी नृपायते हाकंथे । कंदर्पोपि यमायते विर
चयन् शार्दूल विक्रीडितं प्रष्टुमदी ॥ स्नानविनि १
नि हितमपि हारमुदारं सामनुते कृशतनुरिवभा
रं रायिका विरहे तव केशव । शरसम स्नानमपि स
लयजपेकं पश्यति विषमिव वपुषि सशोकं १ असि

रा. टी. गी. स्यते ताम्यति ध्यायतुङ्गमति प्रमीलति पतस्य
ति मूर्च्छत्यपि एतावत्पतन ज्वरेवरतनजीवेन्नकिं
तेरसात्त्वर्वेद्य प्रतिमप्रसीदसि ततस्त्यक्तीन्यथा ह
स्तकः १६ कंदर्पज्वरसंज्वरा तरतनोराश्चर्यमस्या
श्चिरं । चेतश्चंदन चंद्रमः कमलिनी चिंतासंताप
ति । किंतुत्तांति रसेन शीतलतरंत्वामेक मेवप्रियं

जपति सकामं । विरह विहित मरणी वनिकामे ७
श्रीजय देव भणित मिति गीतं । सुखयत्त केश
व पद मय नीतं ६ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ सरत्तरं
दैवत वैद्य रुच्य त्वदंग संगे मृतमात्र साधुः । वि
मुक्त बाधां कुरुषेत् राधा मयेंद्र वच्चा दपि दारु
णोसि १५ सारीमो वति सीत्करोति विलपत्यत्क

श दो- स्वच्छंद व्रजसंदरी जनमन लोक प्रदोषश्चिरं। कंस
यी- यंसन धूमकेतुखतत्वादेवकीनंदनः २५ अथत्ता
गंतमशक्रो विरमनरक्रो लतागदहेदृष्टा। तच्चिरि
नंगोविंदेमनसिजसंदेसाखी प्राह ३- संगेष्वाभरणं
करोति वज्रशः पत्रेपिसंचारिणि। प्राप्तेत्वाभ्यरिणो
कते वितनते शय्याचिरंथायति। इत्याकल्य वि

ध्यायेन्ती रङ्गसिस्थिता कथमपि क्षीणान्तर्ग प्रणिनि
२० क्षण मपि विरहः पुराण मेहे नयन निमीलि
तवित्तया नयाने । अस्मिन् कथमसौ रसालशाखा
विर विरहेण विलोक्य पुष्पिताम् २८ राधाम
रथ मारारवि मधुपसैलोक्य मौलस्यली नेय ।
त्यो विन्नतीत्तरत्नमवनी भारा वतारंतकः ॥

श-दो
गी-

तदथर मधुर मधुति पिबेत् १ नाथ हरिसीदतिरा
था वासगृहे । तदभि शरण रभसेन वल्लेती पतति
पदानि कियंति चलेती २ विदित विशद विष कि
शलय वलया । जीवति परमिह तवरति कलया
३ सुझर वल्लोकित मंरुन लीला । मधुरिषु रह
मिति भावन शीला ४ त्वरित मयैति न कथ ।

कल्प तल्प रचना संकल्प लीलाशत । व्याशक्तापि
विनात्वया वरतननेष्टा निशानेष्टानि ३१ विपुल पु
नकपालिः स्यात् सौत्कार संतर्जित जटिमकाकु
व्याकुले व्याहरंती । तव कि तव विधाया मंदके
दर्पचिंता रमजल निधि मग्राध्यानलगा मृगाक्षी
३३ ॥ अष्टपदी ॥ पश्यतिदिशि दिशि रहसि भवंते

राद्यो-
गी-

मी रुहे । आनर्यासिन दृष्टि गोचरमित-सानंद नंदा
स्यदम् । राधाया वचनं तदथग म्बानन्दोति के गो
पते । गोविंदस्य जयंति सायमतिथि-प्राशस्त्य गर्भा
गिर- ३३ अत्रान्तरेच कुटला कुल वर्त्तमाना संजा
त पातक उव स्फुटलां वनश्री- । वंदावनीतरम ।
दीपय देसुजालैर्दिकसंदरी वदन चंदन बिन्दु रिं

मभिसारं । हरिरिति वदति साखी मन्त्रवारं ५ श्लिष्य
ति चंवति जलथर कल्यं । हरि रुपगत इति तिमि
र मन्त्रल्ये ६ भवति विलंबिनि विगलित लज्जा । वि
लयति रोदति वासक सजा ७ श्रीजय देव वकवेरि
दसुदितं । रसिक जनननता मयि सुदितं ८ श्लो
क ॥ किंविश्राम्यसि कस भोगि भवने भोलीर भू

रादे
गी

जगत् प्राण विधाय साधवे प्रयोमम प्राण ह्ये भवि
ष्यति ३७ वायो विधेहि मलया निलपेच वाण प्राणा
न गच्छाण न गच्छन्तया अयिषे । किंते कृतोत
भविषि त्वमया नरेण । रेगाति सिच मम शाम्यत
देह दाहः ३८ । अष्टादी । कथित समयेपि हरि
रह हनययौवने । मम विफल मिद ममल

३३४ प्रसरति शशायर विवे विरहित विलेवेवमा
यवे । विभ्रया विरचित विविध विलापेसा परिता
पंचकाशेचैः ३५ विरह पाण्डु मयारि मवावजय
तिरयनपि वेदनो विभ्रतीवत्तनोति मनोभवः
स्वहृदये हृदये मदन व्यथो ३६ मनो भवानेदनवे
दनातिल प्रसीदरे दतिण मेव वामनो ॥ क्षणो

रादे
गी

पिकासिनी मभिस्तः किंवा कलाकेलिभिर्वहोवेष
भिरन्य कारिणि वनाभ्यर्णी किञ्चद्राम्यति कोतः क्लो
तः मना मना गपि पथि प्रस्थात्मे वात्तमः सेके
ती कृत मेज वेज ललता ऊजे पियन्नागतः ४-प्रथा
गतो मायवमेतरेण सखी मिये वीत्य विषादमूको
विशेक माना रमिते कयापि जनार्दने दृष्टव देतदा

जयदेव कवि भारती । वसन्त हृदि प्रवति रिव कोम
ल कलावती द । अष्टपदी । श्लोक । त्वाम प्राप म
यि स्वये वर परो लीरो दतीरो दरे । शंके सेद रि काल
कृत मपि वत्स फो मयानी पतिः । उभे एव कथा
भिर न्य मनसो विक्षिप्य वत्सो वले । राधायास्तन
कोर को परि मिलने शो हरिः पातवः । तत्किं काम

रादे
गी

रित रशान जचन गति लोला ४ दयित विलोकितल
जित हसिता । वद्ध विथ कूजित रतिरस रसिता ५
विषल पुलक पृथुवे पृथुभंगा । ससित निमीलि
न विक सदनेगा ६ अमजल कणाभर सभगशरी
रा । परिपति तोरसि रतिराथीरा ७ श्रीजयदेव
भणित हरिरसितम् । कलिकलषे जनयत परिषा

३४१ अष्टपदी । सार समरोचन विरचितवेषा गलि
त कसमदर विललितकेशा १ कापि मधुरिप्रणा
विल सति सुवति शयिक प्रणा । हरि परिभण व
लित विकाश । कुच कलशो परि तरलित हारा २
विचल दल कललिता नन चेद्रा । नदथर पानरभ
सकत तेद्रा ३ चेचल केडल ललित कपोला । सख

रादे-
गी

चने ऊच सुग गगने म्दग मद रुचि रूषिते । मणीस
रुममले नारक पटले नावपद शशि मूषिते ३ जित
विम शकले म्दु भज सुगले करतल नलिनीदले-
मर्कत वलय म्मथकर निचये वितरति हिम शीत
ले धरति गट्ट जचने विपल पचने मनसि ज कनका
सने । मणीमय दशने नोरगा रुसने विकरति

मिने द अष्टपदी । सोरहा ॥ समदित मदने रमणी
वदने छेवन चलितार्थरे । मगमद तिलके लिख
नि सफलके मगमिव रजनीकरे । रसने यमनाप
लिन वने विजय मगारि स्थना । चनचय रुचिरे र
चयति चिकरे तरलित तरुणानने ऊरुवक ऊरु
मेवला सावमेरति पति मगकानने २ चटयति स

रादे-
गी-

इति कवित्पजयदेवके द। अष्टपदी॥ अनिल
नयन ऊदलय नयनेन । तपति नसा किसलय
शयनेन १ सखिया रमिता वनमालिका । विक
सित सरसिज ललित सखिन । स्फटति न सामन
सिज विशिखिन २ अमृत मधुरतर मृदु वचनेन ।
ज्वलति न सामलयज पवनेन ३ स्थलजल रुह

कृतवासने ५ चरण किमलये कमला निलयेन ।
द्विमणिराणां पूजिते । वहिरप्यवरणे यावकभरणे
जनयति हृदयो जिते ६ रमयति स्वरशेका मणि
स्वरशे खल हलथर सोदरे । किमफल मवसे चि
रमिह विरमस्वद सखि विटपोदरे ७ इह सभगा
ने मधुरिष पदसेवके । कलि प्रयाचिरिते नवसत

शदे
गी

इति वशिष्ठस्य मतेन द अष्टपदी । श्लोक ॥ नाया
नः सावि निर्देयो यदि शतस्त्रहति किं हयसे ॥
सच्छेदे वद्ध वलभः सख्यते किं तत्र ते हयसे ॥ य
श्याय प्रिय सेगमाय दयितव्या कृष्णमागोयरी ।
रुक्मिणी भगवति वस्तु दिदे चेत्तः स्वयेया सति
निभत्त निजेन गदहे गतया विशिष्टसिनिनीय

४३

२९ २५

रुचिकरचरणेन । लहति न साहिसकर किरणेन
४ सजल जलद समदय रुचिरेण । दहति न साह
दि विरह भरेण ५ कनक निकष रुचि शुचि वव
नेन । असितित सा परिजन हसितेन ६ सकलभु
वन जनवर नरुणेन । बहति न सा रुज मतिकरु
णेन ७ श्रीजयदेव भणित वचनेन । अविशत

रा-दे-
गी-

याने कृतपरिरेभाण चैवनया परिभ्य कृताथरणे
इ अलसनिमीलितलोचनया अलकावलेललितक
पोले। अमजलशकलकलेवर यावर मदन मद्यद
निलोले। कोकिलकलखकृजितया जित मन सि
जतेच विचारे। अथ कसमा कल केतलया नखलि
खित चनलनभारम् ५॥ चरण रणिन मणि

वसन्ते । चकित विलोकित सकल दिशारति रभस व
शेन हसन्ते १ सखिहे केशि मदन मदारे । रमयमया
सर मदन मनोरथ आवितया सविकारे । प्रथम स
मायाम लजितया पटचादृशते रत्नकुले । एतु मय
रसित आवितया शिथिली कृत जवन उकुले २
किसलय शयन निवे शितया विर मरसिममै वश

रादे
गी

सलीले। ८। अष्टपदी। श्लोक ॥ वृष्टि व्याकुल गोज
ला वनवशा उहृत् गोवर्द्धने। विश्रुतवसेदरी
भिराधिका नदाचिरेवैवित्तः। दर्पणैव तदर्पिताथर
तदी सिंहसदोक्तिः। वाङ्मोघतनोस्तनोत्तभव
तः श्रेयोसिकेसद्विषः ४३ अथ कथमपियामिनीवि
नीयस्सरशरजर्जरितापिसाप्रभाते। अनुनयवच

नृपया परिष्कृतं सूरतं वित्ताने । सात्वविशेषत
मेवलाया सकचग्रहवेवनदानसुद्धं रति सात्व समय
वसाल सया दर मकलित वदन मरोजे । निस्सहति
पतित तव लतया मयसूदन मुदित मनोजे ० श्री
जयदेव भणित मिद मति शय मय रिष्ट निधवन
शीले । सात्व मुक्ते दित राधिकया कथिते वित्तनोत्त

गङ्गा
गी

वन विरचित नीलमयूषे दशानवसन मरुणो नवह
स तनोति ननरुच रूपे २ वप्ररुच हरति नवसारसे
गगनरुच खरुचतरेखे । मरुक्तशकल कलित क
लयौतलिषेखरति जयलेखे ३ चरण कमलगल
दलक कसित मिदेतव हृदय मदारे । दर्शयतीव
वहि मर्दन डम नव किसलय परिवारे । दशनपदे

ने वदेते मये प्रणत मणि प्रिय साह साभ्यस्ये ४४
प्रष्टवती ॥ रजनि जनित गुरु जागर गग कषायित
मलसति मेघे । वहति नयन मन गग मिव स्फाट
मदित रसाभितिवेशे । याहि माथ वयाहि केशव
मावथ कैतव वादे । नामन सर सर सीरुह लोचन
यातव हरति विषादे । कजल मलिन विलोचन च

शदे
गी

सर्वत्रिंशे ० श्रीजयदेव भणितरतिवेचितवेदित सु
वति विलापे । श्रुत सदासुखे विबुधा विबुधाल
यतोपि । ८ । अष्टपदी । श्लोक ॥ नवेदेपश्यन्ताः प्र
सर दनरागवहिरिव । प्रियापादालक दुरित
मरुणा योति हृदये । नमाय प्रत्यात प्रणय भ
रभगेन कितवन्तदालोकः शोका दपि किम

भवदथगतममजनयतिचेतसि विदे । कथयति
कथमथनापि मया सह नववपरेनदभेदे ५ वहि
रिवमलिव तरेतरेतव कस मनोपि भविष्यति नू
ने । कथमथ वेचयसे जन मनयतम सम शरच्चर
हने ६ भ्रमति भवान वला कवलाय वनेष किम
त्र विचित्रे प्रथयति एतनि कैववध वय निर्दयवा

रादे
गी

रित्वाच । परि हरकृता नेक शंको नया सतते च
नस्तव जचनया क्रोते परानवकाशिति विशति
विततो रत्यो यत्यो नकोपि समोतरे प्रणयिनि प
वी रेभारेभे विथेहि विथेयतामद मग्ये विथेहिम
यि निर्देय देत देश दोर्वलि वेथनि विडस्तन पीड
नानि चेडित्तमेव मद मेचय पेचवाण चोडात्तको

पिलजो जनयति ४५ पद्मापयो थरतदी परिरम्भ
लग्नकाशमीर सदितमरो मधुसूदनस्य । व्यक्तान्न
शया मितविलदनेयाविद स्वदोबुद्ध मन परयत्त
प्रियम्बः ४६ अत्रान्तरे मरुणा रोष वशा मसी म
निः चासनिस्सह मांवी सम्रावी मपेत्प सबीड
मीलित सावी वदनेदिनोते सानेद गङ्गदपदे हरि

स-दे-
गी-

निशायस्त्रिगुणसुखे प्रयोयसुखस्थितः। अष्टपदी।
वदसि यदि किंचिदपि दत्तकृतिर्कोसदी हरति द
वति मिदमति चोरम्। स्फुरदथरसीयवेतव वद
नचेदमाशेचयति लोचनचकोरे। प्रियेचारुशी
ले सेचयति मानमतिदाने। सपदिमदनानलोदह
ति मममानसंदेहिमात्रकमलमथपाने। सत्यमेवा

उदलना दसवः प्रयोत्त ॥ प्राणिमत्तितव भाति मे
गुरभर्षवजन मोह कराल कोल सर्पी तड दिति
भय भेजनाय सनात्तदथरसीध सधेव सिद्धिमेवः
व्यययति वृथा मोने तत्त्विप्रपेचय पेचमेत रुणा
मधरा लापे स्नापे विनोदय दृष्टिभिः समुत्ति
विमाली भावतान्ता वहि मेचन मेचमो स्वय म

श-हे-
गी

ति कोकनदशे। ऊसम शरवाणा भावेन यदि रेज
यसि कल सिद्धमेतद्वदशे ४ स्वरत्त ऊच ऊभयो
ह परिमणि मेजरी रेजयत्त तव हृदयदेशे। रसत्त
दसनापि तवचन जचन मेडले घोषयत्त मन्मथ
निदेशे ५ स्थलकमल गेज मे मम हृदय रेजनेज
जितरित रेग परभागे। भणमहणा कणि कद

सि यदि सदति मयि कोपिनी देहि स्वर न स्वर शर
चाते । चटय भज वेधने जनय रद विदने येन वा
भवति सख जाते २ त्वमसि मम भूषणे त्वमसि
मम जीवने त्वमसि मम जलधि रत्ने । भवतु भव
तीह मपि सतत मन रोपिने तत्र मम हृदय मति
यन्त्रे ३ नील नलिना भमपि तत्त्वित वलोचने थाप्य

गं दे-
गी

ते । श्लोक ॥ वेद्यक कतिवोथवोय मथशः स्ति
मथ मथक हविः गोडे चेडिचकास्ति नीलनलिन
श्रीमोचने लोचने । नासान्वेति निल प्रसून पद
वीकेदाभदेति प्रिये प्रायस्सन्नाखसेवया विजयते
विषेसपष्ठाग्रथः ५ । दृशौतवमदालसेवदनमिंडु
संदीपने गतिर्जन मनोरमादिजितरंभमूरुहये

वाणि चरण द्वये सरस लसद ललक कयागे ६ सरग
दल खिडने मम शिरसि मेउने देखि एद पलव मुदा
दे । ज्वलति मयि सराणो मदन कदना नलो हरत
नड पाहित विकारे ७ इति बहल चाट एह चारुस
र वैराणो राधिका मयि बचन जाते । जयति पद्मा
वती रमा जयदेव कवि भावनी भाणिन मति शे

रा-दे-
गी-

मात्मा ऊर्ध्वः करोत कवरी भारोपि भारोद्यमे । सो
हेता च दयेव तत्त्वितनते विवाथरोरागवान् सह
तः स्तन मेरुस्त स्तवकथे प्राणैर्मम श्रीरुति ५४
सातिनी मान विधेमदसो जयति सो प्रते । रुडवे
ए ससद्भूतः श्रीमङ्गोपालकधनिः ५५ तामय
मन्मथ विन्नो रतिरतिरस भिन्नो विषाद सम्य

रतिस्तव कलावती रुचिरचित्ररेवि भ्रवा वरोवित्र
र योवने वरुसितान्ति पृथ्वी गता ५२ भूपलवे य
नर योगातरेगितानि वाणाशुणाः अवण पालि रि
तिस्सरेण । तस्या मनेरा जय जगम देवताया म
खाणा निर्जित जगति किमपितानि । ५३ । भूचा
पे निरुता करात्त विशाखो निर्मीत मर्म व्यथेणा

रा-दे-
गी-

संरति वहति मृदु पवने किमपरमधिक सखे सखि
भवते । मायवे माऊरु मानिति मानमये । ताल फ
ला दपि शुक्रमति सरसे । किम विफली कुरुषे क
वकलशे २ कलिल कथित मिदमन्त्र पदमविरे । सा
परिहरी इयमति शय कविरे । किमिति विषीदसि
हो दिशि विकला । वहसति शुद्धति सभातव वि

नो । अनुचितं हरिचरितो कलहान्नरितामवा
चरुः सांख्य ५६ स्त्रिये यत्परुषा सियत्पणामति
स्तथासि यद्यपिणि देवस्यासि यदन्मते विम्वत
नो यातासि तस्मिन्त्रिये । तद्यत्ते विपरीतकारिणि
तव श्रीखंड चर्चाविषे शीतो अस्तपनोहिमे ज्ञत व
हः क्रीडा मदीयातनाः ५७ ॥ अष्टपदी ॥ हरिवरभि

श.दे
गी

श्रीगणेशाय नमः । वचनं विप्रं विवस्वतीं सेवासोयेस
खीवस्वित्तिनिलो विवस्वित्तिनिलो विवस्वित्तिनिलो नो
तिमलो गते । हृदयमदये तस्मिन्नेव घनवर्लते व
त्तात् ऊवलय दशास्वामः कामोत्तिकास निरेऊशः
५६॥ गणपतिशालाग्रामे भ्रामे भ्रमा दपिमेहते
वहनिचपरि नोषे दोषे विसेवति दूरतः । यवति

कला ५ जनयसि मनसि किमिति यरु विदे । मया
मम वचन मनीहित मेदे ५ हरिरुपयात्र वद्धमथ
दे किमिति करोषि हृदय मति विश्वे ६ सजल न
लिन दल शीतल शयने । हरिमवलोकय सफल
यनयने ७ श्रीजयदेव भाणित मति ललिते । स्वावय
वसिक जने हरि चरिते ८ ॥ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥

रा-दे-
गी-

नयेत प्रीणा यित्वा सगादौ गतवति कृतवेधे कश
वे जेज शय्यो रचित रुचिर भूषो दृष्टि मोषे प्रदोषे क
रति निरवसादो कापि राथोजगाद दसामो द्रव्य
निवर्त्यति प्रियकथो प्रयोग मालिगते । प्रीति यास्य
निरेष्यते सावि समारभ्येति विना कुलः । सन्तोषश्च
निवेपते पुलकयत्यनेदति स्विद्यति । प्रत्यङ्गव

इन्द्रलक्ष्मी कृष्ण विज्ञापिणी सोदिता पुनरपि मनो
दमे कामे करोति लक्ष्मी किं ५५ श्रीति सप्तमतो
इति ऊवलयया पीडित साहं यो राधापीन ययोयव
स्रग्वा कलकेभेन संभेदवान् । यत्र स्थिति मील
ति लक्ष्मी मय तिष्ठे दिपे तत्क्षणात् । केसस्यालम
भूजितमिति व्यामोह कोला इलः ६-सुखविमल

रादे-
गी-

दन सेशमा दवरतारैभादव शीतयोः । अत्यर्थे रात
योर्धमात्मिलितयोः सभाषणोर्जीततो । देवत्योति
ह कोन कोन तमसि श्रीडाविमिशोरसः ६४ अ
त्ताति तिपदेजने अवणयो स्तापिक्क शुक्काली ।
मूर्द्धि शणम सरोजदासकुचयोः कस्तूरिकापत्र
कम् ॥ शूर्जीतामभिसारसन्तर हृदो विषडुति

निमृद्धेति स्थिरतमः संजे निजेजे प्रियः ६२ त्वदामे
नसमे समय मथना तिरमोश्चरस्तेरागो । गोविंदस्य
मनोरथेन च समं प्राप्तं तसः सांद्रतो । कोकानो करु
णा स्वनेन सदृशी दीर्घा मदभार्यया । तत्त्वग्येति
फले विलंबनमसौ रम्योभि सारदायाः ६३ प्राप्तेषा
द्वच चंवना द्धनलो लेखा द्धनस्वान्तजः प्रोद्धया

रादे
गी

केलि शयन मनयाते १ मये मथ मयन मनयातम
नसरयाथिके । चतजचनस्तनभारभरे दरमस्यरव
याविहारे । सावरितमणी मेजरी मयेहि विथेहिम
शल विकारे २ मया मयाय नरेतरुणी जन मोह
न मथरिषावे । कसमशासन शासन वेदिनिपि
कनिकरेभजभावे ३ अनिलतवल किसलय निक

ऊंजेसगिव । धोतनील निचोल चारु सवर्ण पत्रेग
मालिगते ६५ काश्मीर गौर वपुषा मभिसारिकाणा
मावहरेत्त मभितो रुचिमंजरीभिः । एतत्तमालद
ल नील तमेत मिश्रे तत्तेमहेम निकषो पल्लोत
नोति ६६ अष्टपदी ॥ विरचित चाह वचन रचनेच
रणे रचित प्रणिपते । संप्रति मञ्जल वेजल सीमति

रा-दे-
गी-

सप्तशतसुभगासखिनसखीसखलेंवकरेणसली
लेचलवलयकणितैरखोथयहरिमणिनिजग
तिशीले० श्रीजयदेवभाणिमथरीकतहारमय
क्षितवामे। हरिवितित्तमनसामयितिएतकेद
तहीमविशमेद॥ अष्टपदी॥ श्लोक॥ सामान्द्र
ह्यतिवह्यतिप्रियकषोप्रमेगमालिगनै॥ श्री

देहा करेण लता निजरेवे । प्रेराण मित कर भोरु
करेणि गति प्रति मंच विलेवे ४ स्फुरित मने गत
देवा वशा दिव स्फुरित हरि परिरेमे । एक मनो हरहा
द विमल जलधार ममं ऊच ऊये ५ अथिगत म
खिल साखी भिरि देतव वष रपि रति राण सजे । चे
दि वणीत दशना रव दिहिम मायि सर समलजे ६

रा-दे-
गी

वेनमाली। गोपीपीनपयोधरमर्दनचेवलकरप्र
गशाली। नामसमेतेकृतसेकेतेवादयतेसुखेवा
वडेमनतेतवतेननुसंगतपवनचलितमपिरो
पततिपतत्रेविचलितपत्रेपोकितभवडप्रयानम्
रचयतिशयनेसचकितनयनेपश्यतिनवपेयामे
इसुखरमथीरेत्यजनेजीरेरिषमिवकलिसुलोले-

नियामानि वेद्यानि शान्ति समाधानेति चित्ताकुलः
सन्ताप्यपि वेद्ये प्रलब्धकय त्पानेदति स्थिति।
प्रपन्नद्वि मूर्च्छति स्थिरतमः प्रजेति ज्ञेयः प्रियः ६६
अथपदी ॥ रति सत्त्वहारे मत मभिसारे मदन् मनो
हरेवेपे । निजकृ नितेति निशमन विलेखन मन्त्र
सद्वत्ते हृदये ॥ यीव समीरे यमनातीरे वसति वने

रा-दे-
गी-

याति विरामे। ऊरु समवचने सत्वरवचने ह्ययमधुरि
प्रकामे० श्रीजयदेवकृत हरिसेवेभाषातिपरमरम
णीये। प्रसदित हृदये हरिमणि हृदये नमत सकृत्
कमनीयेद। अष्टपदी। श्लोक। सभयचकिते विसर्पे
नी-दृशे। निमिरपि प्रतिरुतमङ्ग-स्थित मन्द
पदाति वितनेनी कथमपिरहः प्राप्ता मेवै रने गैत

वल्गुसावि कजे सवि मिरे पेजे श्रीलय नील निचोले

४ उरसि मगरे रुपाहित हारे चनर व नरल वलाके ।

नदि दिव पीतेरति विचरीते राजसि सक्त विपाके- ५

विगलित वसने परिहृत रशने छटय जचने मणि

थाने किमलय शयने पेकज नयने निधि सिवर्षे

निथाने ६ हरिभिमासी रज निरिथानी मिय मणि

गा-दे-
गी-

ये साथ व समीप मिह नव भवद शोकदल शयन सा
रे विलस कुव कलश नरल हारे २ कसम वयर चि
त अविवास गेहे । विलस कुसम सकुमार देहे ३
चल मलय वन पवन सरभिशीते । विलस रतिव
लित ललित गीते ४ वितत वड वलित नव पलव च
ने । विलस विरमल सपीत जवने ५ मधु सदित

रंगिभिः समीवि सभगः सत्ताम्यपन्नपैत्रकत्तार्य
तो ७ हारावली तरल कोवन कोविदाम मेजीरके
कण मणि फति दीपितस्य हारे तिऊन तिलयस्य
हर्षि निरीत्य व्रीडावतो मय सखी निजगादशयो
दद ॥ अष्टपदी ॥ मेजतर केजतल केलिमद
ने विलस रति रभ सहसित वदने १ अविश श

रादे-
गी-

दीवरे । स्वकेदे मकरेद सेदर गलत्तेदा किनी मेउरे
श्रीगोविंद पदार विंदम शुभस्केथाय वेदामहे ६५
ग्रहमिह निवसा मियादिगथा मचनय महचने
चातयेथाः । इति मथुरिषणा सखीतिशुक्ता स्वय
मिदमेव पुनर्जगादशथो ७- त्वोचितेन चिरे वहे
नय सति श्रोतोभ्रंशतापितः । केदोर्पणचपान्न

मधुपकुलकलितरावे विलसमदनरस सरसभा
वे ६ मधुरतरपिकनिकरतिनदसावे । विलस
दशानरुचिरुचिरशिखरे ० विस्तिपद्यावतीसाव
समाजे । भातिजयदेवकविराजराजे ६ अष्टप
दी ॥ श्लोक ॥ सान्द्रानंदप्रदरादिदि विषहेदे
रमदादरादानैर्मज्जतेनीलमणिभिः सदृशिते

शदे-
गी-

तयोः । तदानीं राधायाः प्रियतम समा लोकसम
ये । पणान् खेदोव प्रसरयितुं हर्षीकृतिकरः अ
भजेत्यास्तन्योते कृतकपटकशङ्कति विहितः ॥
स्मितयाते गेहाहृदिरवहिताली परिजने । प्रिया
स्वपशंसाः सरससमाकृतसुभगे । सलज्जाया
लज्जाव्यामदिवहरेण शरणाः ॥ ५४ ॥ अष्टपदी ॥

मिच्छति सथा संवाध विनाथरे । अस्मिन्के तदलेऊरु
तणामिह भूतेषु लक्ष्मीलव । कीर्तेदास उवोप से
वित पदो भोजेऊतः संभ्रमः ॥ साससाधससा ने
द गोविंदे लोललोचना सिंजान मेज मेजीरे अवि
वेश निवेशने ॥ अति क्रम्या पादो अवणा पयप
र्यंत गमन प्रवासे नैवाक्षणे स्तरल तरनारम्यनि

शदे-
गी

शे २ श्यामलमंडलकलेवरमेडलमधिगतगौर
उकलेनीलनलितमिवपीतपद्मापटलभरतल
यितमूले ३ तरलद्वयचलचलनमनोहरवदन
अतिनयनियोगे। सुटकमलोदरविलितखेजनय
गणिवशरदिनउगो ४ वदनकमलपरिशीलनमिति
तमिहिरसमकेडलशोभे। सितरुचिकसमसख

याथावदन विलोकन विकसित विविध विकार वि
भेदो । जलनिधि निव विधु मेदल दर्शित तरलित
तेशा तरेयो १ हरि मेकर सेचिर मभिलखित वि ।
ल्लासे । सा दर्शित रु र्ध्व वशे वद वदन मनेग वि का
से । हार मसल तरलार मर सि दधते पविलेय वि ह
दे । स्फुटतर फेन कदेव करे वित मिव य मला जल

रा-दे-
गी-

प्रणामारे। प्रणामतद्दिविनिथाय हरिं सविंदस क
तो दय सारे। द॥ प्रणपदी॥ स्लोक॥ गानवनि सखी
वेदे मेदत्रपाभर निर्भर सार पर वशाकृत स्फीत सि
तस्त्रापिता यशम्। सरस मलसे दृष्टा दृष्टा मज्जन्ते
वपलव प्रसर शयने निद्रिमात्मी मवाव हरिः प्रि
याम्। किशलय शयने तले ऊरु कामिनि चरण

लसिताथरपलव कृत रति लोभे ५ शशिकिरण
हृदितो दृजलथर सेदर सकसम केशे तिमिरो
दित विप्र मेडल निर्मल सलयज तिलक निवेशे ६
विप्रल पलक भरदेत रिते रति केलिकला भिरथी
रे। मणिगण किरण समरु समज्जल भूषण सुभरा
शरीरे ७ श्रीजयदेव भणित दिभव दिशणी कृत भू

रा-दे-
गी

इमिवापनयामिपयोधरोयक मरसिउकले ३
प्रियपरिरेभणा रभसवलित मिव पुलकित मनि
उरवापे । मधुरसिऊच कलशे विनिवेशय शोष
यमनसिजलापे ४ अथरस्यारस मपनय भासि
तिजीवय मृत मिवदासे । नयिवितिहित मृतसे
विरहानल दग्ध वपुष मविलासे ५ शशिसावि

कमल विनिवेशे । तवपदपलववैरापयभवमिद
मनभवतस्वेष्टे । क्षणमथना नाशयण मनरा
त मनसरराधिके । ॐ । करकमलेन करोतिचर
णमहामागामितासि विहरे । क्षणमप्यक्रुशय
नोपरमासिव नूपरमनरातिशूरे २ वदनसुधाति
शियालितमस्तमिवरचयवचनमनकूले । विर

रा.दे.
गी

नोरमरतिरसभावविनोदं द्रष्टव्यम् ॥ श्लोक ॥
प्रहृष्टः प्रलको जरेण निविडा स्नेहे निर्मेषणाच
क्रीडकृतविलोकितेथरसथापाने कथानर्मभिः
आनेदाभिगमने मन्मथकलाबुद्धेपि यस्मिन्नुभ
उद्धतः सतयोर्विभूवसरता रेभः प्रिये भावकः
७६ मीलहृष्टिमिलकपोलप्रलदेसीत्कारथाभाव

सुखरयमणीरशनायणमनयणकेटतितादम्-
कतिप्रयलेपिकरुतममशमयविशदवसादे ६
मामनि विफलरुषाविफलीकृतमवलोकितद
धनेदे । मीलनिलजितमिवनयनेनव विरमवि
सृजयति विदम् ७ श्रीजयदेवकवेरिदमनपदनि
गदितमशुविप्रमोदम् । जनयन्नरसिकजनेषुन

रा-दे-
गी

मपि तस्मिन्मायतदज्ञे कामस्य वासायतिः ७८ वा
मोके रतिकेति संज्ञा सरणा रेधातया साहस प्राये
कोतजयाय किंचिदपरिप्रांरभियत्सेभ्रमोतिसेदा
जचनस्य ली शिथिलितो दोर्वलि रुक्तेपिते वक्षो
लीलिते मतिपौरुषरसः स्त्रीणां कृतः सिध्यति ७९ त
स्याः पादलपाणिजो कित्तमरो तिश्च कषाये दृशो

यादव्यक्ता कलकेलि काकविक सदेना अथौ ताथरे
यसोक्ताम्य पयोथरे भृशपरिषेगात् करेगी दृष्टो ।
हर्षोत्कर्ष विमल निःसहस्रनो र्थसो ययमानने ७७
दोर्भ्यो सेयमितः पयोधर भरेणा पीडितः पाणिजै
राविदोदशनैः हताथर प्रदः शोणी तदे नाहतः हस्ते
नानमितः कचेथर मधुसूदेन सेमोहितः कातः का

रादे-
गी

दद्यान्नेदन् गोविन्दे द्रष्टुं प्रह्लादम् । कुरु यत्तु नेदन् वे
दन् प्रीतिरितरेण करेण पयोधरे । स्यात्तदपत्रक
मन्त्रमन्त्रो भव मे गालकलशसहोदरे । तिजगादसा
यत्तु नेदन्ने क्रीडति हृदयानेदन्ने । द्यौश्चैव न लेखितं क
ञ्चन मञ्जलय प्रियलोचने अति कुलगजनमैजनके
दतिनायक मोचने नयन करेण तरेण विका मिति

मतिर्हृत्तो यरशोष्णिमा विल्वलिता स्वस्तसुजो मर्ह
जाः कोवीरामदरस्योचलमिति प्रातर्निवाते दृशो
देभिः कामशैरस्तदङ्गतमभ्युत्पन्नमनः कीलिते दृश
यकोतेरति श्रुतमपि मेङ्गेनोक्त्या निजगादतिगवा
थायथा स्वाधीन भर्तृका द। इति मनसा निगदेते
स्वरतोते सानिनोत वित्रो गीराया जगाद सादर मि

रा-दे-
गी-

नम रुचिरे विकारे जस मातदमानस जयमचामरे-
वतिगालिते ललिते असमा निशिखेदिशिखिदिक
आमरे ६ सरसचने जचने ममशेवरदारणा केदरे।
मतिरशाना वसनाथराणाति प्रभाशयवास्यसेद
दे ७ श्रीजयदेववचसि जयदे सदये हृदये जरु मेउने-
हरिचरणसरणा दत्तकेतकलिकलमज्जरसेउने ८

दसकरे प्रतिमेडले । मनसिज पाश विलासकरेश
भवेष्ट निवेशय केडले ३ भुमर खयेर खयेन अपारि
चिरे सचिरे ममस सखे । जित कमले विमले परिक
त्यय नर्म जनक मल केसवे ४ हृगामदर मललि
ने ललिते करुतिलक मलिक रजनीकरे । विहित
कलेक कले कमलावन विप्रमित प्रमशीकरे ५

रादे- यन्नयो राथाय राथानने स्वैरं स्वर सवोवजोस्व ज
गी- रादानेदायनेदात्मजः ८५ पर्येकी कृतनागनाथ
कफणा श्रेणी मणी नोराणे सेकोज प्रति विव सेव
नमया विश्विभ प्रक्रियो । पादोभोरुह थारि वारि
यि सता मत्तां दिहत्तः शनैः । काय वृह मिवाचरे
नपचिती भूतो हरी पातवः ८६ तिर्यक्ते ह विलो

श्लोक । वचय ऊचयोः एवे वित्रे ऊरुष कपोल योश्च
दय जचने कोची मेच सजा कवरी भरे । कलय बल
य अणी पाणो पदे ऊरु नृपय विनि नियादितः श्री
तः श्रीतो वरो पितया कयेत् दध प्रातर्नील निचोल
मयुज सरः सेतीत पीतो शुके रायाया अकिने विलो
दय इति सिखरे सावी मेरुते । श्रीदावेचल मेचलेन

रा-दे-
गी-

रसे हरि मिर विहित विलासे । सयति मनो मम क
न परिहासे चेष्टकचारु मयूर शिखेडक मेडल व
लयित केशे । प्रचर प्रेदर यनर नरे जित मेडर म
दित सवेषे २ गोप कदेव नितेव वनी सात चेवन
लेवित लोभे । वेध जीव मथरायर पलव मल सि
तस्मित शोभे ३ दिप्रल प्रलक भुज पलव वलयि

नमो लितरलोते सस्य वेशो ह्ये । जीति स्या न कता
वधान ललना लतेगा मेलतिताः प्रेम्णा केदलितः
सुखग्य मधुरे राधा सखि वैदौ सथा । सोरे वो मधुसूद
नस्य ददत ते मे कदा सो मे वः ८७ ॥ अष्टपदी ॥
सेचर द्यर सथा मधुरधनि मखरित मोहन वशे
चलित द्योचल चंचल मोलिकपोल विलोल वसंते ।

रा-दे-
गी-

विशदकदेव तले मिलिते कलिकलसमये शमये
ने-सामपि किमपि नरेण दनेण दशा मनसा रमये
ने ७ श्रीजयदेव भणित मति सेदर मोहन मधुरि
प्रहरे । हरिचरण स्मरणे प्रति सेप्रति प्रणवता
मनरूपम् ॥८॥ श्लोक॥ हस्त खल विलास
वेशमन्त्र भूवलि महलवी वेदोत्सा ॥

नवलवयवति सस्त्रे । कवचरणोरसि मणि गणभू
षा किरण विभिन्नत मिसे ४ जलट पदल चल
दिष्ट विर्तिदक वेदन विडललाटे । पीन पयो यत्र
परि सर मर्दन निर्देय हृदय कषाटे ५ मणि मय
मकर मनोहर ऊंड मेडित गोडु जहार । पीत वसन
मनगात मनि मनज सरा सर वर परिवारम् ६

सू-दे-
गी

धेसः केसरिणो व्योमो ह्यतवो श्रेयोसि वेशीरवः ६५
यज्ञोथर्व कलासकौशलमनथानेव यदैलवे य
तुष्टेगार विवेक ततमपियत्कावेष लीलायिते
तत्सर्वे जयदेव पेडित कवेः कसैकतानात्मनः । सा
मदाः परिशोथयेत मपियः श्रीगीत गोविदतः
६- साधी साधीक चिन्तानभवति भवतः शर्कैक

विद्योतवीरिते मतिस्वेदरीगेदृश्यते । मासदी
ह्यविलजितस्मितस्रथास्रथाननेकानने । गो
विदेव्रजसंदरीगाणवतेपश्यामिदृष्यामिच दद
अतर्मादनमौलिह्रीणतचलन्मेदारविसेसनः
स्रज्याकर्षणादृष्टिर्दृष्यामहासेत्रेऊदेगीदृशे ।
दृष्यमानवदृयमानदिविषडुवीरडः । वापदास ॥

रादे-
गी

चक्रवर्ती श्रीवासदेव रति केलि कथा समेत मेते क
रोति जयदेव कविः प्रवर्धे ३ यदि हरि स्मरणे सरस म
नोपदि विलास कलास ऊत हले । मथर कोमल को
त पदावली शृणु तदा जयदेव सरस्वती ३ वाचः प
लव यत्नमा पतिथरः संदर्भ अहि गिरो ॥ जानी
ते जयदेव एव शरणाः स्माव्यो डरुड डतेः । श्रेया

अथ राग देवशाख गीत गोविंद परिच्छेद माह ॥

ताल। ॥ मैत्रै मै उर मवर वन भवः श्यामास्तमा

लडु मै नक्त भीरु ये त्व मै व तदि मे राये गृह प्रापय

इत्ये न दति देशत अलितयोः प्रत्यध ऊजडु मे राथा

माय वयो जयेति यमना कूलरुहः केलयः १ वादे

वता चरित विवित चित सस्या पस्यावती चरणा चारणा

रा-दे-
गी

चक्रगारिष्टे केशव धृत कक्षप रूप जय जगदीशहरे २
वसन्ति दशान शिखरे थरणी नवलया शशिनिकले
क कलेवनि मया केशव धृत मकर रूप जय जग
देशहरे ३ नवकर कमलवरी नाव प्रद्युत भेगे दलि
न हिरण्य कशिपु नव भेगे केशव धृत नरहरि
रूप जय जगदीशहरे ॥४॥ बल यति विक

रोतर मत्स्यमेयरचनै राचार्य गोवर्द्धन सही कोपिन
विश्रुतः श्रुतिथो योयीक विस्मापतिः ॥ अष्ट
दी रागदेवशाख । ताल । । प्रलय प्रयोधिज
ले धनवानसि वेदे विहित विहित चरित्र मते दे
केशव धनमीन शरीर जयजगदेशहरे १ तितिर
ति विप्रलतरे नव तिष्ठति एष्टे धराणि धराणि किण

रा-दे-
गी-

णीये । केशवधनखपतिरूपजयजगदीशहरे ७
वहसि वषषि विशदे वसने जलदाभे । हल हति
भीति मिलित यमनाभे । केशवधनहलधररूप
जयजगदीशहरे ८ तिदसियनविथेरह्ररु अतिजा
ने । सदय हृदय दर्शित पञ्चाते । केशवधन व
थ शरीर जयजगदीशहरे ९ स्नेहकति टहनि थने

मणो वलि मङ्गल वामन यदन खनीर जतिन जन
पावन केशव धन वामन मन रूप जय जगदीशहर
दे ५ क्षत्रिय रुथिर मये जगदप गत पापे । स्त्राप
यसि ययसि शमित भवतापे । केशव धन मय
पति रुय जय जगदीशहरे ६ विन्नरसि दिन्नर
णो दिपति कमनीये । दशम ख मौलि नलि रम

रादे
गी

जयते हले कलयते कारुण्यमातन्वते । स्नेहान्तर
र्क्षयते दशा कृति कृते कृष्णाय तन्मेतमः ॥ १२ ॥ अष्ट
पदी ॥ अत्र कमला ऊच मेरुत एत ऊरुत । कलि
त ललित वनमाल जय जय देव हरे । दिनमणि
मेरुत मेरुत भव विरुत सति जन मात सहस्र जय
जय देव हरे २ कालिदा विषय रगे जन जन रे जन

कलयसि करवाले । एतकेतमिव किमपि कराते
केशव धन कल्कि शरीर जय जगदीशहरे १- श्रीज
यदेव कवे रिद सदिन महारे । एण सखदे शुभदे
भवसारे । केशव धन दश विध रूप जय जगदीशह
रे ११ वेदानुहरते जगन्निवहते भूगोल सदिभुते दे
नेदारयते वलि कलयते सत्रक्षये ऊर्वते । पौलस्त्ये

श-दे-
गी

थरसेदयधत मेदय श्रीमलवचंद्रवकोर । जयजयदेव
हरे ७ श्रीजयदेव कवेरिदे करुते सदे संगत मज्ज
लगीते । जयजयदेव हरे ८ अष्टपदी । श्लोक । राशो
लास भरेणा विश्वमभ्युता माभीरवास अवा मभ्यर्ण
परिरभ्यति भैरभ्यः प्रेमो यथा रायया । साधनदहने स
यामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुति व्याजाड्डवचेवित

यड ऊल कमल दिनेश । जयजयदेवहरे ३ मधु
सर नरक विनाशन गरुडासन । सर ऊलकेति
निरान जयजयदेवहरे ४ समल कमल दललोच
न भव मोचन । त्रिभवन भवन तिथान जयजयदेव
हरे ५ जनक सताकृत भूषण जित दूषण समर
शमित दशकेद । जयजयदेवहरे ६ अभिनव जल

वा-दे
गी

विमूर्तिमानि वमथौ मय्यो हरिः क्रोडति ६ ति नो
न्नेग वराहनेग कवल क्लेशादिवेशाचले प्रालेयलव
नेक्यान् सरति प्रोविड शैलानिलः । किंचस्त्रिग्य
मालमौलिमकुलामालोक्य हर्षो दया । उन्मीलति कु
हः कुहुरिति कलौ नानाः पिकानोगिरः १५ । अष्ट
पदी ॥ चेदन चर्चित नील कलेवर पीत वसन ।

स्मितमनोशरीरःपातवः अनेकनारी परिवेभसे
भमस्फुरन्मनोशरीरविलासलालसे मयारिसमा
दृष्टदर्शयत्पशौ सखी समक्षे पुनराह रायिका
विधेया मनरेजनेन जवयन्नानेद मिदीवर श्रीणी
स्यामलकोमलैरुपनयन्नेशैरनेगोत्सवे । स्वच्छेदे
वज्रसंदरीभिरभितः प्रत्येगमालिगितः प्रेगारः

रादे
गी.

के मधु सूदन वदन सरोजे ३ कपिकपोल तले मिलि
नालपिते किमपि श्रुति मूले । चारु बुधेव नितेव
वती दयिते पुलकै रनकूले ४ केलिकलाकतकेन
च काचिदमेयमना जलकूले । मेजलवेजल केज
गते विच कर्ष करेण उकूले । करतल ताल तरल
दलया वलिकलित कल खन वेशे । एस रसे सह

वनमाली । केलिचलन्मणि केडल मेडित मेरु
गस्मितशाली । हरिहरमगधवधनिकरे । विलासि
नि विलसतिकेलिषरे । पीतपयोधरभारभोग ह
रिपरिरभ्यसरागो । गोपवधरतगायति काचिदुदे
वितपेवमरागो २ कपिविलास विलोल विलोच
न विलनजनितमनोजे । ध्यायति मगधवधरथि

रा-दे-
गी

इशै विगलित निजोत्कर्षा दीर्घा वशेन गतस्यतः
कचिदपिलता केजे येजत मधुवत मेडली मात्र
शिखरे लीना दीना सुवाचरः सखी १० केसारि रपि
सेसार वासना वेथ शेखलो राधा मायाय हृदये
तत्पाज व्रज सेदरी ११ इतस्तत्ता मन सत्यरा
थिका सनेरा वाणा व्रज विन्न मानसः कृतानता

इत्यपराहरिणापवतोप्रशसेसे ६ स्त्रियनिका
मपिचेवतिकामपिरमयनिकामपि रामोपश्य
निसस्मितचारुपरा मपरा मलुगच्छनितामो ७
श्रीजयदेवभाणितमिदमदुतकेशवकेलिरह
स्ये। हंदावनविपिनेचरितेवितनोत्तप्रभानि
यशस्ये। ८। विहरतिवनेगथासाथारणाप्रणये

रा'दे'
गी

कुदिल अकोप भरेण शोण पत्र मित्रो परिभ्रमता
कुले भ्रमणोत्तना महे हृदि संगता मतिशे भ्रशे रमया
मि किं वनेन सगमिता मिह किं वथा विलयामि ४
तन्निविन्न मस्रयया हृदयन्तवा कलयामि तन्न
वेसि कुतो गता सितते नते न्नयामि ५ दृश्यसे प्र
रतो गता गत मेव किं विदथासि । किंपरे वशा सं

एः सकलितेदनीतस्यन्तुजे निषसादसायवः
१॥ अष्टपदी ॥ सामिये चलित्ता विलोक्य हते वधु
निचयेन । सापरायतया मयानति वारितानि भये
न १ हरिहरिहता दयतया गतासा ऊपितेव । किंक
रिष्यति किं वदिष्यति साविरे विदहेण किंथनेन जने
न किमस किंयतिन गृहेण २ चित्तयामि तदानने

गो. ^{२म}कूलेवरः ^{३म}केलयः ^{२३}॥ ^{२४}वाग्देवता चरित
गो. चित्रित चित्त सभा। पद्मावती चरणचार
ण चक्रवर्ती। श्री वासुदेव रति केलि क
था समेत। मेतं करोति जयदेव कविः
प्रवेयम्। २। यदिहरि स्मरणे सरसे मनो।
यद्विलास कलास कुतूहले। मथुर

ॐ अथ गीत गोविंद परिवर्द्ध माह । राग ल
लित । नाल । ती ना । ३ । मेवै मे उर मखर बन
भुवः षण्मा स्तमाल दुमे । नक्तभीरु
रये त्वमेव तदिदे राये गृहे प्रापय । इत्ये
नंद निदेश तस्मालि तयोः प्रत्यब्ध ऊज
दुमे । राधा मायव यो नयेति यमुना ।

गी क विष्णु पतिः । धारणीनी ललित । ताल
गो । प्रलय पयोधि जले धृत वानसि वेदे ।
विहित चरित्र मवेदे । केशव धृत मीन शरी
र जय जग देश हरे ॥ । क्षिति रति विष्णु
ल तरे तव तिष्ठति शृष्टे यरणि यरण
किण चक्र गारिष्टे । केशव धृत कल्प रु

कोमल कोत पदावली । शृणु तदा जय
देव सरस्वती । ३ । वाचः पल्लव यत्समा प
तिथरः । संदर्भं शुद्धिं गिरो । जानीते जय
देव एव शरणः श्लाघ्यो उरुह दुते । शृंगा
रोन्नर सत्यमेव रचनै राचार्य गोवर्द्धन ।
स्यही कोपित विष्कतः श्रुति थरो थोयी



गी ५। जय जग दीश हरे। ५। चलयसि विक्र
गो ॥ वलि मद्भुत वामन। पदनत्रि नीर ज
नित्तज पावन। केशव धृत वामन रूप।
जय जगदीश हरे। ५। त्रिविध रुधिर मये
जग पद गत पापे। स्वपयसि शमित भ
वतापे। केशव धृत भृगु पति रूप। जय

प० जय जगदेशहरे । २ । वसति दशान शि
खरे धरणी तवलया । शशिनि कलेक
कलेवनि मया । केशव धत शूकर रूप
जय जग देशहरे । ३ । तव कर कमल
वरे नाव मधुत भेगो । दलित हिरण्य क
शिप्र तन भेगो । केशव धत नरहरि रु

गी जय जगदीश हरे । ८ । निंदसि यज्ञ विधेर
गो हरे श्रुति जाते । सदय हृदय दर्शित पशु
चातम । केशव धृत बुद्धि शरीर । जय जग
दीश हरे । ९ । मेघ निवह निधने कलयसि
करवाले । धृष्ट केतु मिव किमपि कराते ।
केशव धृत कल्कि शरीर । जय जगदीश

जग दीश हरे । ५ । वितरसि दिक्षु रणे दि
पति कमनीये । दशमुख मौलि बलि
रमणीये । केशव धृत रघुपति रूप । ज
य जगदीश हरे । १० । वरसि वसुधि विशदे
वसने जलदाभे । हल हति भीति मिलि
त यमुनाभे । केशव धृत हलधर रूप ।

गी मात न्वते । स्नेहा न्मूर्ख यते दशा कृति कृते
गो कृष्णाय नमः । ५ । रागिनी । ललित ।
ताल । श्रित कमला ऊच मेउल धत ऊ
उल कलित ललित वनमाल । जय जय दे
व हरे । ॥ अ० । दिन मणि मेउल भव विरन
मुनिजन मानस हेम । जय जय देव हरे । १ ।

हरे। ॥ श्री जय देव कवेरिद मुदित मुदारे।
शृणु सखिदे शुभदे भवसारे। केशव धन
दशाविद रूप। जय जगदीश हरे। ॥ वेदा
नुद्धरते जगति वहते भूगोल मुद्दिभते ।
दैत्ये दार यते बलिं बलयते क्षत्रक्षये कुर्व
ते। पौलस्त्ये जयते हले कलयते कारुण्य

गी क सना कृत भूषण जित हषण समर शमि
गो न दशकंद । जय जय देव हरे । ६ । अभिनव जल
थर सेंदर धत मेदिर श्री सुख चंद्र चकोर । जय
जय देव हरे । ७ । श्री जय देव कवेरिदे ऊरुते सु
दे मेगल मुज्वल गीते । जय जय देव हरे । ८ ।
रासोलास भरेण विश्रम भूता साभीर वाम

कालिय विषयर गोजन जन रंजन यड
कुल कमल दिनेश । जय जय देव हरे । ३ ।
मथ मुर नरक विनाशन गरुडा मन सर कु
ल केलि निदोन । जय जय देव हरे । ४ । अम
ल कमल दल लोचन भव मोचन त्रिभुवन
भुवन निधान । जय जय देव हरे । ५ । जन



गी नराह राधिका । १० । विशेषा मनरेजनेन जनय
गो ज्ञानेद मिंदीवर । श्रेणी श्यामल कोमलै रूपन
य ज्ञै रनेगोत्सवे । सखन्ते व्रज सेदरीभिरतः
प्रत्येग मालिगितः । शृंगारः सति मूर्ति मा
निवसथौ मुग्धो हरिः क्रीडति । ११ । नित्योत्से
गवसद्गुंग कवल लेशादि वेशा चले । प्राले

अवा । सम्पूर्ण परिग्रह निर्भर स्वरः प्रमोद
या राधया । साधुत्वद्वन्द्वे सदा मय मिति व्या
हृत्य गीत स्तुति । व्याजाड्डट चेवित स्मित
मनो हारी हरिः पातवः । ५ । अनेक नारी परि
रेभ संश्रम स्फुरन्मनो हारि विलास लालसे ।
मुगारि मारा डुप दर्श यन्मसौ सखी समक्षे प्र

गी चलन्मणि ऊंडल मेडित गंड युगस्मित शा
गो ली॥॥ हरि रिह मुग्ध बधु निकरे विलासिनि
विलसति केलि पदे॥॥ अ॥ पीन पयो धर
भारभरेण हर्षि परिभ्य स्यागे॥ गोप बधु
रनु गायति काचिउदे वित पेचमरागे॥२॥
कपि विलास विलोल विलोचन विलन

य प्रवने ह्ययानु सरति श्रीविडशैला नि
लः । किंच स्निग्ध रसाल मौलि मुकुला
न्यालोक्य हर्षोदया । उन्मीलेति ऊह ऊह
रिति कलोत्तानाः पिकानोगिरः । ११ । रा
गिनी ललित । ताल १ चेदन चर्वित नी
ल कलेवर पीतवसन वनमाली । केलि

गी विच कर्ष करेण उकूले । ५ । करतल ताल
गो तरल बलया बलि कलित कल स्वन वेशे ।
रामरसे सह नृत्य परा हरिणा युवती प्रश
शेसे । ६ । श्लिष्यति कामपि चेवति कामपि
रमयति कामपि रामो । पश्यति सस्मित चा
रु परा मपरा मनुगच्छति वाम् । ७ । श्री जय

जनित मनोज्ञे । आयाति अग्य वधू रथिके म
धुसूदन वदन सरोजम् । ३ । कापि कपोल
तले मिलिताल पित्तैकमपि शुक्ति मूले ।
चारु चुचैवनि तेववती दयिते पुलकै रजक
ले । ४ । केलि कला कुत केनच काचिदसं
यमुना जल कूले । मेजल वेजल कुंज गते

श्री
गो
पुत्राच रहः सांवी । १० कंसारि रपिसेसार वास
ना वेथ शेविलो राथामाथाय हृदये तत्पान्न व्रज
हृदयीः । ११ । शतस्तनस्ता मनु सत्य राधिका मा
नेग वाणा व्रज विन्न मानसः । कृतानु तापः
सकलित नन्दनी तद्यन्न कुंजे निषसाद माथवः
। १२ । रागिनी ललित । ताल । मामिये च

देव भणित सिद्ध मद्रुत केशव केलि रहस्य
म। हेदावन विपिने चरिते वितनोत्त शुभा
नि यशस्यम। २८। विहरति वनेराया साया
रण प्रणये ह्यौ विगलित निजोत्कर्षा दीर्घा
वशेन गता न्यतः क्वचिदपि लता ऊँजे गुंज
नमथवत मंडली सुखर शिखरे लीना दीना

गी शोणपञ्च मित्रो यति भ्रमता कुले भ्रमणे
गो न । ३ । तामहे हृदि संगता मनिशो भूशो र
मयासि । किं वनेन सारा मितामिह किं व
था विलयासि । ४ । तन्निविन्न मसूयया ह
दयेतवा कलयासि । तन्न वेधि कुतो गता
सि न तेन तेन नयासि । ५ । दृश्यसे पुरतो

लिता विलोक्य हतं वध निचयेन सा सापराध
तया मयान निवारिता तिभयेन । ॥ हरि हरि
हता दयतया गता सा कृपितेन । अ० । किं क
रिष्यति किंवदिष्यति सा चिरं विहरेण । किंथ
नेन जनेन किं सम किं सखेन गृहेण । २ ।
चित्तयामि तदानने कटिल अकोप भरेण ।

गी एतेमा ऊरु चत सायक मधु मा चाप मारो प
गो य। क्रीश निर्जित विष मूर्ध्नि जना वातेन
किं पौरुषे। तस्यापव मृगी दृशो मनसि ज
शेखत्कटाक्षा शुग। श्रेणी जर्जरिते मना
गपि मनो नाद्यापि संयुज्जते। १३। हृदिविला
शता दारो नाये भुजंगमनायकः ऊवलय

गता गत मेव कस्मिददासि। किमपरे व
शमेभ्रमे परिवेभणे नददासि। क्षमता
मपरे कदापि तवे दशे नकरोमि। देहि
सेदरि दर्शने सम मन्मथेन उनोमि। वर्णि
ते जय देव केन हरेरिदे प्रवणेन। किंउ वि
ल्व समुद्र संभव रोहिनी रमणेन। ८। पा

गो व विरहे वनमाली । अ० । दहति शिशिव
गो मयूरेव रमण अनु करोति । पतति मदन
विशिवे विलपति विकल तरोति । २ । धन
ति मयूष समूहे अवण मयि ददाति । मन
सि बलित विरहे निशिरुज मुपयाति । ३ ।
वसति विपिन विताने त्यजति बलितथा

दलश्रेणी कंदे न सागरलघुतिः मलयज
रजोनेदं भस्म प्रिया रहिते मयि प्रहरन ह
र श्रोत्रा नेग कथा किमु यावसि । २४ रागि
नी ललित । नाल । वहति मलय समीरे
मदन मुप निधाय । स्फटति कसम निकरे
विरहि हृदय दलनाय । ॥ सखि सीदति त

गी नपन्नपि तवैवालाय मंत्रावली । भूयस्तत्क
गो चक्रेभ निर्भरपरी रेभासूते वोक्त्वति । १५ । वि
किरति मुद्गः स्नासा नाशाः पुरो मुद्गरी क्ष
ते । प्रवि शान्ति मुद्गः कुंजे गुंजन्मद्गर्व
द्रताम्यति । रचयति मुद्गः शय्यामर्या
कुले मुद्गरीक्षते । मदन कदन लान्तः

म । लुटति थराणि शयने बद्ध विलपति तव
नाम । ५ । भणति क विजय देवे विरहि विल
सितेन । मनसिरभस विभवे हरि रुदयत्त
सुकृतेन । ५ । पूर्वे यत्र समन्वया रति पते
रासा दिताः सिद्धये । तस्मिन्नेव निजंज मन
शमहा तीर्थे पुनर्मायवः । आयेत्वा मनिशं

गी कला कुलगलदम्बिह मुह्लासिते । भूवली
गी कमली कदर्शित भुजा मूलादे दृष्टनम ।
गोपी नानिभूत विरीक्ष गमिता कोक्षस्थि
रे चिन्तय । वृत्तमुग्य मनोद्गो हरत्तवः ह्ने
शत्रवः केशवः । ११ यमुना तीरवा नीर निर्के
जे मन्दमास्थितम् । प्राह प्रेम भरोद् भ्रान्त म्मा

कान्ते प्रियस्तव वर्तते । ॥ । तानिस्पर्श स
त्वानितेच तरला स्निग्धा दृशो विभ्रमा । स्त
दङ्कामुज सौरभेस्तव सथा स्पेदीगिरं वकि
मा । सार्विवा यरमा थरीति विषया संगेपि
चे न्मानसे । तस्यो लग्न समाधि हेतु विरह
व्याधिः कथम्वर्तते । ॥ । साकृत स्मितमा

गी
गो

कोमल मलयस मीरे । मथ कर निकर
करस्वित कोकिल कूजित कुंज कटीरे ।
॥ विहरति हरि रिह सरस वसन्ते नृत्यति
युवति जनेन समे सखि विरहि जनस्य उ
देते । अ० । उन्मद मदन मनोरथ पथिक
वध जन जनित विलापे । अलि कुल संकुल

थवे राधिका सखी । १५ । वसने वासनी ऊ
सम सज्जमावे रवयवै । अमनी कोनारे बरे
विहित क्लृप्तानु शरणाम् । अमेदे केदर्य न
रजनित चिन्ता कल नया । बलहाथो राधा
सरस मिद मूचे सहचरी । राग ॥ ललित ।
ताल । ललित लवंगलता परि शीलन

गी टल पटल कृतस्मर त्रणविलासे । ४ । विग
गो लित लेजित जगदव लोकन तरुण करु
ण कृतहोसे । विरहिनि केतन ऊँत मुखा
कृति केतकि देतरिताशे । ५ । माधविका
परिमलललितेनव मालतियात सुगंधौ ।
मुनि मनसा मपि मोहन कारणि तरुणा

गी
गो

एव च कवन्ती श्रीवास देवति केलि कथा समेत मेते
करोति जयदेव कविः प्रवेधम् । १ । यदि हरि सरणो स
से मनो यदि विलास कलास कुतहले । मथुरको
मल कोत पदावली शुण तदा जयदेव सरस्वती
। ३ । वाचः पल्लव यन्ममा पतिथरः सेदर्भ अहिनि
रो जानीते जयदेव पव शरणः श्लाघो उरुह डतेः शु

ॐ प्रथम गीत गोविंद माह रागिनी मधुमाधवी ताल
ॐ मेघैर्मे डर मस्वर वनधुवः श्यामास्तमाल डुमै
नक्तम्भीरु रये तमेव तदिमे राये गृहे प्रापय श्येने
द निदेश तस्य लि तयोः प्रत्यञ्जं डुमै राधा माध
वयो जयंति यमुना कलेरुहः केलयः ॥ वादेव
ता चरित विव्रित चित्त सया पयावती चरण चार

गो
गो

गारिऐ केशव धन कक्षप रूप जय जगदेशहरे । २ ।
वसति दशन शिवरे धरणी नवलया शशिनिक
ले ककलेवनि मया केशव धन शूकर रूप जय
जग देशहरे । ३ । तवकर कमल वरे नाव मडुत
भृंगे । दलित हिरण्य कशिपु तव भृंगे । केशव धन
नरहरि रूप जय जग दीशहरे । ४ । बलयसि वि

मारोत्तर सत्यमेव रचनै राचार्य मोवर्द्धन सखीको
पिनविश्रुतः श्रुतिधरो धोयी कविस्मा पतिः ४
रागिनी मधुमाधवी ताल । प्रलय पयोपिज
ले श्रुतवानसि वेदे विहित चरित्र मावेदे केशव
श्रुत मीन शरीर जयजग देश हरे । । द्विनि रतिवि
पुल नरेत्तव निष्टति दृष्टे थराणि थराणि किरण चक्र

श्री
गो

एणीये केशव धन रत्न पति रूप जय जगदीशहरे ।
वहसि तपसि विशादेवमने जलदामे हल हनि भी
ति मिलित यमुनामे केशव धन हलधर रूप जय
जगदीशहरे । ८ । निंदसि यत्त विधेरहह शक्ति जा
ते सदय हृदय दर्शित पशु चातम केशव धन
बुद्ध शरीर जय जगदीशहरे ॥ ५ ॥

कमलो बलि मद्भुत वामन पदनाथ नीर जनित
न पावन केशव भुक्त वामन रूप जय जगदीश
ह्ये ॥ ५ ॥ क्षत्रिय रुधिर मये जग दप गत पापे
सुपयसि शमित भव नापे केशव भुक्त भयप।
ति रूप जय जगदीश ह्ये ॥ ६ ॥ वितरसि दिक्षु
णे दिग्पति कमनीये दशमुख मौलि बलि रम

मी
गो

यते बलि कलयते क्षत्रिये ऊर्वते पौलस्त्ये जय
ते हले कलयते कारुण्य मातन्वते श्रेष्ठान्मूर्ख
यतेदशा कृति कृते कृष्णाय नमो नमः ५ रागि
नी मथमाथवी ताल । श्रित कमला ऊच मेर
ल शत ऊरल कलित ललित वनमाल जय जय
देव हरे ।। अ० । दिनमणि मेरल भव त्वे ।

स्नेह निवह निधने कलयसि करवाले ध्यकेत
मिव किमपि काले केशव ध्यत कल्कि शरीर
जय जगदीशहरे । १० । श्री जय देव कवेरिदसु
दित सुदारं मृण सावदे अभदे भवसारं केशव
ध्यत दश विद रूप जय जगदीश हरे । ११ । वेदा
ब्रह्मते जगन्निवहते भूगोल मुद्दिभते दैत्यं दार

गी १५। जनक सत्ता कृत भूषण जित हृषण समर शमि
मो न दशकेत जय जय देव हरे । ६। अभिनव जलधर सेद
र धन मेदिर श्री सुख चंद्र चकोर जय जय देव हरे
। ७। श्री जयदेव कवेरिदे ऊरुते सुदे मंगल मुज्जल
गीते जय जय देव हरे । ८। रामोत्तम भरेण विश्व
म मृता माभीरवाम क्रवा मभारो परिरभ्य निर्भर सरः

इतुन मुनि जन मानस हेस जय जय देव हरे । २ ।
कालिय विषथर गंजन जन रंजन यउ कुल क
मल दिनेश जय जय देव हरे । ३ । मधु सुर नरक
विनाशन गरुडा सन सर कुल केलि निदान ज
य जय देव हरे । ४ । अमल कमल दल लोचन भव
मोचन विभुवन भवन निधान जय जय देव हरे

गी मल कोमलै रूपनयनै रनेगोत्सवे लखन्देवन
गो सेदरी भिरभित्तः प्रसेग मालिगित्तः शृंगारः सवि।
मूर्ति मानिव मयौ मुग्धो हरिः कीरति । ॥ । निगो
ल्लेग वसहुगंग कवल ल्लेगारि वेशाचले प्रालेय
प्रवने कषात्र सरति श्रीवेरशैला निलः किंचित्ति
ग्यरसालमौलि मुकुला नालोक्य हर्षोदयाउत्सीलेति

प्रेमोपया गयया साधनद्वने सधामय मिति आह
न गीतस्तति व्याजाउद्दट चुंविनस्मित मनो हारी
हारीः पानवः । १५ । अनेक नारी पारिरेम संश्रम स्वर
नमो हारी विलास लालसे सुगारि मारा उपद
शं यत्तसौ साखी समक्षे पुनराह गयिका । १६ वि
सेषामनरेजनेन जनयना नेद मिंदीवर अणी रणा

गी. गो. गोप वधूश्च गायति काचिउदे चित्त पेचमरागे । २ ।
कपि विलास विलोल विलोचन विलन जनितम
नोजे धायतिशुभ्य वधू शयिके मधसूदन वदन स
रोजम् । ३ । कापि कपोल तले मिलिताल पि
नेकि मपि श्रुति मूले चारु चुंचेवनि तेववन्ती ।
दयिते पुलकै रचकले ॥ ४ ॥ केलि ।

ऊहः ऊहरिति कलोत्तानाः पिकानो गिरः । १९ ।

गगिनी मधुमाधवीताल । चंदन चर्चित नील

कलेवर पीतवसन वनमाली केलि चलन्मणि ऊं

इल मेरित्त गोट युग स्मित शाली ॥ हरि रिह सु

ग्य वध निकरे विलासिनि विलसनि केलि घरे ॥ १॥

अ । पीन पयो धर भार भरेण हरि परि रभ्य सरगो

गी
गी

ति सस्मित चारु परा मपरा मनु गच्छति वामा
म ॥ ७ ॥ श्री जय देव भणित मिद मञ्जुत के
शव केलि रहस्यम् । हंदावन विधिने चरिते वि
तनोत सुभानि यशस्यम् ॥ १८ ॥ विहरति
वनेशया साधारण प्रणये द्वौ विगलित ।
विजोत्कर्षा दीर्घा वशेन गतान्यतः ।

कला कुत केनच काचिदसं यमुना जल कले
मेजल वेजल कुंज गते विच कर्ष करेण उरु
ले ॥ ५ ॥ करतल ताल तरल वलया बलि क
लित कल खन वेशे । रास रसे सह नृत्य परा
हरिणा युवती प्रशशंसे । ६ । श्रियाति कामपि
वेवति कामपि रमयति कामपि रामोपश्य

गो न्न कुंजे निषसाद मायवः ॥ ९ ॥ रागिनी मथ
गो मायवी नाल ॥ मामिये चलित्ता विलोक्य
हृत्ते वथु निचयेन सा पयाथ तया मयान नि
वारित्ता ति भयेन । । ह्रि ह्रि ह्रि ह्रि द्य
तया गता सा कुपितेन ॥ ३० ॥ किं करि ।
ष्यति किंवदिष्यति सा चिरं विरहेण किं ।

कवि रवि लता केजे गुं जन्म भुवन में उली सुख
र शिवरे लीना दीना पुवाच रहः सखी । १० ।
केसारी रवि संसार वासना बंध सखिलो राधा मा
याय हृदये नत्ताज व्रज संधीः ॥ ११ ॥ इतस्तत्त
स्तु मनु सत्य राधिका मानेग वाण व्रज विन
मानसः कृताव तापः सकलिनन्दनी नदा

गी
गो

तन्त्रवेद्यि कुतो गता सि न तेन तेनुनुयामि ।

५ । दृश्यसे पुरतो गता गत मेव किञ्चिदसि

सि किमुरे वश सेशमे परिरंभाणे नददासि

क्षम्यता मयरे कदापि तवे दृशे न करोमि

देहि सन्दरि दर्शने मम मन्मथेन उनोमि व

र्णिते जय देव केन हरेरिदे प्रवणोन किञ्चि वि

धनेन जनेन किं मम किं सखिन गृहेण । २ ।
चिन्तयामि नदानेन कृदिल अकोप भरेण शोण
पद्म मित्रो परि अमता कुले अमणोन ३ । तामहे
हृदि सेयता मनिशं भूशे रमया मि किंवनेनु
साय मितामिह किं वृथा विलयामि । ४ । त
निखिन्न मसूयया हृदयेतवा कल यामि ।

गी
गो

मनायकः ऊवलय दल श्रेणी कंदेन सा गर
ल युतिः मलयज रजो नेदे भस्म प्रिया रहिते
मयि प्रहरन हर ओन्मा नेग कुथा किमु थाव
सि ॥ १४ ॥ रागिनी मधुमाधवी नाल वह।
ति मलय समीरे मदन मुष निधाय स्फटति
ऊसम निकरे विरहि हृदय दलनाय ॥ १ ॥

ल्व ससुत्र संभव रोहिनी समो न । ८ । पाणौ मा
कुरु चत सायक मयं मा चाप मागे पय क्रीडा ।
निर्जित विष मूर्च्छित जना चातेन किं पौरुषे न
स्वापव मग्नी दृशो मनसिज प्रेक्षकदात्ता अग
श्रेणी नर्जरिते मना गपि मनो नायापि संयत्त
ते ॥ १२ ॥ हृदिविला शता हारो नाये अजंग

मी यरणि शयने वद्ध विलपति तव नाम । ५ । भ
गो णति क विजय देवे विरहि विलसितेन मनसि
रभस विभवे हरि रुदयत सकुतेन । ५ । एवं
यत्र समन्तया रति पते रासा दिनाः सिद्ध
ये तस्मिन्नेव निज्जेत मन्मथ महा तीर्थे पुनर्मा
यवः आयेत्वा मनिशं जयन्तपि तवैवात्मा

स्रीति स्रीदति नव विरहे वनमाली ॥ ५० ॥ दह
ति शिशिर मयूरेव रमण अनु करोति पतति मद
न विशिखे विलपति विकल नरोति ॥ २ ॥ धन
ति मथप समूहे अवगा मपि ददाति मनसि व
लित विरहे निशिरुज सुप याति ॥ ३ ॥ वसति
विपिन वित्ताने मजति बलित थाम लुदति ।

गी च तरला स्त्रिया दृशो विश्रमा स्तदक्रामुन सौर
गो भेसव स्या सेदीमिगे वक्रिमा सा विवा यर माथ
धुरीति विषया संगेपिचेन्मानसे तस्योलय समा
यि हेत विरह व्याधिः कथम्वर्तते ।। साकृतस्मि
तमाकुला कुल गलदम्मिल मुलासिते भुवली
कमली कदर्शित भुजा मुलादे दृष्टस्तनम् गोपी

प मेञ्जा वली भूयस्तत्कच ऊंभ निर्भरपरी रेभाम्
ते वोक्षति । १५ विकिरति मद्ः चासा नाशाः
पुरो मद्दरी क्षते प्रवि शानि मुद्ः कुंजे गुंजे गुंज
त्तद्दर्वदत्ताम्यति । रचयति मुद्ः शय्याम्यया ।
ऊले मुद्दरीक्षते मदन कदन क्लान्तः कान्ते पि
यस्तव वर्तते ॥ १॥ तानिस्पर्श सत्वानि ते

गो
गो

कंदर्प ज्वर जनित चिन्ता कुल तथा बलदायो रा
था सरस सिंद मूवे सहचरी रागिनी मथमाथवीता
न ॥ ललित लवेगलता परि शीलन कोम
ल मलयस मीरे ॥ मथ कर निकर करस्वित
कोकिल कूजित केज कटीरे । ॥ विहरति
हरि विह सरस वसन्ते नृत्य ॥

नानिभूत निरीक्ष्य गमिता कोत्तस्त्रिं चिन्तय च
नर्भुग्य मनो ह्यो ह्यन्तवः केशवः केशवः
२॥ यमुना तीरवा नीर निजंते मन्दमास्थितम्
प्रादु प्रेम भरोद् आनन्त मायवे राधिका सखी ॥
वसन्ते वासन्ती कसम सज्जमायै ख यवै भ्रमन्ती
कोत्तरे वद्ध विहित कल्याण शरणम् अमेदे

गो
गो

जाले । मदन महीपति कनक देउ रुचिके सर
ऊसम विकासे । मिलत शिली अख पादल प
दल कनसर तया विलासे । ५ । विगलित लैजि
न जगदव लोकन तरुण करुण कनसासे वि
रहिनि कंतन ऊत अवाकति केतकि देतवि
तासे । ५ । माथविका परिमलललितेनव ।

नि युवनि जनेन समं सखि विरहि जनस्य उरंते
क्र० ॥ उत्सद मदन मनोरथ पथिक वधु जन ज
नित विलापे । अलि कुल संकुल कुसुम समूह नि
रा कुल वकुल कलापे ॥ १॥ मृग मदसौरभ रम
स वशंवद नव दल माल तमाले युवजन रुद।
य विदारण मनसिज नाव रुचि किंशुक ।

गी
गो

नु गत मदन विकारे । ८ । द्य विदलित मल्ली व
लि चंचलराग प्रकटित पट वासै वीसयन्कान ।
नानि । इह हि दहति चेतः केतकी गेयवेधुः प्रस
र दसम वाण प्राण वझेयवाहः । ११ । उन्मीलनमथ
गेयलव्य मथय व्याधूनचनोऊर कीउत्कोकिलका
कली कल कलै रुझीणी काण जराः नी ।

मालति यात संगेथौ । मुनि मनसा मपि मोहन
कारणि तरुणा कारणा वंथौ । ६ । स्फुरदति मुक्त
लता परिरेभणा मुकुलित पुलकित हूते हेदाव
न विपिने परि सर परि गत यमुना जल हूते ।
श्री जय देव भणिते मिद मुदयति हरि चरण ।
सृति सारे । सरस वसेत समय वर्णन म ।

गी
गी
यति । ३३ । समीची मधुमाधवी ताल ॥ निंद
ति चेदन मित्र करण मनुविदति विद मधीरेया
ल निलय मिलनेन गरल मिव कलयति मलय
समीरे । ॥ साथव सा विरहे तवदीना मनसि ।
न विशिखभयादिव भावनया तयिलीना ।
५० । अविशतनि यतिन मदन श ।

येते पथिकैः कथेकथ मपि ध्याना वधान क्षण
प्राप्त प्राण समा समा गम रसोलासै रमी वास
यः । २१ । उर लोक स्लोक स्तव कन वकाशोक
लतिका विकाशः का सारे पवन पवनोये व
ययति अपिआम्पद्देगी वणित रमणीयान मुक्त
ल प्रसूति श्रुतानो सति शिवरिणीये सख

गी ८ विधुत्तद देन दत्तन गलिता मन्त्रधारे । ५ । वि
गो लिगित्वन रदसि ऊरेगम देन भवेत्तम सम शर ।
भूते प्राण मति मकर मथो विनि थाय करेच श
रे नव हूते । ५ । प्रति पर सिद मयि निग दति
माथव नव चरणो पतिताहे । त्रयि विमुखे मयि
स यदि सथा निधि रयि ऊरुते तत्रदाहम् ६

रादिव भवदव नाय विशाले । स्वरुदय मर्मणि
वर्म करोति सजल नलिनी दल जाले । १ । ऊ
ऊम विशिख शरतल्य मनल्य विलास कलाक
सनीये । वत मिव तव परि रेभ सखाय करोति
ऊसम शयनीये । ३ । वहतिव गलित विलोच
न जलथर मानन कमल मुदारे विथ मिव विक

गी
गो

दावदहन जाला कलापायने । सापिनदिरहेण
हेत हविणी रूपायने हाकथे केदयोपि यमायने
विरचयन् शार्हल विकीरितो । १५ । रागिनी मधु
माथवी ताल ॥ स्तन विनि हित मपि हार सु
दारे सा मजने कृपा ननु विव भारे राधिका विरहे
नव केशव । अ० । शर सम स्रण मपि मल

५॥ श्री जय देव भणित सिद्ध मथिके यदि मनसा
नटनीये । हरि विरहा ऊल बलव युवति सखी
वचने पटनीये । ८ । आवासो विपिनायने प्रिय
सखी मालापि जालायने । नाथोपि ससितेन

गी कल्पे ५ तजति न पाणि तलेन कपोले । बाल
गो शिशान मिव साय मलोले । ६ । ह्रीरिति ह्रीरि वि
ति जयति सकामम् । विरह विहित मरणे वनि
कामम् ७ श्रीजय देव भणित मिति गीतम् ।
सखयत्त केशव पद मुपनीतम् । ८ । स्मरान्तरा
दैवत वैद्य ह्य नदेग सेगा सन्त मात्र साध्याम्

यज पेके पश्यति विष मिव वपुषि सशोकम्
। २। असित पवन मनुष्य परिणामे । सदन द
हन मिव दहति सदाहम् । ३। दिशि दिशि किर
ति सजल कण जालम् । नयन नलिन मि
व विगलितनाले । ४। नयन विषय मपि कि
शलयन्त्यम् । कलयति विदित इनाशन

मी.
गो.

ज्वर सेजरा तरतनो राश्रय मस्याश्चिरम् चेत्तस्ये
दन चेदमः कमलिनी चिन्तास संताप्यति किन्त
क्षोति रसेन शीतलतरम् त्वामेक मेव प्रियम्
ध्यायेत्ती रदसिस्थिता कथं मयि क्षीणा क्षणं
प्राप्ति । २० । क्षणमपि विरहः पुरानसेहे
नयन निमीलित विन्तया नयान्ते ससि ।

विमुक्त बाधोऽकुरुषेन तथा सुपेन्द्रवत्तु दधि दा
हणोसि । १५ । सादोमो चति सीत्करोति विल
पसक्तम्यते ताम्पति ध्यायत्तदभ्रमति प्रमील
ति पतस्यति मूर्च्छयति पतावत्य तनुजरेव
रतनुजीवेन्न किनोरसान् स्वैय प्रतिम प्रसी
दसि ततस्त्यक्तो नथा हस्तकः ॥ १६ ॥ केदर्य

गी
गो

गोत्र मशक्तो चिर मनु रक्तो लज्जा गृहे दृष्टा न
चरिते गोविंदे मनसिज्ज मेदे सखीश्रद्धा । ३० ।

श्रेणेषा भरणं करोति वदशः पत्रेषु संचारिणि
शप्रेत्ताम्यरिशं कते वित्तनुते शय्यो चिरं ध्या
यति । श्या कल्प विकल्प तल्य रचना संकल्प
लीलाशत व्याशक्तापि विना त्वया वर न ।

नि कथमसौ रसाल शाखांचिर विहरेण विलो
क्य प्रथितासौ । १८ । राधा मुग्ध मुत्तार विदम
थय सैलोक्य मौल्यली । नेपथ्यो चित्त नीर
त्न मवनी भाववत्तारोत्तकः । स्वच्छेद व्रजसे
दरी जन मन स्तोक प्रदोषश्चिरम् केस धंसन ध
मकेत खत त्वादेवकी नेदनः ॥ १९ प्रथिता

गी
गो

अरमधनि पिवेनम् । १ । नाथ हरे सीदति राधा
वासगृहे । २ । त्वदभि शरण रमसेन वलेनी
पतति पदानि कियेति चलेनी । ३ । विहित ।
विशद विष किशलय वलया । जीवति परमिह
नव रति कलया । ४ । सुश्रव लोकित मेडनली
लामथीष रदमिति भवन शीला । ५ । त्वरि

नु नैषा निशोने घाति । ३१ । विपुल पुल क
पालिः स्फीतसीत कार मेतर्जनि तजिडिम ।
का कर्वाकले याहरेती । तव कि तव विथाया
मेरुकेदप चिन्ता रस जल निधि मया ध्यान लया
मगादी । ३२ । गगिनीमधुमाधवी ताल ॥
पश्यति दिशि दिशि रहसि भवेतम तद थर म

गी
गो

किं विष्णुस्यसि क्लृप्तभोगि भवने भोरीर भूमी
रुद्रे । आनर्यासिन इष्टि गोचर मितः सानन्दने
दास्यदम् । राधाया वचनन्तद धग भुवाल्लेहो
ति के गोपतो गोविंदस्य जयेति सायम तिथि :
प्राशस्त्य गर्भा गिरः ॥ ३ ॥ अजोतरे च कलरा
कुल वर्त्म पान्त सेजान्त पान्तक इव स्फ ।

न सुपैति न कथं मभि सारं । हवि रिति वदन्ति स
त्वी मनुवारे । ५ । श्लिष्यति चेंवति जलथर कल्पे ।
हवि रूप गत इति तिमिर मनल्ये । ६ । भवन्ति
विलेविति विगलित लज्जा विलपति रोदन्ति
वासक सज्जा । ७ । श्री जयदेव कवेरिद मुदि
ते । रसिक जनेतनु नामपि मुदिनम् ॥ ८ ॥

गी.
गो.

जनोति मनोः भुवः सहृदये हृदये मदन व्यथा
म. ३६। मनो भवा नंदन चंदनानि प्रसीदते दक्षि
ण भुव वामनाम् ॥ क्षणे जगत् प्राण विधा
य मायवे पुरोमम प्राण हरो भविष्यसि ॥
३० ॥ वायो विधेहि मलया निल पंच वा
ण प्राणान् गृहाण नगदह सुनरा ।

दलो लून श्रीः । हंदावनो तर मदीपय देशजा
लैदिक सेंदरी वदन चेदन विंड रिंडः ॥ ३५ ॥ ३
सरति शशथर बिंबे विहित विलेवेच माथवे
विथरा विरचित विविध विलापेसा परितापम
वकारोच्चैः ॥ ३५ ॥ विरह पोंडु सुगारि सुखो व
न युति रयेति रये नपि वेदनाम् विथरतीव ।

गी० नाय निशि गमन मपि शीलिते । तेन मम ह
गो० दय मिद मसम शर कीलिते । २ । मम मरण मे
व वरमति वितथ केतना कि मिह विस हामि
विरहानल मचेतना । ३ । मा मरह विथ रय
ति मथुर मथ यामिनी ॥ कापि हरि मनु भ
वति कृत सकत कामिनी । ४ । अरह ।

अपिषे । किंते कृत्तान्त भगिनि क्षमया तरेगै
रेगानि सिंच मम शाम्यत देहदाहः ॥ २८ ॥ रा
गिनी मथुमाथवी ताल ॥ कश्चित्त समयेपि
हरे रहहन ययौ वने मम विफल मिद मम
ल रूप मपि यौवने ॥॥ यामि हेक मिद शर
णो सावी जन वचन वंचिता । अ० । यदत्र गम

गी० देव कवि भारती । वसन्त रुदि युवति रिव को
गो० मल कलावती । ८ । त्वामप्राप्य मयि स्वयंवर
प रो लीरो दत्ती रोदरे शेके सेदरि काल कूट म
पिवन् मूढो मृशनी पतिः श्ये पूर्व कथाभि
रम मनसो विक्षिप्य वक्षो चले राथाया स्तन
कोरको परि मिलनेत्रो हरिः पात्रवः ३५ ।

कलयामि बलयादि मणि भूषणे । हरी विरह
दहन वहनेन बहुभूषणे । ५ । कुसुम सज्जमार
तनु मन्तनु शर लीलया । स्वर्गापि हृदि हेतिमा
मन्ति विषम शीलया ॥ ६ ॥ अह मिह निवसा
मि न गणित वन वेतसा । स्मरन्ति मथुसूदनो
मा मयिन चेतसा । ७ । हरि चरण शरण जय

गी
गो

को विशेष माना समिते कयापि जनार्दने दृष्टव
दे तदाह । ५॥ रागिनी मधुमाधवीताल । स्वर
समरोचित विश्रुति वेषा गलित कुसुम दरवि
ल्ल लित केशा । ॥ कापि मधुरिषुणा विलसति
युवति श्रियेक गुणा । ३० । हरि परि रंभणा वलि
त विकारा कुच कलशो परि तरलित द्वारा २

तत् किं कामपि कामिनी मभिरुजः किंवाक।
लाकेलिभिर्वहो बंधुभिरेथ कारिणि वनाभ्यर्णे
किमुदआम्यति कोतः क्रांत मना मना गपि
पथि प्रस्थातमे वात्सल्यः संकेतो कृत मेज वं
जललता ऊंजेपि यनागतः । ४० ॥ अथा गता
माथव मेतरेण सावी मिये वीक्ष्य विषाद मू

गी गो १६। अमजल कण भर समग शरीरा । परि
गो पति तोरसि रति राण थीरा । १७। श्री जय देव भ
णित हरि रसितम । कलि कलषे जनयन्त परि
शमितम । १८। रागिनी मथमाथवी ताल ॥
समुदित मदने रमणी वदने चेंवन चलित्ता थरे
मग मद निलके लावति सुपुलके मृग मिवर

विचल दलक ललिता ननचंद्र । नद थर पान
रभस कृत नेश । ३ । चेचल कुंडल ललितकणो
ला । सुवर्णित रशान जवन गति लोला ॥ ४ ॥
दयति विलोकित लज्जित हसिता । वद्धविध
कृजित रति रस रसिता । ५ । विपुल पुलक ए
षुवे पशुभंगा । ससित निमीलित विकसदने

गी
गो

भूषिते । ३ । जित विस शकले मृदुभुज युगले
करतल नलिनी दले । मरकत बलये मधुक
र निचये चितरति हिम शीतले । ४ । रति गृह
जचने विपला पचने मनसिज कनकासने म
णिमय रशने तोरण हसने विकरति कृतवा
सने । ५ । चरण विसलये कमला निलये न

जनी करे । ॥ रमते यमुना शलिनवने विजय
सुगारि रथना । ३० । चनचय रुचिरे रचयति चिक
रे तरलित तरुणानने ऊरुवक कसमं चापला
हृदयमे रति पतिमृग कानने । २ । चटयति स
चने ऊच युग गगने मृगमद रुचि रूषिते । म
णि सर ममलम तारक पटलम नखपद शिश

गी नृप जय देवके । ८ । रागिनी मधुमाधवी जल
गो अनिल तरल कुवलय नयनेन तपतिनसा कि
मलय शयनेन ।।। सखिया रमिता वनमा
लिना । ५० । विकसित सरसि जल लित सु
खेन । स्फुटतिन सा मनसिज विशिखेन २
अमृत मधुर तर मृदु वचनेन ज्वलित न ।

त्वमणि गण सज्जिते । वहिरप वरणे यावक भ
रणे जनयति हृदियोजिते । ९ । रमयति सभ
शे कामपि सृष्टे त्वल हलथर सोदरे किमफल
वमसेचिर मिह विरसे वद सखि विटपो दरे । १०
इह रस भणने कृतहरि गणने मथुरिषु पदसेव
के । कलिषुग चरिते नव सत उरितम् कवि

गी
गो रुज मति करुणोन । १० । श्री जयदेवभाणिन व
चनेन । प्रविशन्त ह्री रयि हृदय मनेन । ८ । ११ ।
नाथातः सखि निर्हयो यदि शट स्तवहृति ।
किं ह्यसे । स्वच्छेद स्वद्रवत्वमः सरमते किं
तत्र ते ह्यसौ । पश्याय प्रिय सेगमाय दयित
स्या कृष्ण माणे गुणै रुक्तेदार्ति भया ।

सा मलयज पवनेन । ३ । स्थल जल रुद्र रुचि
कर चरणेन । लक्ष्मि नम्रा हिमकर किरणेन
४ । सजल जलद सशुद्ध रुचिरेण । दहनिन
सा हृदि विरह भरेण । ५ । कनक निकष रुचि
शुचि वसनेन । ससिनिन सा परिजन हसिनेन
। ६ । सकल भुवन जनवर तरुणेन वहनिन सा

गी
गो

ॐ । प्रथम समा गम लज्जितया पट्ट चाटु
शतै रज कले । मृड मधुरस्मित भाषितया
शिथिली कृत जवन उकले । २ । किसलय
शयन निवे शितया चिर मुरसि ममै वशया
ने कृतपरि रेभणा चेवनया परिरम्प कृताथर
पाने । ३ । अलस निमीलित लोचनया पुलकाव

दिव स्फुट दिदेचेतः स्वये यास्याति । ४२ रागि
नी मथुमाथवीनाल । निभृत निकुंज गृहे
गजया निशि रहसि निलीय वसेते चकिन वि
लोकित सकल दिशारति रभस वशेन हसेते
। १ । सखि हे केशि मदन सुदारम् । रमय मया
सह मदन मनोरथ भावितया सविकारे ।

गो कच ग्रह चैवन दाने । ५ । रति सख समय रसा
गो लसया दर मुकुलित वदन सरोजं निरुद्ध निष
तित तनुलतया मधुसूदन मुदित मनोजे ० श्री
जयदेव भणित सिद्धमति शाय मधु विषु निधुवन
शीले । सख मुक्तं दित राधिकया कथित वित नोत्त
सलीले ८ दृष्टि व्याकुल गोकुला वनवशा दुह्यगो

लि ललित कपोले । अमजल शकल कलेव
र यावर मदन मदादिति लोले । कोकिल कल
रव कूजितयाजित मनसिज तेव विचारे अथ
ऊसमाऊल ऊतलया नरव लिखित वनस्तन
भारे । ५ । चरत रणित मणिनू पुरया परि शूरि
त सरत विताने । सुखर विश्वेवल मेखलया स

गी० ये । ४४ रागिनी मधुमाथवीताल । रजनित
गी० नित गुरु जागर राग कषायित मलसनिमेषेव
हन्ति नयन मनु राग मिवस्फुट मुदित रसाभिनि
वेशे । । । याहि माथव याहि केशव मावदकैत
व वादे ता मनु सर सरसीरुह लोचन या नवह
रति विषादम् । अ० । कञ्जल मलिन ।

वर्द्धने विश्रद्धलव सेदरीभि रथिका नेदाचिरेचे
वित्तः दर्पेणैव तदपिना धरतटी सिंह मुद्रो
कितो वाङ्मो यतनो स्तनो तमभवतः श्रेयोसि
कंसहिषः ५३ अथ कथमपि यामिनीं विनी
यस्मर शर जर्जरितापि सा प्रभाते । अननय वच
तम्ब देत मये प्राणत मपि प्रिय माह साभ्यस्त

गी. यत्नीव वहि मेदन दुम नव किसलय परि वारे
गो. । ५ । दशन पदेभ दथर गत सम जनयति चे
नसि विदे । कथयति कथ मथ नापि मया सह
नव वपुरेत दमेदे । ५ । वहि रिवमलिन तरेत
व क्लृप्त मनोपि भविष्यति नूनम् कथ मथ ।
वेचयसे जनु मनु गतम् सम शरज ।

विलोचन चेतन विरचित नीलिम रूपे । दशन
वसन मरुणो नव ह्रस्व तनोति तनो रत्नरूपे
२ वष रत्न हरति तवस्मर संगर विरन विरत्न
त रेवे । मरकत शकल कलित कल धौत ।
लि पेरिव रतिजय लेखे ३ चरण कमल गल
दलक्त क सिक्त मिदंतव हृदय मुदारे । दर्श

गी
मो

पादालक्त कुरित मरुणा योनि हृदये समाय प्र
ख्यात प्राणाय भर भंगेन किञ्चन त्वदा लोकः ।

शोका दपि किमपि लज्जो जनयति । ४५ । पद्मा
प्रयो यर तदी परि रेभ लग्न काश्मीर मुदित मुरोम
धु सुदनस्य । व्यक्ताचुराग मिव विलद नंगा विदसे
दोबुधर मनु शूर यत्त प्रियेवः । ४६ । अज्ञाने मरुणा

चर हनम् ६ अमन्ति भवानवला कवलाय व
नेषु किमत्र विचित्रे । प्रशयन्ति एतनिकै ववध
वध निर्दय बाल चरित्रे ७ श्रीजय देव भणितर
ति वेचिन्त विरित्त युवन्ति विलापे । शृणुसदा
मधुरं विबुधा विबुधालय नोपि उदाये ८ । १५
तवेदे पश्यन्ताः प्रसर दनुरागस्वहिरिव प्रिया

गी० गो० रेमे विधेहि विधेयताम् । ४८ । सुग्ये विधेहि म
यि निर्दय दत्त देश दोर्वलि बंध निविडस्तन ।
पीडनानि चेडित्त मेव सुदमेचय पंचवाण चे
शल कोउ दलनादसवः प्रयोत्त । ४९ व्याय
यतिवृष्ठा मोने तन्निप्र पंचय पंचमेत रुणि मथुला
पेस्तापे विनोदय दृष्टिभिः सुसुति विमुक्तीभावताव

शेषवशा ममी मनिः श्याम निस्सह सुखी सम
खी सुपेय सञ्जीव मीदित साखी वदनं दिनाते
मानंद गङ्गद पदे हरि दित्यवाच ५० परि हर कृता
तेके शोकान्तया सतते चनस्तन जवनयाका
नो स्वान्ते परानव काशानि विशानि वितनोर
मो यन्यो नकोपिसमांतरे प्राणयिनि परीरेभा

गी नानलोदहति सम मान संदेदि मुख कमल मथया
गो ने ॐ । सत्यमेवासि यदि सुदति मयि कोपिनी
दहि खर नयन शरचाते । वटय भुज बेधने जन
यरदावेउने येनवा भवति सखजाते २ तमसिम
मथुषणे तमसिममजीवने तमसिममभव जलधि
रत्नमभवत भवतीहमपि सतत मनुगोपिनी तत्र

दिशेचन भुवमो स्वय मतिशय स्त्रिग्य भुग्ये
प्रियोय भुयस्थितः ५० रागिनी मधुमाधवी ता
ल वदसि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमुदी हर
ति दशति मिर मति चोरे । स्फुर दथर सीधवे न
व वदन चेदमा रोचयति लोचन चकोरे । प्रिये
चारुशीले भुवमपि मानमनिदाने । सयदि मद

गी० कमल गोजन म्भ म हृदय रेजने जजित शक्तिरे
गो० गयरभागे । भणा महण वाणि कर वाणि चर
ण हये सरसलसद लक्तक रागे । ६ । स्मर गर
ल विउने मम शिरसि मेउने देहि पर पलवसु
दारे । जलिति मयि दारुणे मदन कदना नलो हर
न तउपाहित विकारे ॥ इति चहुलवाहुवारु मुरवैरिणे

मम हृदय मति यत्ने र नीलनलि नाभ मपि त
नितव लोचने थार यति कोक नद रूपे । ऊस
म शरवाणा भावेन यदि रेजयसि कस मिदमेत
दत्ररूपे ५ स्फुरत् ऊच ऊभयो रूपरि मणि मेज
री रेजयत् तव हृदय देशे । रसत् रसनापि तवच
न जवन मेउले घोषयत् मन्मथ निदेशे ५ स्थल

गो.
गो.

विसेस पुष्पा युयः ५। दृशौ तव मदाल सेवदन मित्र
सेदीपने गति जेन मनो रमा विजित रंभ मुरुदये
रति सतव कलावती रुचिर चित्र लेखि अवा वहे
विबुध यौवनं वहसि तन्नि दृष्टी गता ५। अपल वेधन
रणो गत रे गितानि वाण गुणः अवण पालि रिति स
रेण तस्या मनेग जय जेग मदेवताया मस्त्राणि निजित

राधिका मयि वचन जाते । जयति पद्मावती र
मण जय देव कवि भारती भणित मति शाते ८
१९ बंधक युति बोधवो यमधरः स्त्रिया मयक
द्वविः गेते चेष्टिच कास्ति नील नलिन श्री मो
चने लोचने नासानेति निल प्रसून पदवी ऊं
दाभ देति प्रिये प्रायस्सन्नातु सेवया विजयते

गी
गो

उवेण ससुद्धतः श्रीमद्गोपालकथनिः ५५ तामथ
मन्मथविन्नो रतिरस भिन्नो विषाद सम्पन्नो । अत्रुचि
तित हरि चरितो कलहान्नरिता सुवाच रहः सर्वो
५६ । स्त्रिये यत्परुषा सि यत्पणमति स्तथासि
यद्वा गिणि देशस्था सि यदन्नावि विशावन्नो या
तासि तस्मिन् प्रिये । तद्युक्ते विपरीत कारिणि

जगोति किमर्थितानि । ५३ । भूवापे निहतः क
दत्त विशिखो निर्मातु मर्म व्यथो श्यामात्मा ऊ
दितः करोतु कवरी भारोपि भारोद्यमे । मोहेनाव
द येव तन्नि तनुता त्विवाथरो रागवान् सहनः
स्तन मंडलस्तव कथे प्राणै मर्म क्रीडति ५४ ।
मानिनी मान विद्ये सदत्तो जयति सोप्रते म

गी ऊरुषे ऊच कलशे । १ । कतिन कथित मिद मत्र
गो षद सचिरे । मायारि हर हरि सति शय रुचिरे
किमिति विषीदसि रो दिषि विकला । विहसति
युवति सभा तव विकला । ४ । जनयसि मन ।
सि किमिति गुरु विदम् ॥ शृणु मम वचन
मनी हित मेदम् । ५ । हरि रूपयात्र वद

नव श्री खेड चर्चा विषे शीतो सुलयनो हिमेदुनः
वहः क्रीडा मुदो यातनः ५० ॥ रागिनी मथुमाय ।
वी ताल ॥ हरि रभि सरति वहति मृड पवने
किम पर मथिक सखे सखि भवने ॥ १ ॥ मा
यवी माऊरु मानिति मानमये । अ० । ताल
फला दपि गुरु मति सरसे । किमु विफली ।

गी मा निलो विष मिव स्यादशिम यस्मिन् उनोति म
गो नो गते । हृदय मदये तस्मिन् नेव पुनर्वलनेव ।
लान् कुबलय दृशा स्वामः कामो निकाम निरे
कृशः । ५८ । गणायति गुणग्रामे आमे अमा द
पिनेहने वहति च परि तोषे दोषे विमुंचति ह्य
तः युवतिषु वलरक्षो कृक्षो विहारिणि मो

नवम् मथुरे । किमिति करोषि हृदय मति वि
थुरे । ६ । सजल नलिन दल शीतल शयने
हरि मव लोकय सफल्य नयने । ७ । श्री ज
य देव भाणिन मति सलिते । सख यत्त रसि
क जने हरि चिरिते । ८ । १० । श्रीरायिकाजी
के वचन रिषरिव सखी सखा सोयं सखी वहि

गी रुचि मन नयेन प्रीणयित्वा मृगाक्षी गतवन्ति क
गो तवेषे केशवे ऊजशयो रचित रुचिर भूषो दृष्टि
गोषे प्रदोषे स्फुरति निरवसादो कापि राधोज
गा ॥ ६॥ सा मा दक्षति वक्षति प्रिय कथो य
तंग मा लिंगनैः प्रीतिं यास्यति रस्यते सखि
समा गतेति चित्ता कलाः । सत्तो पश्यति वेपते

विना पुनरपि मनो वामे कामे करोति करोमि
किं ५५ श्रीतिवस्तुत्तु तो हरिः ऊवलय पीडेन
साधे रणे । राधा पीन पयोधर स्मरण कृत
कंभेन संभेदवान् । यत्र स्थिति मीलति त
ए मथ दिप्रे द्विपे तत्त्वणान् । के सस्यालम
भूजित मिति व्या मोह कोलाहलः । ५० । स

गी. रम्योभि सारक्षणाः ६३ आश्लेषा दनु चंचना दनुनलो
गी. लेवा दनु स्वान्तज प्रोदोथा दनु से अमा दनु रता रं
भा दनु प्रीतयोः । अन्यान्ते गतयो अमान् मिलि
तयोः संभाषणौ ज्ञानतो देपयो रिह कोन कोन
तमसि वीश विमिश्रो रसः । ६४ । अक्षणे निदि
पदे जने अवणयो स्नापिच्छ गुह्यावली मूर्द्धिण्या

पुलकयन्ता नन्दति स्विद्यति प्रसन्नव्यति मृ
र्क्षति स्थिरतमः पुंजे निर्जने प्रियः । ६१ । त
दामो न समे समय मथना निगमोश्चरन्ते गतो
गोविन्दस्य मनो रथे नच समे प्राप्ते तमः सो
दतो कोकानो करुण स्वनेन सदृशी दीर्घा
मदभार्यना तन्मग्ये विफलं विलंबन मसौ

गी त्वेमहेमनिकषो पलतो ननोति । ६६ । रागिनीम
गो युमायवीताल विरचित चाट्ट वचन रचने चरणे र
चित प्रणिपाते संप्रति संचलसी मनि केलि शय
नमनुयाते । सुगये मधु मथन मनुगत मनु सर राधि
केअ । चन जवन लन भार भरे दर मय्यर चर
ण विहारे । सुखरित मणि संचोरी सुपेहि विधेहि

म सरोज दाम ऊचयोः कस्तूरिका पत्रके ।
धूर्तानामभि सार सत्वरहदो विषड्-निकंजे
सविधोत्तनील निबोल चारु सदृशो प्रत्येग
मालिगते । ६५ । काश्मीर गौर वपुषा मभि
सारिकाणो मावद्ध रेव मभितो रुचि मेज
रीभि । पततमाल दल नील तमे तमिश्रेत

गी
गो

सूचित हरि परिरंभे । एव मनोहर हार विमल ज
लधार ममुञ्जव कुंभे । ५ । अधिगत मखिल सावी
भिरि दंतववपु रपि रति राग सजे । चेदि रागित
रशाना रव दिडिम मभि सर सरस मलजे ६ स्म
रशारसम सुविन सावी ममलेव्य करेण मलीले ।
चल वलय कणितै रव बोधय हरि मपि निजगतिशी

मराल विकारे । २ । शृणु रमणीय तरंतरुणी
जन मोहन मधुरिष रावे ऊसम शगसन शास
न वेदिनि पिक निकरे भजभावे । ३ । अनिल
तरल किसलय निकरेण करेण लतानि ऊ
रेवे प्रेरण मिव कर भोरु करोति गति प्रति
मुच विलेवे ४ स्फुरितमनेग तरंग वशा दिव

गो प्रसङ्गवति सूर्ध्वति स्थिरतमः सुजे निर्जुजे प्रियः
गो ॥ ६६ ॥ रागिनी मधुमाधवी ताल । रति सावसा

वेगात् मभि सारे मदन मनो हर वेधे । नजुरु नि
ते विनि गमन विलेखन मनु सरते हृदयेषां ।
धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वन माली
गोपी पीन पयोधर मदन चंचल कर युगशीली

ले १०। श्री जय देव भणित मधुरी कृत हारु
दा सितवामे । हरि विनि हित मनसा मयि निष्ट
त कंद तटी मविगामे । ८ । ८ । सामोदक्षति व
क्षति प्रियकथा प्रत्येगमालिंगनैः श्रीतिंयास्य
ति रंस्पते सखिसमागत्येति चिंताकुलः । स
त्वाम् शपतिवेपते पुलकयत्पानंदति सिद्यति

गी ति मिर पुंजे शील्य नील निचोले । ४ । उरसि सु
गो गये रूपहितहारे बन इव तरल बलाके तरि दिव
पीते रति विपरीते राजसि सकुत विषाके । ५ ।
विगलित वसनं परिहृत रशने चटय जवन म
पि थाने । किसलय शयने पेकज नयने निधि मि
व हर्ष निथाने । ६ । हरि रभि मानी रजनि रिदानी

अ० । नाम समेते कृत संकेते वादयते मृड वे
एते बद्ध मन्त्रते तन्त्रते तन्त्र संगत पवन चलित म
पि रेणो ॥२॥ पतति पतत्रे विचलेत पत्रे शक्ति
भवउपयाने । रचयति शयने सचक्ति नय
ने पश्यति तव पन्थाने ॥३॥ सावर मथीरंजमे
जरी रिषु मिव केलि सलोले चलसगिव केजे स

गो. न्वन्ती कथं मयि रहः शान्ता मेगै नरंग नरंगिभिः

गो. समन्वि सभगः सन्नाम्यथ न्वयैत कृतार्थता ।

म. १६० । श्यावली तरल कोचन कोविदाम मे

जीर केकणा मणि युति दीपि तस्य द्वारे निकुंज

निलयस्य हरिं निरीक्ष्य श्रीश्यावलीम् मथ स

खी निजगाद शयाम् । ६८ । शशिनी ।

मिय मपियानि विरामे । ऊरु मम वचने सत्तर
रचने श्रव्य मथ विप्रकामे । १० । श्री जय देव कृ
त हरि सेवे भणानि परम रमणीये । प्रमुदित
हृदये हरिमपि सदये नमत सकृत् कम नीये
। ८ । ११ । समय चकिते विन्यसेन्ती दृशौ निमि
र पथिप्रति रुत मुद्गः स्थित्वा मेद पदानि वित

गी० पवन सरभि शीते । विलस रति वलित ललि
गो० तगीते । ५ । वितन वद्ध वलिनव पल्लवचने ।
विलस चिर मलस पीन जचने । ५ । मथुमुदित
मथुप कुल कलित रावे विलस मदन रससभा
वे । ६ । मथुर तरणिकनिकरनि नद सुखरे । विल
स दशन रुचि रुचिर शिखरे । ७ । विहितपद्मा

मथ माथवी ताल । मेजतर ऊँजतल कलि स
दने विलस रति रम सह सित वदने ।। प्रविश
राथे माथव समीप मिह । ५ । नव भवद शोक
दल शयन सारे । विलस ऊँच कलश तरल
हारे । २ । ऊँसम चय रचित अचि वाम गोहे वि
लस ऊँसम ऊँसमार देहे । ३ । चल मलय वन

गो. सामियाहिराया मनुनय मदचने चा नयेथाः

गो. । ३३३ मयु रिपुणा साखी नियुक्ता स्वय मिद मे

न्य पुन जगादरायो । १०० । लोचिनेन चिरेवहने

यमति आलो भूयो तापितः केदर्येणच पात

मिच्छति सथा सेवाय विवा यरे । अस्मो कन्तद

ले ऊरु दान मिद अक्षेय लक्ष्मी लवकीते

वती सख समाजे । भणिति जयदेव कवि राज
राजे । ८ । साक्षा नन्दपुरन्दरादिदि विषहृदैरमे
दा दारा दानये मुकुटेन्द्र नील मणिभिः सेद
शितेन्दीवरम् । स्वच्छन्द मकरन्द सेदर गल
न् मन्दा किनी मे उरं श्री गोविन्द पदारविन्दम्
अम स्केदाय वन्दामहे । ९५ । अह मिह निव

गी० दोबु प्रसर यिव हर्षा अनिकरः । ७३ । भजन न्या
गो० लल्ल्यान्ने कृत कपट केरु निविहित स्मिते या
ते गेहा हृदिरव हिताली परिजने । प्रिया संप
शेत्ताः स्मरशर समा कृत सभगे सलजाया
लजा वागम दिवहरे मृगदृशः । ७४ । रागि
नी मथमाथवी ताल । राधा वदेन वि ।

दास द्रवोप सेवित पदं भोजे ऊतः संश्रमः । ११
साससाध्यस सानेद गोविंदे लोल लेचना सि
जान मेज मेजीरे प्रविवेश निवेशनम् । १२ । अति
क्रम्य योगे अवगायथ पर्यन्त गमन प्रवासेनै
वाक्षणे स्तरल तर तारम्यति तयोः । तदानी
राथायाः प्रिय तम समालोक समये पणतस्व

गी
गो

वित्त मिव यमुना जल धरे । २ । श्यामल मृडल
कलेवर मेडल मथिगत गौर डकले नील न
लिन मिव पीत पराग पटल भर वलयित सु
ले । ३ । तरल दृगंचलचलन मनोहर वदन ज
नित रतिरागे । स्फुट कमलोदर विलित बिज
न युग मिव शरदित अगम । ४ । वदन क

लोकन विकसित विविध विकार विभेगे । जल
निधिमिव विधु मंडल दर्शन तरलित त्वेग तरंगे
॥ १॥ हरि मे कर सेचि सभिल वित विलासे सा
द दर्श गुरु हर्ष वश म्बद वदन मनेग विकामे
॥ अ० ॥ हार ममल तरतार सुरसि दयते परि
लेख्य विहरम् ॥ स्फट तर फेन कदम्ब करे

गी
गो
केलि कला भिरथीरे । मणि गण किरण समूह
समजल भूषण सभग शरीरे । ७ । श्रीजयदेव भ
णित विभव दिगुणी कृत भूषण भारे । प्रण स
न हृदि विनिधाय हरिं सचिरे सकृन्नोदय सारे
। ८ । ११ । गतिवति सखी हृदे मेद त्रया भर नि
भर सर पर वशा कृतस्फी तस्मि तस्नापि ।

मल परि शीलन मिलित मिहिर सम ऊँडल ।
शोभे । स्मित रुचि ऊँसम सुसुल सिता थरप ।
लव कृत रति लोभम् । ५ । शशि किरण बु
रितो दरजलयथर सेदरस ऊँसम केशो तिमि
रोदित विथु मंडल निर्मल मलयज तिलक
निवेशे । ६ । विपुल पुलक भर देन रिते रति

गी गायण मनुगान मनुसर गायिके । अ० । कर कम
गो लेन करोमि चरण मद्दमा गमिता सि विहरेत्
ए सुप ऊरु शयनो परिमा मिव नृपुत्र मनुग
नि शूर । २ । वदन सथानिधि गलित ममृत
मिव रचय वचन मनु कले । विरह मिवापन
यामि पयोधर रोथक मुरसि उकले । ३ ।

नाथराम । सरसमलसं दृष्टादृष्टा मुञ्जव पल
व प्रसर शयने निद्विप्राप्ती मुवाच हरिः प्रि
यो । ७५ । रागिनी मधुमाथवी ताल ॥ कि
शलय शयन तले ऊरु कामिनि चरण क
मल विनिवेशे । तव पद पल्लव वैरि पराभव
मिदमनु भवत स्वेवेशे । १ । क्षण मधुना ना

गी
मो

रशना गुण मनु गुण केदविनादम् । अति गुण
लेपिकरुत मम शमय विरादव सादम् । ६ । मा
मति विफल रुषा विफली कृत मव लोकित
मथनेदम् । मीलति लज्जित मिवनयने तव विर
मविरज रतिवेदम् । ७ । श्री जय देव कवेरिदम्
नु पद निरा दित मथ विष मोदम् ॥ जय ।

प्रिय परिवंभण रमसवलित मिव पुलकित म
निउरवापम् । मथुरसि कुच कलशे विनिवेशय
शोषय मनसि ज तापम् । ५ । अथर सथारसमुप
नय भासिनि जीवय हृतमिव दासम् । त्वयि
विनि हितमनसं विरहा नल दग्ध वपुष म ।
वि लासम् । ५ । शशि सुवि सुविरय मणि

गी
गो

न कपोल पुलके सीतकार थारा वशा इवत्ता
कलकेलि काकु विकसहेता अथौ ताथरं साक्षो
न क्रम्य पयोथरं भृशपरि खेगात्त ऊरेगीदृशो
हर्षोत्त कर्ष विशुक्त निः सहजतो र्यन्यो थय ।
ताननम् ॥ ७७ ॥ दोभ्यो सेयमित्तः पयो थर
भरे एण पीडित्तः पाणिजै राविदोद ।

नत रसिक जनेषु मनोरम वति रसभाव वि
नोदम् । ८ । ११ । प्रसहः पुलको ऊरेणानिविश
स्त्रैर्धैर्नि मेघेण चक्रीश कृत विलोकिने यरस
या पानेकशानर्मभिः । आनेदाभि गमेन म
न्मथकला बुद्धेयि यस्मिन्नभू उद्भूतः सतयोर्व
भूव स्रजः रेभाः प्रियेभावकः ७ मीलहृष्टिमिल

गी.
गो.

लिरुत्कमिने वक्षोन् मीलिने मन्ति पौरुषः रसः
स्त्रीणोक्तः सिध्यति । ५५ । तस्याः पादल पाणिजो
किन्तुरो निद्रा कषायेदृशौ । निर्हेतो यरशोभि
मा विललिता सस्तसजो मूर्धजाः । कोचीदमद
रस्यथोचल मिति शान्तिवातैर्दृशो रेभिः कामश
रैस्तदुत्तमभ्रमत्तमनः कीलिने ८० बालोलाः केश

शनैः क्षत्ताथरपुदः ओणी तटे नादतः हस्ते
ना नमितः कचेथर मथ स्पेदेन समोदितः
कात्तः कामपित्तमि मायतदहो कामस्य वामा
गतिः ५८ वामोकेरतिकेलिसंक्रसरणा रेभतया
साहस प्रायेकाज्ञजयाय किं उपरि प्रायेभि यन्से
अमात निस्पेदाजचनस्पत्नी शिथिलिता दोर्व

गो स्वाधीनभार्तृका ८१ इति मनसा निगदन्ते सरतो
गो ते सानिजोते विजोगी राधा जगाद सादर मिद ।

मानन्देन गोविन्दम् । ८३ । रागिनी मधुमाधवी
ताल ऊरु यउनेदन चेदन शिशिर जरेण करे
ण पयोधरे । मृगमद पत्र कमत्र मनो भव मेग
ल कलश सहोदरे । निज गाद सायउ नन्दने श्री

पाश स्तरलित मलकैः स्वेदलोलौ कपोलौ ह
ए विवाथर श्रीः ऊच कलश रुचा हारिता हार
यष्टिः कोची कोचिङ्गताशा स्तन जवन पटे पा
णिना व्यायः सद्यः पश्येती सत्रपे मान्नटपि वि
ललित हृग्धरेयन्यनोति । ८१ । अथ कोते रतिश्री
तमपि मेरुन कोत्तयानिज गाद निरावाथा रथा

गी
गो

वे जित कमले विमले परिकल्प्य नर्मजन कम
लकेश्वरे । ४ । मृग मद रस ललिते ललिते ऊरु
तिलक मलिक रजनीकरे । विहित कलेक क
लेक मलानन विश्रमिन्न अमशीकरे । ५ । मम
रुचिरे विकरे ऊरुमानद मानसजयजचामरे । ६
तिगलिते ललिते ऊरुमा निशित्वेति शित्वेत्कशमरे

इति हृदया नेदने । ३५० । दथर चेंवन लोचिन्नक
जल मुञ्चलय प्रियलोचने अलि कुल गेजने मे
जन के रति नायक मोचने । १ । नयन करेग वि
का सिनि वासकरे अफनि मेउले । मनसिज पा
श विलास करे अभवेश निवेशय केउले । ३ ।
अमर चये रचयेत सुपरि रुचिरे सचिरे ममसेसु

गी
गो

कोची मेचसजा कवरीभरं कलय बलय अणी
पाणोपदे ऊरु नृपरा वित्तिनि गदितः प्रीतःपी
तो वरोपि तथा करोत । ८५ प्रातर्नील निचोल
मच्युतसुरा सेवीत पीतांशुके राधायाश्चकिन्ते
विलोक्यहसिति स्मरे साखी मेउले व्रीडा चेचल मेव
ले नयनयो राधाय राधानने स्मरे स्मरसाखोवृजोस्त

। ६ । सरसचने मम शोवर दारण वारण के
दरे । मणि रशना वसना भरणानि शुभाशय
वासय सेदरे । ७ । श्री जय देव वचसि जयदे ।
सदये हृदये कुरुमेउने हरि चरण स्मरण म
त केत कलि कलष जरावेउने । ८ । रचय ऊच
योः पत्रे चित्रे कुरुष कपोलयो र्घट्य जचने ।

गी
गो

तेसस्य वंशोद्धर कीर्तिस्थान कृता वधान लल
नालदेणा कंदलिताः समुग्य मथुरे राधा मुवि
नौ सथासारेवो मथुसूदनस्य ददत्तदेमे कदाहो
मयः । ८५ । ८८ । रागिनी मथुमायवीताल ॥

सेचर दथर सथा मथुरथनि मुत्वारित मोहनवशं
चलित ह्योचल मौलि कपोल विलोल वसेते ।।

जगदा नंदाय नंदात्मजः । ८५ । पर्येकी कृतमा
गनाय कफण श्रेणी मणीनो गणो संगोत प्र
तिविंब सेवलनया विशद्विभु प्रक्रियाम् । पा
दंभोरुह थारि वारिधि सत्ता मक्षणे दिहत्तः श
तैः कायव्यूह मिवाचर नृपचिन्ती भूतोहरिः पा
तवः । ८६ । निर्यक केद विलोल मौलि तरलो

गो० विपुल पुलक भुजपल्लव वलयित वल्लव युवति स
गो० हस्ते । करचरणो रक्षि मणिगण भूषण किरण
विभिनन्नत मिस्त्रे । ४ । जलद पटल चलदिउवि
निन्दक चेदन विडल्लाटे । पीन पयोधर परिस
र मर्दन निर्दय रुदय कणाटे । ५ । मणिमय मकर
मनोहर ऊरुल मेरित गेर सुदार । पीत वसन

रासे हरी मिह विहित विलासे । स्मरति मनो
मम कृत परिहासे । ३० । चेदक चारु मयराशि
विदक मेउल वलयितकेशे । प्रचर पुरंदर यत्र
रत्र रंजित मेउर मुदित सुवेशे । ३१ । गोप कदेव
नितेववती सखचेवन लेखित लोभे । वंथजीव
मथरा थर पल्लव मुल सित स्मित शोभम् । ३२ ।

गी० विलास वेशमन्त्र भुवलिमदलवी वंदोत्सा
गो० दि हगोतवीक्षित मति स्वेदादगोदस्थले । मासु
दीक्ष्य विलज्जितस्मित स्रथा सुग्याननेकानने
गोविंदे व्रज सुंदरी गाण हृते पश्यामि हृष्या
मिच ८८ येनमोहन मौलिहारी ननलन मंदारवि
स्नेसनःस्तथाकर्षण दृष्टि दृष्यण मद्वा मे ।

मनु मनि मनुज सदा सखर परिवारे । विशद
कदेव तले मिलिते कलि कलष भयेशमयेते
मामपि किमपि तरेग दनेग दृशा मनसा र
मयेते । ७ । श्री जय देव भणित मति सेदर मो
हन मधुरिषु रूपे हरि चरण स्मरणे प्रति से प्र
ति पुण्यवता रूपम् ॥ ८ ॥ १५ ॥ हस्त सस्त

गी दाः परि शोथ येन स्रथियः श्रीगीत गोविंदतः
गो ५० । साधी साधीक चिंतान भवति भवतः शर्क
रे कर्करा सि दान्ते द्रव्यतिकेता ममन मन्तम ।
सि ह्रीर नीरे रसस्ते । माकेदे केद कोता थर
णितले गन्ध यच्छेति यावद्भावम श्रेणार सार
स्वत मय जय देवस्य विष्णुगवचोसि ॥ ५१ ॥

त्रे करेगीदृशो दृष्यमानव दृयमान दिविष उर्वा
रुतः त्वापहो येसः कंस रिपो व्यपो दृयतवो श्री
योसि वेशीरवः । ८५ । यज्ञोथर्व कला स कौश
ल मनु ध्यानं च यदैक्षवे यत् श्रेयार् विवेक त
त्त्व मपियत् काव्येषु लीला यिते । तत्सर्वे ज
यदेव पेरित कवेः कृत्स्नैक ता नात्मनः साने

वि-श
गी

मावती चरण चरण वक्रवती श्रीवासदेव रति
केलिकथा समेत मेते करोति जयदेव कविः प्रवेष्टे
२। यदि हरि सारण सरसे मनो यदि विलास कला
सकल रहने । मधुर कोमल कोत पदावली शृणु
तदा जयदेव सरस्वती ३ वाचः पलव यत्समा प
तिथरः सेदर्भ शुद्धि गिरे जानीते जयदेव एव ।

अथ गीत गोविंद माह विभास रागाय ताल गीत ॥

२५ २म २ग २३ २ग २म २५ २नि २५ २म २ग २३ २ह्रि
ॐ मे चै मे डर मे वर खन भवः षण्मा लाल ड

२म २५ २नि २ह्रि २३ २ग २३ २ह्रि २नि २५ २म २ग २३
मे नक्त म्भीरु रये त्वमेव तदिमे राये गृहे प्राप

२ह्रि २५ २म २ग २३ २ग २म २५ २नि २५ २म २ग २३ २ग
य। इत्ये नेदति देशत अलितयोः प्रत्यध ऊज

२३ २ह्रि २म २५ २नि २ह्रि २३ २ग २३ २ह्रि २नि २५ २म २ग
डुमे राया मायवयो जयेति यमना कलेरहः के

२३ २ह्रि
लयः १ वाग्देवता चरित चित्रित चित सद्मा प

वि-श
गी

रणी धरणी किणी चक्रगारिष्ठे केशव धृत कच्छ
परूप जय जगदेशहरे २ वसति दशत शिखरे
धरणी तवलगना शशितिलक कलेवति म
ना केशव धृत मूकरूप जय जगदेशहरे ३ त
वकर कमलमवरे नाव मद्धत मृगे दलित हिर
ण्य कशिपु तन मृगे केशव धृत नरहरिरूप जय

शरणाः श्लाघा उरुह इतेः श्रेयावोत्तरसत्यमेव
रत्नैराचार्यगोवर्धनस्यहीकोपितविश्रुतः
श्रुतिथोयोयीकविज्ञापतिः ४ प्रत्ययप
योयिजलेभूतवानसिंवेदेविहितवह्निचरि
त्रमावेदेकेशवभूतमीनशरीरजयजगदेश
हरेरिति विप्रतरेतवनिष्ठमृष्टेय

विश्व
गी

मत्तमौलि वलिरमणीये केशव धृत खण्डनि
रूप जय जगदीश हरे ७ वहसि वषाषि विशदेव
सने जलदाभे हल हति भीति मिलित यमनाभे
केशव धृत हलधर रूप जय जगदीश हरे ८ नि
दसि यत्त विथेर हृष्ट कृतिजाते सदय हृदय द
शित पञ्चाते केशव धृत बृहशीर जय जग

जगदीशहरे ४ क्लयसि विक्कमणे वलिमद्
त वामन पदनव नीर जनिज पावन केशव
धृत वामन रूप जय जगदीशहरे ५ क्षत्रिय रुधि
र मये जगदप गत पापे सपयसि शमित भव
तापे केशव धृत भृगुपति रूप जय जगदीश
हरे ६ वितरसि दिक्षु रणे दिगपति कमनीये दश

वि-श
गी-

तेदार योते वलि कलयते लज्जयते ऊर्वते पौलस्त्ये
जयते हले कलयते कारुण्य मातृत्वते स्नेहान्तर
र्क्ष योते दशा कृतिकृते कृष्णाय नमः ॥ ५ ॥
विभास रागाय नमः । श्रित कमला ऊच मेद
लभत ऊडल कलित ललित वनमा जय जय देव
हरे ॥ १ ॥ दिन मणि मेडल मेडन भव विड ॥

दीशहरे ५ म्लेच्छ निवह निथने कलयसि करवा
ले । धूमकेतु मित किमपि कराले केशव धृत क
ल्कि शरीर जय जगदीशहरे १० श्री जय देव कवे
रिदमदितमदारे । शृणु साविदे शुभदे भवसा
रे केशव धृत दश विथरूप जय जगदीशहरे ११
वेदानुदरते जगन्निवहते भूगोलमहिभ्रते दै

वि-शा
गी

जनक सुता कृत भूषण जित हृषण समर शमित
दशकंद जय जय देवहरे ६ अभिनव जलधर सेद
र धृत मेदिर श्री सावित्रे चकोर जय जय देवहरे
७ श्री जय देव कवेरि देऊरुते सुदे मेगल मज्जल
गीते जय जय देवहरे दश सोला सभरेण विभ्रम
भृता सा भीरवान् भुवा सभर्णे परिरभ्य निर्भर

नमनि जनमानसहेस जय जय देवहरे १ कालि
य विषयरों जन जन रे जन यड कुल कमल दि
नेश जय जय देव हरे । ३ । मधु सर नरक विना
शान गरुडा सन सर कुल कैलि निदान जय जय
देव हरे । ४ । अमल कमल दल लोचन भव मोच
न प्रभव न भवन निधान जय जय देव हरे । ५ ।

वि-श
गी

णीश्यामल कोमलै रूपत यन्नै रनेगोत्सवे स्व
हृदे व्रज सेदरी भिरभितः प्रनेग मालिगितः श्रेया
रुःसावि मूर्ति मानिव मथौ मग्यो हरिः कीदति ॥
तिनोत्सग वसहजेग कवल क्लेशादिवेशाचले
प्राले यस्तवने क्यानव सरति श्रीविदुशैलानिलः
किंचस्त्रिग्य रसाल मौलि मकुला मालीक्य हर्षोद

सुरः प्रेमोपया रायया साधुत्वददने सधामयमि
ति व्याहृत्य गीतस्तुति व्याजा उद्भट चेवितस्मित
मनो हारी हरिः पातवः ५ अनेक नारी परिवेभसे
भ्रमत्कर मनो हारि विलास लालसे मयारि मारा
उप दर्शयत्यसौ साखी समक्षे पुनराहराधिका १-
विशेषा मनोरंजनेन जनयन् नानेदमिदीवर अ

वि-श
गी


गोप वधू रत्न गायति काचिउदे चित पेचम रागम २
कपि विलास विलोल विलोचन विलन जनितम
नोजे थायति मग्य वधू रायिके मधुसूदन वदनम
रोजम ३ कापि कपोल नले मिलिताल पितेकि
मपि श्रुति मूले वारु बुबुवति नेव वती दीयते
पुलकै रत्नकुले ४ केलिकला कुतके नच का।

या उक्तीलेति ऊहू रितिकलो तानाः पिकावांगि
रः १२ विभासरागाण ताल। । वेदन चचित नी
लकलेवर पीत वसन वनमाली । केलि चलन
गि ऊडल मेरित गेडु यगसित शाली । हरि रिह
मयवधुतिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे
१५५ । पीत पयोधरभारभेरा हरि परि रभ्य सयागे

वि-ग
गी

भणित मिदमद्भुत केशवकेलिरहस्ये । वेदाव
न विधिने चरिते वितनोत्त सुभाति यशस्यम् द
विहरति वनेगथा सा थारणा प्रणये द्वये विगति
त निजोत्कर्षा दीर्घा वशेन गतामृतः । क्वचिदपि
लता केजे येजन्म भवत मेडली सखर शिखरे ली
ना दीना अवाच रहः सांवी १-केशारिणि सेसार





चिदमे यमना जल कले मेजल वेजल केजग
ते विच कर्ष कोणा इह कले ५ करतल ताल तरल
वलया वलि कलित कल खन वेशे । शस रसे स
ह न्त्य परा हरिणा सुवती प्रशशेसे ६ स्निष
तिका मपि रमयति कामपि रामो पश्यति सस्मि
न चारु परा मपरा मन गच्छति वामो ७ श्रीजयदेव

वि-श
गी

नातिभयेन १ हरिहरिहता दयतया गतासा ऊर्षिते
व। अ० । किं करिष्यति किं वदिष्यति सा विरे विरहे
ए किं यनेन जनेन किं मम किं सखित गदहेण २
चित्तयामि तदा तने ऊर्द्विल ऊर्कोप भरेण शोसा प
शमिवो परिश्रमता ऊर्ले श्रमणोत्त ३ तामहे हृदि मे
गता मतिशो भृशो रमयामि किं वनेन सदा मि

वासना वेधं श्वेतलो गयामा थाय हृदये तस्या जव
ज संदरीः ११ इतस्ततस्तु मनस्तु राधिका माने
ग वाणा व्रज विन्त मानसः कृतान तापः सकलि
दनेदनी तदन्त ऊजे निष साद मायवः १२ वि
भास रागास तात् १ मा मिधे चलित विलो
क्य हते वधूति चयेन सापराय तया मयान निवारि

वि-श.
गी

जय देव केत शेरिदे प्रवर्णन किंड विल्व समद्र
संभव रोहिणी रमणीत १८ ॥ पाणी मा ऊरु चूत सा
यक समे साचाप माये पय कीडा निर्जित विश्व
मूर्च्छित जना चातेन किं पौरुषे तस्या एव मृगी
दृशो मनसि ज प्रवृत्त दाता शुभ श्रेणी जर्जरि
ते मना गपि मनो नायापि संयुजते १३ हृदिवि

तामिह किं वृथा विलयामि ५ तन्निविन्नमस्तु
यथा हृदयेतवा कलयामि तन्न वेद्वि क्रतो गतामि
नते नते नतु यामि ५ दृश्यसे श्रतो गता गतमे
व किं विदयामि किंपुरे वशसे भ्रमे परिरेभणेन
दयामि क्षमता मपरं कदा पितवे दृशे न करोमि
देहि संदरि दर्शने मम मन्मथेन उतोमि वर्णिते

वि-श
गी सीदति तव विरहे वनमाली। ५५ । दहति शिशि
र मयूरेवर माण प्रवृत्त करोति पतति मदन विशि
खे विलपति विकल तरोति। ५६ । धनति मधुपस
मूरे अवण मपि दधाति मनसि वलित विरहेति
शिरुज मय याति ५७ वसति विपिन विज्ञाने न्य
जति वलित थामल दति थरणि शयने वद्ध वि

ला शाना शो नाये भजे गमनायकः कुवलय द
ल प्रेणी केटेन सागरल कतिः मलजय रजोने
दे भस्म प्रिया रहिते मयि प्रहरत ह्यभोत्या ने
कथा किमथावसि १४ विभास रागस्य ताल
वहति मलय समीरे मदन मय निधाय स्फटति
कसम निकरे विरहि हृदय दल नाय १ सखि

वि-श
गी-
भरपरी रेभा मते वोक्तुति ॥५॥ विदिरति मङ्गः
आसा नाशाः प्रो मङ्गरी क्षते प्रविशति मङ्गः
ऊजे येजे येजन्मङ्गर्वङ्गताम्यति । रचयति म
ङ्गः शय्या म्ययी ऊले मङ्गरी क्षते मदन कद
न क्लान्तः कान्ते प्रियस्तव वर्तते ॥॥ ता
निम्ययी स्वावानि तेव तरला स्त्रिया दृशो ।

लपति तव नाम ४ भणतिक विजय देवे विशि
विलसितेन मनसि रभस विभवे हरि रुदयत्त
सकतेन ५ पूर्वयत्र समन्त्रया रतिपते रासा दि
ताः सिद्धये तस्मिन्नेव निजंज मन्मथ मन्त्रा ती
र्थे पुनर्माथवः ध्यायेत्वा मतिशे जपन्नपि
तवै बालाप मेरा वली भूयस्त्वत्कच कुंभति

विश
गी

स्य गमिता कोतश्चिरे चित्तयन्नन्तर्मयः मनो ह
रो हरत्तवः क्लेशत्रयः क्लेशवः २ यमना तीरवा
नीर निजंजै मन्दमास्थितम् । प्राह प्रेम भरोद्
आन्तमायवे रायिका सखी २५ वसन्ते वास
नी कसम सज्जगारै रवयै वै भूमन्ती कोतारे
वज्र विहित क्लृप्तान् शरणं प्रसेदे केदर्पज्ज

विभ्रमास्तदङ्गोवजसौरभे सचस्रथास्येदीगिरो
वक्रिमासाविवाथरमाधुरीतिविषयासंगेष्विद्वे
न्मानसेतस्योलग्नसमाधिहेतुविरहव्याधिः क
थं वर्तते १ साकृतस्मितमाकुलाकुलगलद
म्बिलमलामिते भ्रुवलीकमलीकदर्शितभ
जा मूलार्धदृष्टस्तनमगोपीनान्निभृतन्निरी

विश-
गी

नोरथ पथिक वधूजन जतिन विलापे । अलि
कुल सेकुल कुसुम समूह तिराकुल वकुल क
लापे । २१ मृगा मद सौरभ रभस वशेवदनव द
ल माल तमाले प्रवजन हृदय विदारण मनसिज
नख रुचि किंशुक जाले । मदन मही पतिकनक
देउ रुचिकेसर कुसुम विकासे । मिलत शिली

रजतित चिंता कुलतया बलदायां गथा सरस
मिद मूवे सहचरी । ललित लवेगलता परिशी
लनकोमल मलय समीरे । मथकर निकरक
रश्मित कोकिल कूजित कंज कटीरे । विहरति
हरिहर सरस वसन्ते नृत्यति युवति जनेन समे
साति विरहि जनस्य उद्यते । ॥ ५॥ उन्मत्त मदन म

वि.श.
गी

सुकलता परिरेभाण सुकलित पुलकित चूने हे
दावत विणिने परिसर परिगत यमुना जल ए
ते श्रीजयदेव भणिते सिद्धमदयति हरिचरण
मदति सारे । सरस वसेत समय वर्णन मन गत
मदन विकारे । द । दर विदलित मली वलि चे
चन्य राग प्रकटित पट वासै वीस यन्का नना ।

मात्र पाटल पटल कृतसरत्ना विलासे १४।
विशालित लेजित जगद्व लोकन तरुणा करु
णा कृत हासे विरहिनि कृतन केत मात्राकृति
केत किंदे तरिताशे ५ माथव का परिमलललि
ते नव मालति यात संगेथौ । मति मनसा मणि
मोहन कारणा तरुणा कारणा वेथौ ६ स्फुरदति

वि-शं
गीं
उद्यलोकस्तोकस्तवकतवकाशोकलनिका
विकाशःकासाशेपवतपवनेधेव्यययति श्रीप
आङ्गगीरणीतरमणीयानमुज्जलप्रसूतिश्रुता
नोसतिशिखरिणीयेसुखयति।२३।निदतिवे
दनमिडकराणमनविदतिविदमयीरेव्यालनि
लयमिलनेनगरलमिवकलयतिमलयसमीरे।

ति । इह हि दहति वेतः केतकी गेय वेधः प्रसरद
समवाण प्राण वहेय वाहः २१ उन्मीलनमधुगे
थलव्य मधुप व्याधत चूतोऊर । क्रीडत्को कि
लका कली कल कलै रुझीणी कणी ज्वरः नीये
ते पथिकैः कथं कथमपि ध्याना वधान क्षण
प्राप्त प्राण समा समा गम रसोलासै रमी वासरः २२

विश
गी

करोति ऊसमशयनीये ३ वहति च गलित वि
लोचन जलथरमानन कमल सदारे विधुमिव
विकट विधु तददेत दलन गलिता स्तनथारे ४
विलिखित रदसि ऊरेणम देन भवेत सम सम श
र भूते प्रणमति मकर मथो विनिधाय करे च
शरे नवचूते ५ प्रतिपद मिदमपि तिगदति माथ

माथवसा विरहे तवदीना मनसिज विशिखभ
या दिव भावनया नयिलीना । अ- । अतिरतनिप
तित मदन शयदिव भवदव नाय विशाले । स्वह
दय मर्मणि वर्म करोति सजल नलिनी दलजा
ले २ ऊसम विशिख शरतल्य मनल्य विलास
कला कमनीये । व्रत मिव तव परिरंभ साखाय

वि-श-
गी १८। आवासी विपिनायते प्रियमासी माला पि
जालायते । तापोपि अक्षितेन दावदहनजाला
कलापायते । सापित्तिरिहरेण हरेत हरिणी रु
पायते हाकथे केदपीपि यमायते विरचयन्
शार्दूल विक्रीडितो ॥ २४ ॥ स्तन विनिहित मपि
हार मदारेसा मनते कुशतनुरिव भारेयधिका

व तव चरणे पतितारहे । त्वयि विमर्षे मयि स यदि
सुधा निधिरपि कुरुते तनूदाहे ६ ध्यान लयेन प्र
रूपरिकल्प भवेत् मतीव उद्योगे विलपति हसति
विषीदति चेत्तति मेवति तापे १० । श्रीजयदेव भ
णित मिदमधिकं यदि मनसा नदनीयम् । हरि
विरहा कुल बलम् पुनरिति साखी वचने पदनीये

विष्णु-
गी

कलयति विहितकृताशनकले । ५॥ यजति न
पाणि तलेन कपोले । बालशिशुनमिव सायम
लोले ६ हरिरिति हरिरिति जपति सकामे । विर
ह विहितमरणो वतिकामे ७ श्रीजयदेवभाणि
मिति गीतम् । सखयत्त केशव पदमपनीत
म् । ८ । सखात्तदेवतवैद्यह्यत्वदेशे संगाम्य

विरहे तव केशव । ॐ । शर समरुणा मणि मलय
ज पेके पश्यति विषमिव वषाषि सशेके २ स्वसित
पवन मन्वपम परिणारे । मदन दहन मिव दह
ति सदाहम् ३ दिशि दिशि किरति सजल कणा जा
लम् । नयन नलित मिव विगलित नालम् ।
॥ ४ ॥ नयन विषय मणि किशलय नल्पम् ॥

वि-श
गी-
रसेज्वरा तरतनोराश्रये मस्याश्चिरेवेत श्रेदन
चेद्रमः कमलिनी वितासु सेताम्यति किंत
दोतिरसेन शीतलतरे त्वामेकमेवप्रिये ध्याये
रुद्रसिस्थिता कथमपि स्त्रीणां लोकां प्राणिनि ॥
२० ॥ क्षणमपि विरहः प्रयत सेहे नयन निमी
लित विन्नया नयाते अस्मिन्ति कथमसौ रसा

तमात्रसाध्यो । विमक्तवाथो ऊरुषेन राथा मयैद
वज्रा दपि दारुणोसि । २५ । २५ । सारोमोचति श्री
त्करोति विलपत्यत्कम्यते ताम्यति ध्यायत्युद्धम
प्रमीलति पतत्ययाति मूर्च्छत्यपि पतावत्यतनञ्च
रे वरतनजीवेन्न किंतेरसात् सर्वेय प्रतिमप्रसी
दसि ततस्त्यक्तो मया हस्तकः । २६ । २६ । केदप्येज्ज

वि-श
गी-

न रक्तो लता गृहे दृष्टा तच्चरिते गोविन्दे मनसि ज
मेदेसखी प्राह ॥ १४॥ १५॥ ॥ अगोष्ठा भरणे करोति व
दृशः पत्रेपि सेवारिणि प्राप्तेनाम्परि शेकते वि
तनते शय्यो विरे ध्यायति । इत्या कल्प विक
ल्प तल्प रचना सेकल्प लीला शत व्याशक्ता
पि विना त्वया वर तननैषा निशो नेष्य ।

तु शाखोचिर विरहेण विलोक्य प्रसिद्धागो १२।
२२। गथा मग्य मावार विंद मथप सैलोक्य मोल
स्थली । नेपथ्यो चितनी रत्न मवनी भाग वता
शतकः । स्वकंद व्रज सेंदरी जन मनस्तोक प्रदे
षश्चिरे केश धेसन धूमकेतु रवत त्वोदेवकी
नेदनः ११३।२२ ॥ अथतो गत म शक्तो चिर म

विश
गी

ॐ । त्वदीभि शरणं भवेत्तु वलेत्तु एतत्ति प
दाति कियेति चलेत्तु । २ । विहित विशद विष
किशलय वलया । जीवति पर मिह तव रति
कलया । ३ । मञ्जुव लोकित मेडल लीला मथ
रिष रत्न मिति भन्वत शीला । ४ । त्वरित मयै
ति नकथ मभिसारे । हरि रिति वदति साखी

ति ॥ १५ ॥ ३१ ॥ विषल पुल कपालिः स्फीत सीतका
र मेतर्जनित जिडिमका कर्वाकुले व्याहरेती तव
कि तव विथाया मेद केदरे चित्ता रसजलनिधि
मगता थ्यात लगता मृगाक्षी ॥ १६ ॥ ३२ ॥ पश्यति
दिशि दिशि रहसि भवेतम त्वदथर मथुर मथ
नि पिवेतम् ॥ १ ॥ नाथहरे सीदति तथा वासगद्रे

वि-स
गी

न हृष्टि गोचर मितः सानन्द नन्द स्पदम् राधा
या वचननन्द भग मावानन्देति के गोपनी गो
विन्दस्य जयेति सायम तिथिः प्राशस्त्य गर्भाः
गिरः ३ अशोतेरेव कुलदा कुल वर्त्त पात सेजा
त पातक इव स्फुटलो वनश्रीः । हेदा वर्त्त त
२ मदीपयदे मुजालै दिक् सेदरी वदन चंदन

मनवारे ५ स्मिष्यति चेवति जलथर कल्पे । इति
रूप गत इति तिसिर मनल्ये । ६ । भवति विले
विति विगलित लजा । विलपति रोदति वास
क सजा । ७ । श्रीजयदेव कवेरिद मदिने । रसिक
जनेत नतामपि मदिने । ८ । किं विश्राम्यसि क
स भोगि भवते भोडीर भूमी रुहे । भ्यात र्यासि

विश-
गी

ए मेव वामताम् । नृणां जगत् प्राण विधाय माय
दे प्रथमम प्राण ह्यो भविष्यति ३० वायो वियेहि
मलया तिल पेचवाणा प्राणात् गृह्णाण नगद्रे
पुनरात्र पिष्ये । किंते कृतांत भगिति तमया
तरेयो रेणाति सिंच मम शाम्पत् देह दाहः ।
॥ ३६ ॥ कथित समये पिहिर रहन ययो व

विंङ् विंङ् ३४ प्रसरति शशथर विवे विहित विले
वेच माथवे विथरा विरचित विविध विलापेसा
परितापम् चकारोच्चैः ३५ विरह पोडु मरारि म
खावज फति रयेति रयेनपि वेदना । विथर तीव
त नोति मनोभवः सहृदये हृदये मदन व्यथाम्
॥ ३६ ॥ मनोभवानेदन वेदनाति प्रसीदये दत्ति

वि-रा-
गी

ह्रीमन्भवति कृतसुकृतकामिनी । ४ । अह
ह कलयामि वलयादिमणिभूषणे । ह्रीविर
ह दहनवहनेन वज्रदूषणे ५ ऊसमसुकमार
तन्वमतन्वशरलीलया । स्यापि हृदि हेतिमा म
तिविषमशीलया ६ अह मिह निवसामिनरा
णित वनवेतसा । स्मरति मधुहृदनामामपिन

नेमम विफल सिद्धममल रूपमपि यौवने १ या
मिहेक मिह शरणे साखी जन वचन वेचिता ।
अ॥ यदनु गमनाय निशि गमन मपि शील
तम् २ मम मरणा मेव वरमति वितथ केतना
कि मिह विसहामि विरहानल मचेतना । ३ ।
मामहह विधुरयति मधुर मधुया मिनी कापि

विश
गी

हरिः पातवः ३५ तत्किं कामपि कामिनी सभिस्त
तः किं वा कला कैलिभिर्वहो वेधुभिरेथ कारिणि
वनाभ्यर्णो किमुद्रास्यति । कोतः कोत मनामना
गपि पथि प्रस्थातमेवातमः संकेतो कृतमेज वे
जललता ऊँजेपियन्नागतः ४० अथागतो माय
व मेतरेण साखी मिये वीक्ष्य विषाद मूकाम्

चेतसा १०१ हरिवरणा शरणा जयदेव कविभार
ती १ वसत हृदि सुवति रिव कोमल कलावती
द १ त्वाम प्राण मयि खयेवर परोक्षीरो दतीरो
दे शके सेदरि काल कट मपिवन मूढो म
शनी पतिः इत्ये ह्वे कथा भिरम मनसो विति
पवतो चले शयायास्तन कोरको परिमिलनेत्रो

विश
गी

विचल दलक ललिता ननवेदः । तदथर पानर
भस कृत तेदः ३ चेचल ऊडल ललित कपोला-
मलारित रशन जचन गति लोला ४ । दयति वि
लोकित लज्जित हसिता । वड विथ कूजित
रति रस रसिता ५ । विपुल पुलक पृथक्वे
पृथक्भेगा । स्वसित निमीलित विकसद न

विशोकमानारमिते कयायिजनार्हने दृष्टवदेतद्य
३।४१। विभासरागायनाल। १ स्मर समरो
चित विरचित वेष गलितकसम दर विल लित
केशा।१। कापि मथरिषणा विलसति युवति
रथिकशणा।३०॥ हरिपरिरेभण वलित वि
कार। ऊच कलशो परितरलित हाश ॥२॥

विश
गी

रमते यस्य नाश्लिनवने विजय मगारि रथ
ना । ३५ । चतचय रुचिरे रचयति चिजरे तद
लित नरुणानने ऊरुवक ऊसमे चपला स
विमे रति पति म्या कानने २ चटयति सचने
ऊच युग गगने म्या मद रुचि रूषिते । मणि
सर ममलम् तारक पटलम् नखपद शिशा

गो ॥ ६ ॥ अमजलकणा भरसभगा शरीरा ॥ परि
पति तोरसि रति राग थीरा ॥ १० ॥ श्री जय देव
भणित हरि रमितम् ॥ कलिकलषे जनयत्
परिशमितम् ॥ ८ ॥ सम दित मदेने रमणी
वदने चेंवन चलिता थरे म्हा मद तिलके
लिखितिस प्रलके म्हा मिव रजनी करे ॥ ११ ॥

वि-श
गी-

गि गगण एजिते । वहिर्य वरणे यावक भरणे ज
नयति हृदियोजिते । ६ । रमयति सभ्रंशे काम
पि स्रष्टे खल हलथर सोदरे । किमफलमवसे
चिर मिह विरसे वदसति विदणे दरे । ७ । इह
रस भणाने कृतहरि शणाने मथरिष पदसेवके
कलिप्रग चरितम् नवसत उरितम् क ॥

भूषिते । ३ । जित विमलशकले मृदुभुज युगले
करतल नलिनी दले । मरकत वलये मधुकर
निचये वितरति हिम शीतले । ४ । रति मृदु
जघने विपला पचने मनसिज कनकासने म
णिमय रशने तोरण हसने विकरति कृतवास
ने । ५ । चरण विमलये कमला निलये नावम

विश
गी

पवनेन । ३ । स्थलजल रुद्र रुचि कर चरणेन ।
लहति नसा हिमकर किरणेन । ४ । सजल
जलद समदय रुचिरेण । दहति नसा हृदि
विरह भरेण । ५ । कनकनि कष रुचि शुचि
वसनेन । असितिनसा परि जन हसितेन
॥ ६ ॥ सकल भवन जन वर तरुणेन वह

विलप जय देवके । ८ । विभास रागाण ता-
अनिल तरल कुवलय नयनेन नयनित सा कि
मलय शयनेन । ११ । सखिया रमितावन मालि
ना । १२ । विकसित सरसि जल लित मुखेन ।
सुदृढ तिन सा मनसिज विशिखिन । १३ । अस्त
मधुर तर मृदु वचनेन ज्वलित नसा मलयज

विश
गी

स्फुटदिदेवतश्चये यास्यति ॥ ४२ ॥ विभासरा
यास्यताल। निभस्त निजंज गृहे गतया
निशि रश्मि निलीय वसेते चकित विलोकि
त सकल दिशारति रभस वशेन हसतम् ॥
॥ २ ॥ सखिहे केशि मदन मदारम् ॥ रमय
मया सह मदन मनोरथ भावितया सविका

नित साकज मति करुणोत । १०१ श्रीजयदेव भ
णित वचनेन । प्रविशत हरि रपि हृदय मनेन
८। १३। नायातः सखि निर्हयो यदि शठस्त्वेह
ति किं ह्यसे । स्वच्छेदस्वद्व वल्लभः सख मने
किंतवने हृषणे । पश्याय प्रियसेगमाय दयि
त स्याकृष माणे शुणे रुक्मेदार्ति भग दित

विश
गी

ललित कपोले । अमजल शकल कलेवर याव
र मदन मदादिति लोले । कोकिल कलरव कू
जित याजित मनसि जतेत्र विचारे श्रय ऊरुमा
ऊल ऊँतलया नरव लिखित चनस्तनभारे । ५
चरत रणित मणिन् प्रया परि हरित विता
नम् ॥ मावरवि श्रेवल मेवलया सक

१॥ अ॥ प्रथम समागम लज्जितया पट्टचाटु श
ते रत्नकुले । मृदु मधुरस्मित भाषितया शिथि
ली कृतजवन उकुले । २॥ किमलय शयन
निवे शितया विरमरसि ममै वशयाने । कृत
परि रेभणा जेवनया परिभ्य कृता थरणे ।
॥ ३॥ अलस निमीलित लोचनया अलकावलि

विश
गी

ने विशुद्धलव सेदरीभिरयिका नेदाचिरेवेवितः
दोषोव नदर्पिता थरतदी सिधर मये कितो वा
दुर्गो पतनो स्तनो न भवतः श्रेयो सिके सहिषः ४३
अथ कथमपि यामिनो वितीय स्मर शरजर्ज
रित्तापि सा प्रभाते । अत नय वचनम् वदे
त मये प्रणत मपि प्रिय माह साभ्य ह ।

चग्रहचैवनदाने। ६। रति साव समयरसाल सया
दर सकलित वदन सरोजे निस्सह निपतित तवल
तया मधुसूदनमदित मनोजे ७ श्रीजय देवभाणा
त मिदमति शय मधु विष निधुवन शीले सावसु
त्केदित राधिकया कथित वित्त नो तसलीले ।
८। दृष्टि व्याकुल गोकुला वनवशा उदृत्य गोवर्ध

वि-श
गी

बेबन विरचित नीलिम रूपे । दशान वसन म
रूपे तव कल तनोति तनो रन रूपम् ॥२॥
वप्र रन हरति तवस्मर सगर खवन खरत्न
रेखम् । मरकत शकल कलित कलयौत
लि पेरिव रति जयलेखे ॥३॥ चरण कमल
गल दलकक सिक्त सिंदे तव हृदय सदा

यम् ॥ ४४ ॥ विभास रागास्य तालः ॥ रजनिज
नित्यं गुरु जागर रागा कषा यित मलसनि मेघे । व
इति नयत मन राग मिव स्फुट मरित रसाभिति
वेशे ॥ १ ॥ याहि माथव याहि केशव मावदकै त
व बादेता मन सर सर सीरुह लोचन यातव हर
ति विषादम् ॥ ३५ ॥ कजल मलिन विलोचन

वि-श
गी

हृते । ६ । भ्रमति भवानवला कवलाय वनेषु कि
मत्र विचित्रे । प्रशयति एतत्तिकै ववधू वय नि
देय वाल चरित्रे । ७ । श्री जय देव भणित रतिवे
चित्त विरिजित श्रवति विलापे । श्ला सदा मथुरे
विबुधा विबुधालय तोपि दुःशापम् । ८ । १५ ॥
नवेदं पश्येत्पाः प्रसरदन्तगगन्वहि रिव प्रिया

३५

३५

दे। दर्शयती ववहि मेदन्तुम नव किसलय प
रिवादे ॥४॥ दशान पदेभ दधर गतस्मम जनय
ति चेत्तसि विदे । कथयति कथ मथ नापि मया
सह नव वपुषेत्त दभेदे ॥५॥ वहि रिव मलिनत
दे नव क्लम मनोपि भविष्यति नूनम् ॥ कथ
मथ वेचयसे जन मन गतम सम शरज चव

विश
गी

ष वशा ममी मतिः श्वास निस्सर मवी समवी
मयेन सवीड मीत्ति मवी वदने दिनेने सानेद
गद्गद पदे हरि रित्य वाच ४० परि हर कृता ते
के शोकान्वया सतते चनस्तन जचनया क्रान्ते
खान्ते पयानव काशिति विशति वितनो र।
न्यो यन्यो नकोपि ममोतरे प्रणयिति परी

पादालक कुरित मरुणा योति हृदये ममाय प्रख्या
त प्रणयभरभेगेन कितव न्वदा लोकः शोका दीपि
किमपि लज्जो जनयति । ४५ । पश्चा पयो यरत
दी परिरेभलगत काश्मीरमद्रितमद्रितमरो म
भ्रमरदस्य व्यक्तानराग मिव विलसनेगविद विदो
वृष्ट मनुष्टयत प्रियेवः ४६ अत्रोतरे मरुणा रो

वि-शु-
गी

हिमेव न मेव मो खय मतिशय स्त्रिय मयेषि
योय सपस्थितः ॥ ५० ॥ विभासरागण ताल ।
वदसि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमदी इति
दरति मिर मति चोरे । स्फुरदथर सीथवे तव वद
न चेद्रमा रोचयति लोचन चकोरे । प्रिये चारु
शीले मेव मपि मानमनिदाने । सपदि मद नाद

रेभा रेभे विथेहि विथेयत्तो ४८ सुग्ये विथेहिम
यि निर्दय दन्त देश दोर्वलि वेथ निविडस्तनपीड
नाति चेडित्तमेव सदमेवय पंचवाणा चेडाल कोड
दलना दसवः प्रयोत्त ४९ व्यययति वृथा मौने
तन्विप्र पंचय पंचमे तरुणि मधुलापै स्नापम्
विनोदय दृष्टिभिः समन्वि विमाली भावेनाव

विश
गी

मम हृदय मति यन्त्रे ३ नील नलिनाभ मपि तन्नि
तव लोचने धारयति कोक नद रूपे । कसमशर
वाणा भावेन यदि रेजयसि कसमिद मेतदवत
पे ४ स्फुरत कच केभयोरु परिमणि मेजरी रेज
यत्त तव हृदय देशे । रसत रसनापि तव चन ज
वन मेडले घोषयत्त मन्मथ निदेशे ५ स्थलक

३८

लोदहति मममान सेदेहि माव कमल मधुपाने
। अ० । सत्यमेवासि यटि सदति मयि कोपिनी द
हि विर नयन शरचाते । चटय भज वेधने जनय
रद विदने येनवा भवति स्वावजाते २ त्वमसि मम
भूषण त्वमसि मम जीवने त्वमसि मम भव जलधि
रन्ते भवत भवतीह मपि सतत मन रोपिनी तत्र

वि० रा०
गी० रायिका मयि वचन जाते । जयति पद्मावती रमणा
जय देव कवि भारती भाणित मतिशान्ते । ८ । १६ ॥
बेधक अति बोधवोय मधुरः स्त्रिया मधुक कविः
गोटे चेद्वि कौस्तु नील नलिनश्री मोचने लोच
ने नामान्वेति निलप्रसून पदवी केदाभ देति
प्रिये प्रायस्त्वन्नाह सेवया विजयते विष्णुस्य

सलगेजनेभम हृदयेजने जजितरति रेगपरभा
गे । भणमस्यावाणि करवाणि चरणा द्वये सर
सल सदलक्तकशगे ६ स्वर यरल विरुने ममशि
रसि मेरुने देहि पद पल्लव मदारे । ज्वलि मयि
दारुणो मदन कदना नलो हरत तडणा हित
विकारे ७ इति चटल चाट पटवारु सर वैरिनो

वि-रा
गी

नि निजित जयति किमपि ताति ५३ भूचापे निर
तः कदाच विधातो निर्मात मर्म व्यथो श्यामात्मा
कुटिलः करोत कवरी भारोपि माशेयमे । मोहे
तावदयेच तन्नि तन्वता म्बिवाथो रागवानसह
तः स्तनमेडलस्तव कथे शौमिम कीडति ५४ मा
निनीमान विधेः सदतो जयति सोप्रते । म्दवेण स

व्यायुथः ५१ दृशौतव मदात्त सेवदन मिड सेदीप
ने गतिर्जन मनो रमा विजित रेभ मूरु हये रति
स्तव कलावती रुचिर चित्रलेखि अवावहो विव
थ यौवने वरुसि तन्नि एष्वी गता ५२ भूपलवे
थ नर योगत रेगितानि वाणा गुणाः प्रवणा पानि
रिति स्तरेणा तस्या मनेग जय जेगम देवताया मस्त

विश-
गी

श्री विदे चर्चा विषे शीतो सुस्तपनो हि मेङ्गलवहः
क्रीडा मदे यातनः ॥ ५० ॥ विभास गगण ताल
हवि शभि सरति वहति स्रुत पवने किम पर
मधिक सखि सखि भवने ॥ १ ॥ मायवी माऊ
रु मानिति मानमये ॥ ५० ॥ ताल फला
दपि शुरु मति सरसम् ॥ किम विफली

सङ्गतः श्रीमङ्गोपालकश्चरतिः ५५ तामय मन्त्राय
विन्नो रतिरस भिन्नो विषाद सम्पन्नो । प्रवर्त्तति
तद्गति चरितो कलशान्तरिता मवाच रहः सांवी
५६ स्त्रिये यत्परुषासि यत्प्राणमति स्तथासि य
द्वागिणि देवस्यासि यदन्तरे विमलता याता
सि तस्मिन्प्रिये । तयुक्ते विपरीत कारिणि तव

विश
गी किमिति करोषि हृदय मति विश्रुतम् ॥ ६ ॥ स
जल नलिन दल शीतल शयने हरि मव लो
कय सफल्य नयने ॥ ७ ॥ श्री जय देव भणि
त मति सलितम् ॥ साव यत्न रसिक जने हरि
चिरितम् ॥ ८ ॥ १० ॥ श्री राधिका जीके वच
न विषु रिव साखी सखा सोये साखी वहिमा

ऊरुषे ऊव कलशे २ कतिन कथि मिद मन पद
सचिरे । आपारि हर हरि मतिशय रुचिरे किसि
ति विषीदसि रोदिषि विकला । विहसति यव
ति सभा तव विकला ४ जनयसि मनसि कि
मिति गुरुवेदम् । शृणु मम वचन मनी हित
भेदम् ॥ ५ ॥ हरिरुप यात्र वदत वज्र मथुरे

विश
गी वरु मथुरे । किमिति केशेषि हृदयमति विधुरे
॥६॥ सजल नलिन दल शीतल शयने हरिम
वलोकय सफल्य नयने ७ श्री जय देव भणित
मति सलितम् । स्वावयत्त रसिक जने हरी चि
रितम् ॥८॥ १० ॥ श्री राधिका जीके वचन
विषु दिव साखी सम्रा सोये साखी वहिमा

निलो विष मिव स्यादशिम यस्मिन् उनोति स
नोगाते । हृदय भदये तस्मिन् नेव पुनर्वलते व
लात् ऊवलय दृशास्वासः कामो निकाम निरे
ऊषाः । ५८ । गणायति गुणग्रामे आमे भ्रमाद
पिने हते वहतिव परि तोषे दोषे विमेचति ह्य
तः श्रवतिष्ठ नलत्सो क्लृप्तो विहारिणि मन्त्र

वि-रा
गी

नयेन श्रीणयित्वा मरगादी गतवन्ति कृतवेषके
शवे ऊजशयो रचित रुचिर भूषो दृष्टिमोषे प्रदे
षे स्फुरति निरवसादे कापि शयो जगाम ६१
सामो द्रव्यति वदति प्रिय कथो पत्येगमा हि
गनैः श्रीति यास्यति रेणते सति समा गत्ये
ति चित्ता कुलाः ॥ सन्नाम् पश्यति वेपते

विना पुनरपि मनोवामे कामे करोति करोमि किं
५५ श्रीति वस्तुन नो हरिः कुवलयया पीडेन सांद्
रणे । यथा पीत पयोधरस्तरण कृत कुंभेन से
भेदवान् । यत्र स्थिति मीलति क्षण मय क्षि
मे दिष्टे तत्क्षणात् । केसस्या लस भूजिते जित
मिति व्या मोहकोलाहलाः ॥ ६० ॥ सरुचि मन

विश
गी

६३ ॥ आश्लेषाः दन्तवेवता दन्तनखो ह्येवास्त्र
स्वान्तज श्रोत्रोया दन्तसंभ्रमा दन्तरता रेभादन्त
प्रीतयोः ॥ अत्यार्थगतयोर्भ्रमान् मिलितयोः
संभाषणौ जीततो देपत्यो विह कोन कोन न
मसि व्रीडा विमिश्रोतः ६४ अक्षौ त्रिद्विप
दे जने अवगायो स्नापिच्छुक्तावली मूर्द्धिषा

प्रलकयन्ता नेदति स्विद्यति प्रत्यङ्गच्छति मृच्छति
स्थिरतमः प्रजे निज्जे प्रियः । ६२ । त्वहामेन स
मे समय मथना तिग्मोश्चरन्त यतो गोविन्दस्य म
नोरथे नवसमे प्राप्ते तमः सो शतो । कोकानो
करुणा स्वनेन सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना । तन
मुग्ये विफलं विलेवन मसौ दम्पोभि सारद्वणाः

विशा
गी

पलतो ननोति ॥६६॥ विभासरागस्य तालः ।
विरचित चाटु वचनरचने चरणे रचित प्रणिपाते
मेषति मञ्जलसी मतिकेलिशायन मनयाते ।
मग्ये मथ मयन मनगात मन सर राधिके । अ-
वन जवन स्तन भार भरे दर मय्यर चरण विहा
रम् ॥ मखरित मणि मेजीर मयैहि विधेहि

म सरोज दाम ऊचयोः कस्तूरिकापत्रके । धूर्ताना
मभि सार सत्वर हृदो विषड् निजेजे सीव । धो
तन्नील निबोल चारु सहृदो प्रत्येग मा लिंगा
ते । ६५ । काश्मीर गौर वपुषा मभि सारिकाणां
मावहरेत् मभितो रुचि मेजरीभि । एतन्मा
ल दल नीलत मेत मिश्रे तत्त्वम हेम निकषो

वि'रा' गी' विरेमे । एक मनोहर शर विमल जल धारममे
ऊच ऊंचे ५ अथिगत मीविल साखी भिरिदेत
ववप्र रपिरतिरण सजे । चेदिरणिन रशानारव
दिरिम माभि सर सरस मलजे ६ सरशार सभ स
खिन साखी मवलेव्य करेण सलीले । चल चल
य कणिनै रव बोध य शर मपि निज गति शो

मशाल विकारे । २ । मृगा रमणीय तरे तरुणीज
न मोहन मधुरिष रावे । ऊसम शगसन शास
न वेदित्ति पिक निकारे भज भावे । ३ । अनिल
तरु किमलय विकारेण करेण लताति ऊरेवे-
प्रेरण मित्र कर भोरु करोति गति प्रति मुच विले
वे । ४ । स्फुरित मनेग वशा दिव स्रवित हरि प

विशा
गी

कति मर्कति स्थिरतमः प्रजे निजजे प्रियः ॥ ५॥

६६॥ विभास गायण तालः ॥ रति साव सारे

गतमभि सारे मदन मनोहर वेधे । न करु निते वि

निगमन विलेवन मन सरते हृदये शो ॥ १॥ थीर

समीरे यमना तीरे वसति वने वन माली गोपी

पीन पयोधर मदन चेचल कर युग शीली ॥

ले १०। श्रीजयदेवभणित मधुरी कृतद्वारमुदा
सितवामे । इति विनि हित मनसा मयि तिष्ठत
केट तदी मवियामे । ६। १६। सामो इत्यति वदय
ति प्रियकथो प्रत्येगमालिगनैः श्रीतिषास्यतिरे
स्यते सति समा गत्येति चिन्ता कुलः । सन्नाम्य
शपति देयते पुलकयन्तानेदति स्थिति प्रत्यक्त

विश-
गी

शीलय नील निचोलम् ४ उरसि मगरे रूपहित
झारे चन इव तयल वलाके । तदि दिव पीते रति
विषयीते राजसि सकृत विषाके ५ विशा लित
वसने परिहृत रशने चटय जवन मणियातम् ।
किसलय शयने पेकज नयने निधि मिव र्व
निथानम् ६ ॥ इति रभि मानी रजनि रिसनी

अ-१ नाम समेते कृत संकेते वादयते मृदुवेणो । व
ऊ मन्वते तन्वते तन्व संगत पवन चलित मपिरेणो
२। पतति पतत्रे विचलेत पत्रे शेकित भवउपया
ने । रत्नयति शयने सचकित नयने पश्यति तव
पण्याने ३ सखि मथीरे न्यज मेजरी विषु मिव
केलि सलोके । चलसखि ऊंजे सति मिर सुजे

वि-श
मी

कथं मणि रत्नः प्रामा मेरो नरेग नरेगिभिः स
मन्त्रि सभगः सन्नाम्यशन्त्रपैत्र कृतार्थ्य तो ।
६० हाशवली तरल कोचन कोचिदाम मेजीर
केकणा मणि फति दीपितस्य हारे निक्केज
निलयस्य हरे निरीक्ष्य व्रीडा वनीम् सथ
सावी निजगाद राथाम् ॥ ६८ ॥ विभासरागस्य

मिथ मपि याति विरामे । ऊरु मम वचने सत्तर
चने एव मथुरिकामे ॥ १० ॥ श्री जयदेव कृत ह
रि सेवे भणति परम रमणीये । प्रसदिन हृदये
हरि मपि सदये नमत सकृत् कमनीये ॥ ८ ॥
समय चकिते विमर्शेनी दृशो निमिर घथि
प्रति कृत मद्दः स्थितामेद पदाति वितन्वतीम्

विश-
गी

रभि शीते । विलस रति वलित ललित गीते ।

४। वितन वज्र वलितव पलव चने विलस वि

र मलस पीन जचने । ५। मथु महित मथुप

कुल कलित शवे विलस मदन रस सरस भावे

॥ ६ ॥ मथुर तरपिक निकरति नदमाखरे । वि

लस दशान रुचि रुचिर शिखरे ० विहित पञ्चा

नाल । मेजतर ऊँजतलकलि सदने विलस
रति रभ सह सित वदने । १ । प्रविशराथे माथव
समीप मिह । ५ । नव भवद शोकदल शय
न सोरे । विलस ऊँच कलश तरलहारे । २ । ऊँ
सम चय रचित अवि वासगेहे । विलस ऊँसम
सुऊमार देहे ॥ ३ ॥ चलमलय बने पवन स

वि.श.
गी.

याहि राधा मननय महवनेवानयेथाः । इति म
धुप्रिपणा सावीनियुक्ता स्वय मिदमेत प्रनर्जगा
दराधाम् ५० त्वाचितेन विरे वहन्नय मति ओ
तो भृशं तापितः कंदर्पेणव पात मिहति सथा
संवाथ विवापरे ५१ अस्या कला दलम ऊरु
दणा मिह भूक्षेप लक्ष्मी लव श्रीते

वती सख समाजे । भगिनि जयदेवकवि राजरा
जे । दा । सोदा नेद प्रन्दरा दिदि विषट् वृन्दैरमे
दा दय । दातमे मङ्कटैद्र नील मणिभिः सेद
शितेन्दीवरम् । स्वच्छन्दम् मकरन्दसन्दर गलन
भन्दा किनीमेडरे । श्रीगोविन्द पदार्थविन्द मस्य
भस्केदाय वन्दामहे । ६५ । ग्रह मिह निवसा मि

विश
गी प्रसर यिव हर्षा श्रुतिकरः १०३। भजनन्यासः।
ल्यान्तम् कृत कण्टकैर्द्रुति विद्रित स्मितेया
ते रोहा दहिरव हिताली परिजने ॥ प्रिया
स्य पश्येत्पाः स्मर शर समा कृत सभगम् स
लजाया लज्जा व्यगम दिवहरम् मृगादृशः
विभास रागास्य तालः ॥ शया वदन वि

दास द्रवोप सेवित पदो भोजे कृतः सेधुमः ७१
सास साधस सा नेद गोविंदे लोल लवता सि
जान मेज मेजीरे प्रविवेश निवेशने ७२ अति क्र
म्या योगे अवण पथ पर्यन्त गमन प्रवासे नैवा
द्वो स्तरल तरतारम्यति तयोः । तदानीं राधा
याः प्रिय तम समालोक समये पणत खेदोत्र

विश
गी
मिव यमना जल हरम । २ । श्यामल मंडल
कलेवर मंडल मधिगत गौर डकुले । नील
नतिल मिवपीत पद्म पटल भर वल यि
तमूले । ३ । तरल द्योवल चलत मनोहर वदन
जनित रतिशयो । स्फटकमलोदर विलित वि
जन प्रग मिव शरदि तडागम । ४ । वदनक

लोकत विकसित विविध विकार विभेदो । ज
लनिय मित विधु मेडल दर्शन तरलित तेगत
रेयो ॥१॥ हरिमे करसेविर मभिलखित विलासे
साद दर्श शुरुहर्ष वशम्वद वदन मनेग विकामे
श्रु । हार ममल तरतार मरसि दयते परिले
व विहरम् ॥ स्फुट तर फेन कट्ख करवित

विश
गी-

कलाभिरधीरे । मणिगण किरण समूह सम
ज्वल भूषण सभरा शरीरे । १० । श्री जय देव भ
णित विभव दिशणी कृत भूषण भारे । प्रणम
त हृदि विनिधाय हरि सचिरे सकृतो दयसारे
। १६ । २१ ॥ गतिवति सखी हृदे मेद त्रयाभर
निर्भर स्मर परवशा कृतस्फी तस्मि तस्त्रापि

मलपरिशीलनमिलितमिहिरसमकेडलशो
मे। स्मितरुचिकसमसमलसिताथरपलव
कतरति लोभम् १५। शशि किरणक्षुरितो
दरजलथरसंदरसकसमकेशेतिमिशेदित
विधुमेडलनिर्मलमलयजतिलकनिवेश
म् १६। विपुलपलकभरदेवदितेरतिकेलि

वि-श
गी

न मनस्यै गतिके । ३५ । कर कमलेन करोमि
चरण महमा गमितामि विद्वे नृणां सप क
रु शयनो परिमा मिव नृपुत्र मन गति श्रुतम्
। ३६ । वदन स्या विधि गलित ममृत मिव र
चय वचन मनकूलम् ॥ विरह मिवापन
यामि पयोधर शयक मरसि उकूलम् ॥ ३७ ॥

नाथरास । सर समलसे दृष्टा दृष्टा मङ्गलव पलव
प्रसर शयने नितिमादी सवात हरिः प्रियाम
७५॥ विभासरागस्य तालः । । किशलयश
यशयन तले ऊरु कामिति चरण कमल विति
वेशे । तव पदपलव वैरि पराभव मिद मनभ
वत स्ववेशे । १॥ तणा मथना नारायणा मनरा

विश
गी

शुभा मनशुभा केह विनादे । अतिशुभ लेपि
करुत मम शमय चिरादव सादे । ६ । मामति
विफल रुषा विफली कृत मव लोकित मथने
दम् । मीलति लजित मिव नयने तव विदम
विरज रति विदम् । ७ । श्री जयदेव कवेरिद
मनपद निग दित मथ रिष मोदम् ॥ जय

प्रियणीरेभाण रभस वलित मिव पुलकित म
ति डर वापम । मथरसि ऊच कलशे विति वेश
य शोषय मन सिज तापे ४ अथर सुथार सम
पनय भासिति जीवय स्तमिव दासे । नयिवि
नि स्तित मनसे विरहा नल दाय वषुष मविला
सम् १५१ प्राशि मवि मखरय मणि रशना

विश
गी

पोल पुलके सीत्कारथाश वशा इयत्ता कुलके
लि काऊ विकसदेता अथोत्ताथरे आसोत्क
म पयोथरे मशपरि वेगात् ऊरेगी दृशो हर्षो
तर्कषे विमक्त निस्सरत्तनो र्यन्यो थयत्पान
नम ॥ ७७ ॥ दोर्भ्यो संयमितः पयो थरभ
रे एण पीडितः पाणिजै शविहो दशनैः

नत रसिक जनेषु मनोरम रतिरसभाव विनोदे
॥६॥२२॥ प्रत्यहः पुलको ऊरेण निविद्य श्लेष
नि मेघेणाव क्रीडा कृत विलोकिते यरस पाने
कथा नर्मभिः । आनेदाभि गमेन मन्त्रय क
ला प्रहेपि यस्मिन्नम् उद्धतः सतयोर्वभूवस
रतः रेभाः प्रियेभावकः ७ मीलहृष्टि मिलतक

विश
गी

केपिते वत्तोत्कीलिते मत्ति पौरुषः रसः स्त्रीणां
ऊनः सिध्यति ७५ तस्याः पादल पाणिजो कित्तस
ये निद्रा कषायेदृशौ । निर्दूतो यदशोणिमा वि
ललिता सस्तसजो मूर्धजाः । कोचीदमदरस
यो चलमिति प्रातर्निवातेदृशौ रेभिः कामशारे
स्तद्वत्त मभूत्यस्यमेतः कीलिते द व्यालोलाके

शनैःतताथरषदःश्रोणी तटे नाहतः हस्तेनात
मितःकचेथर मथ स्पन्देन संमोहितः कान्तःका
मपि तस्मि मापत दहो कामस्य वामा गतिः॥८
वामोके रति केलि सेऊसरणा रेभतया साहस
प्रायेकोत जयाय किंचिदपरि प्रारेभि यत्सेधमा
न तिस्पेदा जवनस्थली शिथिलिता दीर्घलिरु

वि-श
गी

स्वाधीन भार्त्कि ८२ इति मतसा निगदेते सरनो
ते सातितात विन्नागी यथा जगाद सादरमिद
मानेदेन गोविंदे ८३ विभास रागस्य ताल १
ऊरु यड नेदन वेदन शिशिर तरेण करेण पयो
थरे । मृग मद पत्र कमत्र मनो भव मे गल कल
श सरोदरे १ निज गाद सा यड नेदने क्रीड

66

६

शषाशस्तखलित मलकैः खेदलो लौकयो लौ
दृष्टा विवाथर श्रीः ऊच कलश रुचा शारिता ह
रयष्टिः कांची कांचिद्वता शास्तन जवन पटेपा
गिना । कायः सयः पश्येती सत्रपे मोतदपि वि
खलित सयरेयन्यनोति ८१ अथ कांतेरतिशो
त मपि मेडन चोदया निजगाद निशवाथा राथा

विश-
गी

कमले विमले परिकल्पय नर्मज्जनकमल
के मखे ४ म्या मद रस ललिते ऊरु तिलक
मलिक रजनी करे । विहित कलेक कलेक
मला नन विप्रमित अमशी करे ५ ममरुचि
देवि ऊरे ऊरु मातद मात रज धज वामरे । रतिग
लिते ललिते ऊरु माति शिवे दि शिवे इक डामरे

इति हृदयानेदने । अ० । द्युखेवन लोवित क
जल मज्जलय प्रियलोचने अलिजल गोजन
मे जनके रति नायक मोचने । २१ । नयन ऊरेगा वि
कासिनिवासको प्रतिमेडले । मनसिज पाश
विलासको शुभवेष्ट निवेशय ऊडले ३ भमरच
ये रत्नयंत सुपरि रुचिरे सुचिरे समसन्नादि जित

विश
गी च सजा कवरीभरे कलय बलय श्रेणी पाणी
पदे ऊरु नृपरा वितिति गदितः शीतः पीतो वरो
पितृया करोत् ८४ प्रातर्नील विचो लम च्युत
मरा सेवीत पीतो शुके राथाया अकिते विलो
क्य हसिति खेरे साखी मेडले व्रीडा चेचल मेचले
नयनयो राथाय राथानने खेरे सोर साखी वृजोस्त

६। सरसचने जचने मम शिवरदारणा वारणा के
दरे। मणि रशना वसना भरणाति अभाशाय
वासय सेदरे। ७। श्रीजयदेव वचसि जयदे सद
ये हृदये करुमेउने हरिचरण सरणा मदन हेत
कलिकलष ज्वर विउने। ८। रचय ऊचयोः प
त्रे चित्रे ऊरुष कपोलयो र्चटय जचने कोची मे

विंश
गी

सस्य वेशोदर जीतिस्थान कृता वधान ललना
ललेणा केदलिताः सुसुग्य मथुरे राया सविंदौ
सुया सारेवो मथुरदनस्य ददनले मे कटाक्षो
मयः ८०। ६६। विभासरागस्य जाल ॥ संवर
दथर सुया मथुरधनि सार्वरित मोहन वशेव
लित दगोचल मौलि कपोल विलोल वसेते ॥

जगदा नेदाय नेदात्मजः ॥ २५ ॥ पर्यकी कृतता
ग नायकफणा श्रेणी मणीतो गणो संयोतप्र
ति विवसेवलनया विश्रुतिभ प्रक्रियो । पादेभो
रुह थारिवारिधि सता मदणो दिहृत्तः शतैः का
यसूह मिवाचरन्तु पविती भूतो शीः पातवः
॥ २६ ॥ तिर्यककंद विलोत्तमौलितरलो ते

विश
गी

लपलकभजपलववलयितवलवउवजिस
इसे । करचरणोरसिमणिगणभूषणकिर
णविभिन्नतमिसे ४ जलदपदलवलदिंडवि
तिदकचेदनविंडललाटे । पीतपयोधरपरिस
रमहेननिर्दयहृदयकपाटे ५ मणिमयमकर
मनोरुक्तेडलमेडितगोडमदारे । पीतवसन

रासे हरि मिह विहित विलासे । स्मरति मनो म
म कृत परिहासे । अ- । चेद्रकचारु मयूर शिखि
उक मेडल वलयित केशे । प्रवर पुण्डरीक यनर
नरेजित मेडर मुदित मुखे २ गोप कंदेव निते
व वती सख चेवन लेखित लोभे । वेधुजीव मधु
राथर पल्लव मल्ल सित सित शोभे ॥ ३ ॥ विप्र

वि-रा-
मी

वेशमन्त्रज भ्रूवलि महलवी वेदोत्सारिदगोत
वीक्षित मति खेदाद्रगोदृश्यते । मामहीद्वि वि
लज्जितस्मित स्रया मय्या नने कानने गोविंदेव
ज संदरी गणा वृते पश्यामि हृष्यामि च । ८८ । अ
तर्मीहन मौलिहृणी ननलन मेदार विसे स
नः स्तथा कर्षणा दृष्टि हर्षणा मद्वा मेत्रे कवे

मन मनि मनज सरा सरवर परिवारे । विशाद
कदेव तले मिलिते कलि कलष भये शमयेते ।
सामपि किमपि तरेग दनेग दशा मनसा रमये
ते ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवभाणत मनि सेदर मोहन म
अरिष रूपे हरिचरण सरणे प्रतिसे प्रति प्राण
वता मनरूपम ॥ ८ ॥ २४ ॥ हस्त हस्त विलास

विश
गी
परि शोथयेत्त सधियः श्रीगीतगोविन्दतः ५-
साधी साधीक चित्तानभवति भवतः शर्करे
कर्करा सिद्धाक्षे द्रव्येति केत्वा ममृत मृतमसि
दीवनीरसस्ये । माकेदे हेद कोता यरणीत
लेगच्छे नियावडावे म्हेगार सार खन म
य जय देवस्य विषयवचोसि ॥ ५१ ॥

गीहृणो हृष्यहानव हृयमानदिविषड्वीर
उःखापहो धंसः केसरिणो व्यपो हृयतवो श्रे
योसि वेशीरवः । ८५ । यज्ञो यव कला सकौ
शालमन य्यानेव यदैसवे यत् शृगार विवेक
तत्त्वमपियत् कायेषु लीलायिते । तत्सर्वज
यदेव पेडित कवेः क्लृप्तकतानात्मनः सानेदाः

विंश
गी

भज देहो मरजितः ॥ ६३ ॥ इति श्री वि
भास रागाय गीतगोविंदसमापते ॥

श्री भोज देव प्रभवस्य रामा देवी सत श्री ज
य देवकस्य । पादा शरादि प्रियवर्ग केहे श्री ।
गीत गोविंद कवि तमस्तु । १२ जय श्री विन
स्तेर्महित इव मेदार ऊसमैः स्वये सिंहरेण
दिपिरण मुदा मुदित इव । भुजा पीउ क्रीडा ह
त ऊवलया पीउक रिणः प्रकीर्ण सृग्विडु

गी ज्ञेयानि भुजदेसो सुरजितः । १३ इति श्री गीत ।
गो गोविंदे समाप्तम् ॥ सुभमस्तु ॥

मादेवीसुत श्रीजय देवकस्य पराशरादिप्रियवर्गकेदे
श्रीगीतगोविंदकवित्तमस्तु ५ इति राशिनी खेभाव
नी गीतगोविंदपरिच्छेदः समाप्तः ॥ ॥ ॥ ॥

श.खे.
गी

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्री भोजदेव प्रभवस्य रामा देवी सत श्री जयदे
वकस्य । पद्म शाखादि प्रिय वर्ग केदे श्री गीत
गोविंद कवित्तमस्तु ५२ जय श्री विद्यसैमिहि
त श्व मेदार ऊसमैः स्वये सिद्ध्येण दिपिरणा
मदा सुदित श्व । भजा पीड क्रीडा हत कव ।
लया पीड करिणः प्रकीर्णा हृद्विदुर्जयति

श-मे-
गी-

पश्चावती चरण चरण चक्रवर्ती ॥ श्रीवासदे
वरति केलि कथासमेत ॥ मेते करोति जय
देव कविः प्रवेयम् ॥ २ ॥ यदि हरि सरणो स
रसे मनोपदि विलास कलास कुत हलम
मधुर कोमल कोत पदा वली शृणु तदा
जय देव सरस्वती ॥ ३ ॥ ॥ ॥ वाचः

अथ राग गंधार गीत गोविंथ परिच्छेदः ज्ञातः ॥४

^२मे ^२मे ^२मे ^२पि ^२ये ^२पि ^२मे ^२ग ^२रे ^२सि ^२मे ^२ग ^२रे ^२सि ^२मे ^२ये
मे मे मे उर मे वर वन भवः श्या मास्त माल दु मे न के

^२नि ^२सि ^२रे ^२सि ^२नि ^२ये ^२पि ^२मे ^२ग ^२रे ^२सि ^२मे ^२ग
भीरु रये त्वमेव तदिमे राये गदरे प्रापय । इत्ये

^२रे ^२मे ^२पि ^२ये ^२पि ^२मे ^२ग ^२रे ^२सि ^२मे ^२ग ^२रे ^२सि
नेदति देश तस्मलितयोः प्रत्यय कज दु मे म

^२मे ^२ये ^२नि ^२सि ^२रे ^२सि ^२नि ^२ये ^२पि ^२मे ^२ग
राया मायवयो जयति यमना कले रहः के

^२सि
लयः ॥१॥ वादेवता वरित विवित वित सभा

रा गो
गी

हित विहित चरित्र मविदे केशव धन मोन शा
रीर जय जग देश हरे ॥१॥ तिति रति विपल
नरे तव तिष्ठति पृष्टे यरणि यरणा किणा वक्र
गरिष्टे केशव धन कल्प रूप जय जग देश
हरे ॥२॥ वसति दशन शिखरे यरणी तव
लग्ना शशिति कलेक वलेवति मया +

पल्लव यत्प्रसा पतिथरुः सेदर्भं शुद्धि गिरौ ॥
जानीते जयदेव एव शरणाः स्नाच्यो डरुह
डनेः । शृंगारोत्तर मत्प्रमेय रत्नै राचार्य गोव
ईन एही कोपिन विभूतः कृतिथरो थोयी
क विल्सा पतिः ॥ अष्टपदी ॥ राग रोधारताल
॥ ४ ॥ प्रलय पयोधि जले धृत वानसि वेदे वि

रा.गो.
गी.

जय जगदीशहरे ॥ ५ ॥ क्षत्रिय रुधिर मये ज
गदय गत पापम् ॥ स्नापयसि पयसि शसि
न भव नापम् ॥ केशव धन भूय पति रु
प जय जगदीशहरे ॥ ६ ॥ विनयसि दिव्य
शो दिव्यति कमनीयम् ॥ दश माव मौ
लि वलि रमणीयम् । केशव धन रघु प

केशव धन शूकर रूप जय जगदीश हरे ॥ ३ ॥
नव कर कमल वरे नाव प्रभु न भेगे दलित
शिराण कशिपु ननु भेगे केशव धन नर हरि
रूप जय जगदीश हरे ॥ ४ ॥ कृत यसि विक्र
मणे वलि महुत वामन पद नाव नीर जनि
न जन पावन केशव धन वामन मन रूप

रा'गे'
गी

म्लेच्छति दहति धने कल यमि करवाले । धूम
केतु मित किमपि करांले ॥ केशव धृत क
ल्कि शरीर जय जगदीश हरे १० श्री जय देव
कवे विदु मदिन मदारं । शृणु सखदे शुभदे भ
वसारं ॥ केशव धृत दश विध रूप जय जग
देश हरे ॥ ११ ॥ राग गेयार ताल ॥ ४ ॥ श्लोक ।

तिरुपजयजगदीशहरे ॥ ७ ॥ वहसि वषाषि वि
शादे वसने जलदाभे ॥ हल इति भीति मिलि
त यमनाभे ॥ केशव धृत हलधर रूप जय
जगदीशहरे ॥ ८ ॥ तिंदसि वत्त विधे रह
श्रुति जाते ॥ सदय हृदय दर्शित पशु चाते
केशव धृत वय शरीर जयजगदीशहरे ॥ ९ ॥

श. गे.
गी

कंदल । कलित ललित वनमाल जय जय दे
व हरे ॥ १ ॥ दिन मणि मेडल मेडन भव
खेडन मति जन मानस हेम ॥ जय जय
देव हरे ॥ २ ॥ कालिय विष थर गोजन ज
न रेजन यड कुल कमल दिनेश ॥ जय ज
य देव हरे ॥ ३ ॥ मधुमर नर कवि नाशन

वेदा नदरते जगन्नि वरते भूगोल मदिभते
दैमे दारयते वलि छलयते द्तरत्नये कर्वते-
पौलस्त्ये जयते इले कलयते कारुण्यमा
तन्वते ॥ स्नेह्यात्मर्ह्ये यते दशा कृति कृते
कृत्वाय तभ्येनमः ॥ ५ राग मेथारताल ॥
अष्टपदी ॥ श्रित कमला कुच मेडल धन

रा'गे' श्रीमत्तवेदचकोर ॥ जय जय देव हरे ॥ ७
गी' श्रीजय देव कवेरिदे ऊरुते मंदे मेयाल मज्ज
लगीते ॥ जय जय देव हरे ॥ ८ ॥ रागागेथार
ताल ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ रासो ह्यास भरेण विभु
मभना माभीर वामक्रवा मभ्यर्णे परिदधति
भर सरः प्रेमोथया राथया ॥ साधु त्वददने

गरुडासन । सरजलकेलिनिदानजयजय
देवहरे ॥ ४ ॥ अमलकमलदललोचनभवमो
चन । विभवतभवननिधान । जयजय देव
हरे ॥ ५ ॥ जनकसुताकृतभूषणजितह
रणसमरशमितदशकंद ॥ जयजय दे
वहरे ॥ ६ ॥ अभिनवजलयरसंदरभृतमे

श.गो.
गो

श्रीणी प्रणामलकोमलै रूपनयनैरौ रनेगोत्स
वे ॥ स्वकंदे वज्रसंदरी भिरभितः प्रत्येगमालि
गितः मंगारुमालि मूर्तिमाति वमथो म
थो शरिःक्रीडति । ५ । नित्योत्सव वराद्भजे
रा कवल क्लेशादिवेशाचले प्रालेय स्रव
ने क्षयाव सरति श्रीखंड शैलानिलः किंच

सुधासय मिति व्याहत्य गीतस्तुति व्याजाज
द्रुत वेवित स्मित मनो शरी शरिः पातवः
अनेक नारी परिरेभ संभ्रम स्फुरत्तनो शरि
विलास लालसे मशरि शया उपदर्श यत्पसो
साखी समसे अनशर शयिका ॥ ७ ॥ विष्णु
षा मन रंजनेन जनयन्त्रानंद मिन्द्री वद

श-शे
गी

सुगन्ध वधू निकरे । विलासिनि विलसति के
लि घरे ॥ १ ॥ पीन पयो यदभादभरेण हरि
पदि रभ्य सुगन्धे ॥ गोप वधू रत्न गायति
काचि उदे चित्त पेचमशगम ॥ २ ॥ कपि वि
लास विलोल विलोचन विलन जतिन
मतोजम् ॥ आसति सुगन्ध वधू रथिके म ।

स्त्रियरसात् मौलि मञ्जला न्यालोक इषोद
या उन्मीलन्ति कुरुः कुरु रिति कलोज्ञानाः
पिकालो गिरः ॥ २ ॥ अष्टपदी । शग गंधार ॥
नाल ॥ ४ ॥ चेदन चर्चित नील कलेवर पीत
वसन वनमाली । केलि चलन्मणि कुंडल
मेदित गेड अगस्मित शाली ॥ १ ॥ हरि रिह

श-शे-
गी-

करतल ताल तयल वलया वलिकलितक
ल स्वतवेशे ॥ गसरसेसर नृत्य पराहदि ।
एा सुवती प्रश सेसे ॥६॥ स्त्रियति कामपि
वेवति कामपि रमयति कामपि रामो पश्य
ति सस्मित चारु परा मपरा मन्वगच्छति वा
माम् ॥ ७ ॥ श्री जयदेव भणित मिद म

अ सुदन वदन सरोजे ॥३॥ कपि कपोल न
ले मिलि तालपिते किमपि श्रुति मूले ॥
चारु बुधेवति तेव वती दयिते पुलके रत्नक
ले ॥४॥ केलि कला कृत केनच काचिद
मे यमना जल कूले ॥ मंजल वेजल
कंज गाते विच कर्ष करेण उकूले ॥ ५ ॥

रा. गे.
गी.
ना प्रवाच रहः सखी ॥ १२ ॥ के सारि रपि से सार
वासना बंध श्रेष्ठलो राधा माथाय हृदये त
त्याज ब्रज सेदगी ॥ ११ ॥ इतल तला मन सत्य
राधिका मनेग वाणा ब्रज विन्न मानसः ह
तान तापः सकलित नेदनी तदाल कजेति
ष साद माथवः ॥ १२ ॥ राग गेथार ताल ॥ ४ ॥

द्रुतकेशव केलि रहस्यम् ॥ वृंदावन विणिने
चरिते वितनोत्त शुभानि यशस्यम् ॥ ८ ॥ अष्टा
दी राग गंधार ताल ॥ ४ ॥ विहरति वने तथा
साधारण प्रणये ह्ये विगलित निजोत्कर्षी
दीर्घी वशेन गतात्मनः ॥ क्वचिदपि लता ऊँजे
येन नमधुवत मेडली मात्र शिखरे लीनादी

रागो
गी

तदा ननम कदिलकुकोप भरेण शोण पय
सितो पदिभ्रमता कुले भ्रमणेन तामहे ह
दि सेयता मनिशे भ्रशे रमयामि किंवने
न सय मिता मिह किंवथा विलयामि ॥

४॥ तन्निविन्न मसूयया हृदयन तवाक
लयामि तन्नवेमि कुतो गता सि नते

प्रष्टादी रागगेथारतात् ॥ ४ ॥ मामिये चलित
विलोक्य हते वध निचयेन । सापराधनया मया
न निवारिताति भयेन ॥ ५ ॥ हरि हरि हता दयत
यागता सा कृषितेव ॥ किं करिष्यति किं व
दिष्यति सा चिरं विरहेण किंथनेन जनेन
किं मम किं सखिन गदहेण ॥ २ ॥ चिंतयामि

रा'गे'
गी'

णी रसोपन ॥६॥ पाणी सा करु चत साय
क ममे सा चाप माये पय कीडा निर्जित वि
स मूर्च्छित जना चातेद कि पौरुषे ॥ नयाप
व मगी दृशो मतसिज प्रेखकटादा शुग
अणी जर्जरिते मना गपि मनो नायापि संध
दते ॥१३॥ हृदिविलाशताहरो नये भजेग

नते नुदयामि ॥ ५ ॥ दृश्यसे प्रयतो गता गत
मेव किं विदयामि ॥ किं पुरे वश सेधमे परि
रेमणोन दयामि ॥ नम्यता मपरे कदापितवे
दृशोन करयामि ॥ देहि सेदरि दर्शने मम म
न्येन उनयामि ॥ वार्णिने जयदेव केन हरे
रिदे प्रवणोन किं उ विल्व ममद्र सेभव रोहि

मनायकः कुवलय दल श्रीणी केहेत साया
रल युतिः मलयज रजो नेदे भस्म प्रिया रहि
ते मयि प्रहृत हर सोन्या नेरा कथा किमु
थावसि ॥ १४ ॥ अष्टपदी ॥ राग गंधार ता
ल ॥ ४ ॥ बहति मलय समीरे मदन मय
निधाय झटति कसम निकरे विरहि हृद

राशो
मी

मन्मथ मन्मथ तीर्थे पुनर्मीथवः । आयेस्त्वामिति
शे जपन्तपि तवैवालापमेशवली भूयस्त्वत्क
च केभ तिर्भरणी रेभा मते वोद्धति । १५ । वि
किरति मङ्गः सा नाशाः प्रो मङ्गरीक्षते
प्रविशति मङ्गः केजे ऐजे ऐजन्मङ्गर्वङ्ग
तापति । रवयति मङ्गः शय्या मर्या कले

जति ललित याम ॥ लुहति थरणि शायने
वज्र विपलति तव नाम ॥ ४॥ भणति कवि
जयदेवे विरहि विलसितेन । मनसिरभस
विभवे हरि रुदयत्न सकृत्तेन ॥ ५॥ शयने
धारताल ॥ ४॥ श्लोक ॥ एवं यत्र समन्तथा
निपते शशादिताः सिद्धयस्तस्मिन्नेव निक्तेज

श.गो.
गी.

साकृतस्मितमा कला कल गल हेमिल मला
सिते भ्रुवली कमलीक दर्शित भजा मलाई
दृष्टस्तनम् ॥ गोपी तान्निभ्यन्निरीक्ष्य गा
मिता कोत्तश्चिरे चिन्तयन् नन्तर्मथ म
नो ह्यो हर तवः क्लेशान्नवः केशवः ॥ २ ॥
यस्य नातीर वातीर निजंजे मेदमास्थितम्

अरीक्षते मदन कदन कान्तः कान्ते प्रियस्त
व वर्तते ॥११॥ तानिस्पर्श सखानितेच तरला
स्त्रिया दृशो विभ्रमा स्तदक्रोवज सौरभेसुव
सुधा स्पंदी गिर्ये वक्रिमा ॥ सा विवा यरमा
धुरीति विषया संगेपिचेन्मानसे तस्योत्त
रत समाधि हेतु विरह व्याधि कथे वर्तते ॥१२॥

श. गे.
गी.

लवेया लता परिशीलन कोमलमलय समीरे
मथकर निकर करेवित कोकिल कुजित के
ज कुटीरे ॥ १ ॥ विहरति हरिहर सरस वसेते
न्यपति युवति जनेन समे सखि विरहि जन
स्य उरेते ॥ उन्मद मदन मनोरथ पथिक व
धजन जनित विलापे । अलिजल सेजल

प्राह प्रेम भरो ज्ञानसाधनं राधिका साखी ।
वसेने वासेनी कसमस कसौरे ख येवेधम
नी कान्तारे वड विहित कसानु शरणे अ
मेदे केदरे ज्वर जलित विता कुल नया व
लदाथो राथो सरस मिद मूवे सह चरी ॥
राग गंधार ताल ॥ ४ ॥ अष्टपदी ॥ ललित

शुभो
गी

नृणां विलासे ॥ ४ ॥ विद्यालित लेजित जगद व
लोकन तरुणा करुणा कृत हासे ॥ विरहित
कृतन कृत मत्वा कृतिकेतकि देत रिनाशे
॥ ५ ॥ मायविद्या परिसृत ललितेनव मा
नति यात सुमेधौ ॥ सति मनसा मयि
मोहन कारिणी तरुणा कारणा बेथ ॥ ६ ॥

कसम समरुह निरा कुल वकुल कलापे ॥२
मया मदमौरभ रभस वशंवद नव दलमाल
तमाले ॥ अथ जव हृदय विदारण मन सिज
वावरुचि किंशुक जाले । मदन मही पति
कनक देड रुचि केसर कसम विका मि
लित शिली मख पाटल पटल कृत सर

रा.गो.
गी.

दर विदलित मल्ली वलि वेचनराग प्रकटित प
द वासै वीसयन्कातनाति । इह हि दहति चेतः
केतकी गंधवेधः प्रसरद सम वाण प्राण व
द्गंधवाहः ॥११॥ उन्मीलनमधुगंधलव्य मधुप
व्याधत चूले कर कीडको किल काकली क
ल कलै रुद्धीणी कर्णज्वरः नीयेते पथिकैः

स्फुरदतिमत्कलता परि यमभा मकुलित
पुलकित हृते ॥ हेदावन विपिने परिसर
परिगत यमना जल एते ॥ श्री जयदेवभाणि
ते मिदमदयति हरि चरण स्फुरति सारे ॥ स
रस वसेत समय वन वर्णित मन्वगत मद
न विकारे ॥ ८ ॥ गुण गेयारताल ॥ श्लोक

शुभे
गी

शुभे गीथारत्नाल ॥ ४ ॥ अष्टपदी ॥ निंदति चेद
न मित्रं करणं मन विंदति खेदमर्थीरे व्याल
निलय मिलनेन गरल मित्रकलयति मलय
समीरे १ मायव सा विरहे तव दीना ॥ मन
सिज विषाख भया दिव भावनया त्वयिली
ना ॥ अविदत्त निपतित मदन शरादिव भव

कथे कथ मयि ध्यानावधानतत्तण्ण प्राप्ते प्राणास
स सम श्मश रसोत्तासै रसी वासराः ॥ २२ ॥ इति
लोकलोकस्तव कनवका शोकलतिका । वि
काशः काशाशे पवन पवनोये व्यथयति । अयि
आमर्दङ्गी शणित रमणी यान मङ्गल । प्रसू
ति भूतानो मयि शिखरिणीये सखयति २३

रा. गे.
गी

व विकट विधेत्तद दन्त दलन गलिता मृतथा
रम ॥४॥ विलोत्वति रूहि करेण म देन भवे
तम सस शरभूते प्राण मति मकर मथो वि
नियाय करेच शोरेन वचते ५ प्रति पद मिदम
पि निगदति माथव तव चरणे पतिता हे । त्व
यि विमदि मयि सपदि सथा तिथि रपि कुरुते

देवनाय विशाले । सहृदय मर्मणि वर्म क
रोति सजल नलिनी दलजाले । ११ । कुसुम वि
शिख शरत्तल्य मनल्य विलास कला कमनी
ये । व्रत मिव तव परिश्रम सखाय करोति
कुसुम शयनीये । १२ । वरति च गलित विलो
चन जलधर मानन कमल मदारम् विधुमि

रा'गे'
गी'

आवासो विपिना यते प्रिय सखी मालापिजा
लायते । तापेपि ससितेन दावरहन ज्वाला
कलापा यते । सापि तद्विरहेण हन्त हरिणी
रूपायते साकथे केदर्पेपि यमायते विरत
यत् शार्हल विक्रीडिते ॥ राग योथारनाल
॥४॥ अष्टपदी ॥ सत विनिहित मणि सरस

तत्र दारे ६ ध्यान लयेन प्रः परिकल्प्य भवेत्
सजीव उद्योगे । विलपति हसति विषी दति रो
दति चंचति मेचति तापे १० । श्री जयदेव भण्ण
तमिदं अधिकं यदि मनसा नट नीये । इति
विरहा कुल वल्लव युवति सखी वचने पठ
नीयम् ॥ ६ ॥ शशशेखर तान ॥ ४ ॥ श्लोक ।

राजे
श्री

मिव विगलितनाले। ४। नयन विषय मिव
किशलय नले। कलयति विहित इनाश
नकले। ५। नजतिन पाणि नलेन कपोले
बाल शशिन मिव साय मलोले। ६। इरि रि
ति इरि रिति जयति सकामे। विरह विहि
त मरणे वति कामे ७ श्रीजय देव भणित

दारे सा मन्त्रे कृशानन विवभारे राधिका विर
हे नवकेशव । शार सम स्था मयि मलयज
पेके वृष्यति विष मिव वृष्यति सशोकम् ॥२॥
असित पवन मनपम परिणाहम् ॥ सदन
दहन मिव दहति सदाहम् ॥३॥ दिशि दि
शि किरति सजल कणा जाले ॥ नयन नलिन

रा. रा.
गी

प्रसीलति पतत्ययाति मूर्च्छत्यपि पतावत्यत
न ज्वरे वरत न जीवेन्न किन्ते रसा त्सर्वेय प्रति
म प्रसीदसि ततस्त्यक्तो तस्या हस्तकः २६॥
देदप्यं ज्वर संज्वरा तरतनो राश्वर्य मस्याश्चिरे
चेत अंदन चंद्रमः कमलिनी चिता स से
नाम्यति किन्तं सोति रसेन शीतल तरे त्वा

मिति गीते ॥ सावित्रकेशव षट्मप नीते
राग मंगार नाल ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ सरत्तरे दे
वत वैद्य ह्य त्वदेग संगे स्तन मात्र साध्याम
विमल वाथो करुषेन राधा मयेन्द्र वज्रा दधि
दरुणोसि ॥ २५ ॥ सा रो मो चति सीत्करोति
विलपत्यत्कम्यते नाम्यति ध्यायत्यद्भुमति

रा. गो.
गी.

नेपथ्यो चित नीलरत्न मवती भारवतारोत
न ॥ स्वच्छंद व्रज खंदरी जन मन लोक प्रदोष
धिरं केश येन भूम केत रत्न त्रिदेवकीने
दनः ॥ २५ ॥ अथ तो ~~मन्त्र~~ जातो चिरमन्त्र
रक्तो लता गृहे दृष्टा ॥ तच्चिरिते गोविंदे मन
सिज मन्दे सखी प्राह ॥ ३॥ अंगोष्ठा भरणं क

मेक मेव प्रिये ध्यायेती रहस्यिता कथ मणि
लीला तणे प्रणिनि ॥ २७ ॥ तणा मणि विर
रुद्रान मेहे नयन निमीलित विन्नया न
पादे । ध्याति कथमसौ रमाल शाखो विर
दिदेहा दिलोक प्रणितामो ॥ २८ ॥ यथा
मय मखार विर मथ पसे लोक मौलस्यली

शुभो-
गी

ऊलेया हरेती । तव कि तव विथाया मन्दकेद
पे चित्तप्रस जल निधि मया थान लया म
गान्ती ॥ ३३ ॥ शया शोथार ताल ॥ ४ ॥ अष्ट
पदी ॥ पश्यति दिशि दिशि रहसि भवेते
त्वद थर मथुर मथुनि पिवंतम ॥ १ ॥
नाथ हरि सीदति शयावासगृहे ॥ त्वद

येति वदुः पञ्चेपि सेवारीणि प्राप्तेन्याम्परि
शेकने दिवन्ते शय्योचिरे थायति ॥ ३३ ॥
कल्प विकल्प तल्लयन्य सेकल्प लीलाश
न । व्याशालापि विना त्वया वरतनर्नवा
निशेनेयति ॥ ३४ ॥ विषल पुलकपालिः
शीत सीत्कार मलर्जिततज रिमका ऊर्वा

रा. गे.
गी.

सखी मनवारम् ॥ ५ ॥ स्निष्यति चैवति जल
धरकल्पम् ॥ हरिरूपगत शति तिमिर मन
लो ६ भवति विलेखित विगलित लज्जा । वि
लपति रोदति वासक सज्जा ॥ ७ ॥ श्रीजय दे
व कवेरिदमदितम् ॥ रसिक जनननवता
मपि मदिते ॥ ८ ॥ रागागोथारनाल ॥ ९ ॥ श्लोक

भि शायण रभसेन वलेती पतति पदति कि
येति वलेती ॥ २ ॥ विहित विशद विष किशल
य वलया । जीवति परमिह नव रति कलया
॥ ३ ॥ मन्दर वलोकित मन्दन लीला मयुरि
षु रहति भावन शीला ॥ ४ ॥ त्वरित सपे
ति न कथ मभिसारम् ॥ इति विनि वदति

रा'गो'
गो'

श्व स्फटलोत्तन श्रीः ॥ वेदावनोतर मदीपय
देश जालै दिक् सेंदरी वदन चंदन विंड रिडः
॥३४॥ प्रसरति शशायर विवे विहित विले
वेच मायवे ॥ विभुश विरचित विविध विला
पे सा परिता पेच कारेचैः ॥३५॥ विरह पा
ए मरारि मरारि मखोबुज युतिरयेतपिवेद

किं विश्राम्यसि क्लृप्तं भोग्यं भवते भौडी रभूमी
रुहे । भ्रातर्यासिन दृष्टि गोचर मितः सानंदने
दास्यदम् ॥ राधाया वचने तदध्या माखान्ने
नेदोति के गोपतो गोविंदस्य जयेति सायम
निधिः प्राशस्य राभी गिरः ॥३३॥ अशान्त
रे व कटला कल वर्त्तपाता सेजात पातक

नो विधुः नीव तनोति मनो भवः सहदये हृद
ये मदत वायाम् ॥ ३६ ॥ मनो भवा नेदत चेद
ना तिल प्रसीदो दक्षिणा मेव वायताम् ॥ न
जेजगत प्राणा विथाय मथवे प्रो मम प्राणा
हो भविष्यति ॥ ३७ ॥ वायो वियेहि मल
या तिल पेव वाणा प्राणात् गृहाण नगदह

रा-गो-
गी

कृत कामिनी ॥ ४ ॥ अरुह कलयासि वलया
दिमणि भूषणे ॥ हरी विरह दहन वर नेन
वक्र दूषणे ॥ ५ ॥ कसम सकसार तनमतज
शर लीलया ॥ स्वगणि हृदि हलिया मति
विघ्न शीलया ॥ ६ ॥ अरु मिह निवसा
मिन गणित वनवेतसा ॥ स्मरति मय

वेचिता । यद्वन्न गमनाय निशि गमन मपि
शीलिते । तेन मम हृदय मिद ममम शरीर की
लितम् ॥ २ ॥ मम मरण मेव वर मति वि
तथ केतना किमिह विम हामि विरहानल
मवेतना ॥ ३ ॥ मा मरह विधर यति मथरम
ध्यामिनी । कापि हरि मन भवति कृत सु

रा-गे
गी

अये सर्व कथा भिरत्य मनसो वित्तिष्य वत्तोचले
राधाया स्तन कोरको यदि मिलनेत्रो हरिः पा
तवः तत्किं का मापि कामिनी मभिस्ततः
किं वा कला केलिभिर्वन्द्यो वेषु भिरत्य का
रिणि वना भर्णी किमद्वाप्यति कोतः
कोत मन्त्र मन्त्र मापि पथि प्रस्था

सूदनो मा मपि नवेतसा ॥१॥ हरि चरण शर
ण न्यदेव कवि भारती ॥ वसन्त हृदि सुव
ति दिव कोमल कलावती ॥२॥ रागा गेथा
र नाल ॥४॥ श्लोक ॥ त्वाम प्राण मयि
स्वयेवर परो लीरो दे नीरो दे ॥ शंके संदरि
काल कूट मपिवन मूढो मयानी पतिः

रा'गो'
गी'

चित्तवेषा गलित कसम दय विललित केशा । १ ।
कापि मथरि प्रणा विलसति प्रवति रथिकयु
णा ॥ हरि परिरेभणा वलित विकारा । कुच
कलशो परि तरलित हाश । २ । विचल दल
क ललिता नन चेश । तदधर पानरभसक
त तेश । ३ । चंचल कादल ललित कपो

तमेवात्तमः सेकेती कृत मेज वेजललता
ऊंजेपि यन्नागतः ॥४०॥ अथागतो माथ
व मन्तरेण साखी मिमेवीक्ष्य विषादमूको
विशोक माना रमिते कथापि जनार्दने दृष्ट
व देतदाह ॥४१॥ राग गंधारगीतगोविंद
ताल ॥४॥ अष्टपदी ॥ स्वर सम शेवत विर

रागो.
गी.

श्री जयदेव भाणत हरि शमितम् ॥ कलिकल
वे जनयन्त परिशमिते ॥ ८ ॥ राग गंधार ताल
॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥ सोरठा ॥ समुदित मदने रम
णी वदने खेवन चलितार्थरे । मृग मद तिलके
लितवति सफलके मृगमिव रजनीकरे ॥ १ ॥
रमते यमना शलिन वने विजयमगारि रथ

ला । साविरित रशत जचन गति लोला ॥ ४ ॥
दयित विलोकिता लजित रसिता ॥ वडवि
थ कजित रति रस रसिता ॥ ५ ॥ विपुल पुल
क पृथ्वे पृथ्वे भगा । ससित विमीलित वि
क सदनेया ॥ ६ ॥ प्रमजल कणा भर सभगा
शरीरा । परिपति तोरसि रति रणा थीरा ॥ ७ ॥

दा'गे'
गी'

ले करतल नलिनी दले । सकीत वलय म्मथ
कर निचये वितरति हिम शीतले ॥४॥ रतिर
ह जचने विपल पचने मनसिज कनकासने
मणिमय रशने तोरण हसने विकरति
कृत वासने ॥५॥ चरण किसलये कम
ला तिलयेन एव मणि राणा पूजिते ॥

ना। चनचय रुचिरे रचयति विकरे तरलित त
रुणा नने ऊरुवक कसमे चपला सखिमे र
ति एति मया कानने। १२। चरयति सचने क
ह प्रयागाने मया मद रुचिरुषिते। मणि
सर ममले नारक पटले नखपट शशि भू
षिते। १३। जित विस शकले मड भज प्रया

रा. गो.
गी.

वदे॥६॥ राग गंधारताल॥३॥ अष्टपदी॥
अतिस तरल कुवलय नयनेन तपति न सा
किमलये प्रायनेन॥१॥ सखिया रमिता व
न मालिना॥ विकसित सरसि जललित
मुखेन॥ स्फटति न सामन सिज विषाखे
न॥२॥ अस्त मथर तरल वचनेन॥ ज्व

वह्निरप्यवशो याचक भयं जनयति हृदि
योजिते ॥६॥ रमयति सभ्रं कामपि सह
शे खिलहलथर सोदरे ॥ किमफलं सर्वं स
विर मित्रं विरसं स्तदं सति विटपोदरे ॥७॥
इह रस भगाने मधुरिष एव सेवके ॥ कलि
युगं चिरं नवसत्त उरिते कविन्द्य जयदे

श-गो-
गी-

न जनवर तरुणो न वरुति न सा रुज मति करु
णो न ॥ ७ ॥ श्री जय देव भाणि न वचने न प्रवि
शत हरि रपि हृदय मने न ॥ ८ ॥ शया गोथार
नाल ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ नायातः सखि निर्दयो
यदि शठ स्त्वन्हूति किं हयसे । स्वच्छंदम्बुज
वत्सलः सर मते किन्तु ते दृष्टो ॥ पश्या

सति नसा मल यज पवनेन ॥ ३ ॥ स्थल जल रु
ह रुचि कर चरणेन ॥ लहति नसा हि सक
र किशोरेन ॥ ४ ॥ सजल जलद समुदय रुचि
रेण ॥ दहति नसा हृदि विरह भरेण ॥ ५ ॥ क
नक निकष रुचि श्रुति ववनेन ॥ यसि नि
न सा परिजन हसितेन ॥ ६ ॥ सकल भव

रा.गो.
गी.

हे केशि मदन मदारे ॥ रमय मया सर मदन म
नोरथ भावि तया स विकारे ॥ प्रथम समा गम
लजितया पट चाट शनै रन कले म्भु मथ र
स्मित भाषितया शिथिली कृत जघन उ
कलम् ॥ २॥ किमलय शयन निवेशि
तया चिर मरसि समै वशयाने कृत परि

यप्रिय संगमाय दयितस्या कृष्णमाणे शुभैरु
क्केदार्ति भयादिव स्फुट दिदे चेत्तः स्वये यास्य
ति ॥ ४२ ॥ रागो यार ताल ॥ अष्टपदी ॥
निभस्त निकेज गदहे गतया निशि रहसिति
लीय वसने चकित विलोकित सकल दि
शा रति रभस वशेन हसतम् ॥ ५ ॥ सखि

रागो
गी

वनस्तन भारे ॥५॥ चरण रणित मणि नूपुरया
परि हरित स्रज वितानम् ॥ सावरवि श्रेष्ठ
ल मेखलया सकव ग्रह चैवन दानम् ॥६॥
रति साव समय रसाल मया दर सकलि
त वदन सरोजम् ॥ निस्सह निपतित तन
ल नया मधुसूदन मदिन मनोजे ॥ ७ ॥ श्री

रेभणाचेवनया परिरभ्य कृताथर्याने । ३ । अल
स निमीलित लोचनया पुलकावले ललित
कपोलम् ॥ अमजल शकल कले वरयावर
मदन मदादति लोले ॥ कोकिल कल रव
कृजितया जित मन मिज तेव विचारे ॥ स
य कसमा कल केतलया नाव लिखित

श.गो.
गी.

ये एते तद्विन्ता यस्तदी सिद्धे मद्ये किन्तो वाङ्
र्तो एतन्तो स्तन्तो तभतः श्रेयोसिद्धेसहिषः॥
॥४३॥ अथ कथं मयि यामिनीं विनीय स्म
रं एतं जर्जरितापि सा प्रभाते ॥ अन्व नय व
चनम्बदन्ते मये प्रणत मयि प्रिय माह
साभ्य मयम् ॥४४॥ शया गेथारत्नाल ॥

जय देवभाषित मिदमतिशय मधु रिषतिथ
वन शीलम् ॥ सखसत्केहित राधिकया क
षिते वित नोत्त सलीले ॥ ८ अष्टपदी ॥ राग
मंथावताल ॥ ॥ श्लोक ॥ वृष्टि व्याकुल
मोकुला दनदशा उद्धृत्य गोवर्द्धने विभुद
लव संदयीभिः राधिका नेदा चिरे वृत्तिः द

श्री
श्री

न विलोचनं चैव न विरचितं नील मरुपे दश
न वसनं मरुगो नव कस ननोति नव रत्न
रूपम् ॥२॥ वष रत्न हरति नव सार संगे र
त्न रत्न रत्न रत्न रेखे ॥ मयकत शकल क
लित कल थौन लिपे रिव रति जय लेख
म् ॥३॥ चरण कमल गल दलक क सिक्त

तात् ॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥ रजति जनिता गुरु जाग
रसा कसायित मलस निमेषे वहति नय
द नन राग मिव स्फाट मदिता रसा भिनिवे
शे ॥ १५ ॥ याहि सपथव याहि केशव सावदकै
तदकादम् ॥ नामन सर सर सीरुह लो
चद यातव हरति विषादम् । कजल मलि

रा. गो.
गी.

कथं मय वेत्तयसे जन मन गानम सम शरज्ज
र हनम ॥ ६ ॥ अमति भवान वला कवला
य वनेष किमत्र विचित्रं प्रथयति पूतनि
कै वदय वय निर्दय बाल चरित्रम ॥ ७ ॥
श्री जय देव भाणान रति वेचिन खेडि
न सुवति विलापम ॥ शृणुत सदा

सिंदे तव हृदयसुदारे ॥ दर्शयतीव वहि सर्दन
हुम नव किसलय परिवारम् ॥ ४ ॥ दशान
पदेभव द्युगतात्मस जनयति चेतसि वि
दम् ॥ कथयति कथ मय नापि मया सह
तव वपुरेन दमेदम् ॥ ५ ॥ वहि विव स
लिन तरेतव क्लृप्त मनोपि भविष्यति नूनं

शुभो
गी

पद्मा पयोधर तटी परि रश्मि लय काश्मीर
मदित मयो मधुसूदनस्य ॥ वक्ता नरा
ग मित्र खिलद नेग खिद स्वदास्य पूर मन
पूर यत्न प्रियम् ॥ ४६ ॥ अत्रान्तरे मरु
ण रोष वशा मसी मनिः श्वास निष्का
ह मांवी समाली मपेत् सखीदमी ।

मधुदेविबुधा विबुधालय नोपि ॥८॥ अष्टपदी
राग गंधार ताल ॥३॥ श्लोक ॥ तवेदे एषेसाः
प्रसर दनराग म्वहिरित प्रिया पाद लक क
रित मरुणा योति हृदयस्मसाय प्रख्यात
प्रणय भर भंगेन कित वल्लदा लोकः
शोका दपि किमपि लज्जा जनयति ॥४५॥

श.गो.
गी.

शेरि मयि निर्देय देत देश दोर्वलि वेथनि
विड सलव पीडनाति चेदि त्वमेव मद मेव
य पेचवाण चोडाल कोड दलना दसवः
प्रयोज ॥५॥ शाशि मति तव भाति भेय
रभर्षव जव मोह काल कोल सणी ॥
तड दिति भय भेजनाय सुनो त्वद थरही

हित साखी बहने दिनाते सानेद गद्गद पदे
श्री दिखवाच ॥ ७ ॥ परि हर कता तेक शे
को लया सतते जन जन जचनया कोते प
सुनव काशानि विशति वितनो रमो यन्यो
नकोपि समानरे प्रण यिनि परी रम्भा
रम्भे विथेहि विथेयनाम् ॥ ८ ॥ मय्ये वि

शुद्धो-
गी-

सि यदि किं चिदपि दत्त रुचि कौमदी हरति
दरति मिय मति चोरम् ॥ स्फुर द्युत लोथवे
नव वदने चेद्भा रोचयति लोचन चकोरे
॥ प्रिये कान्त शीले मेव मयि स्नानमविदाने
सपदि मद नानलो दहति मम मान मेदेहि
सख कमल मय पात्रे । सत्यमेवासि यदि

यस्यैव सिद्धि मेतः ५- व्यययति ह्यमौने
तन्निष्ठ पेचय पेच मेतहणि मधुरा लापे स्ना
मे विनोदय दृष्टिभिः समीवि विमलवी भा
वलावहि मेवम मेवमो ह्यम मति प्राय स्त्रि
म्य मय्ये प्रयोय मय स्थितः ॥ यगमेथा
द लाल ॥ ३ ॥ गीतमोविद ॥ प्रष्टदी ॥ वद

श'वो'
गी

नीलनलि नाभ मपि तन्निवलोचने थारयति
कोक नद ह्ये ॥ कसम शर बाण भावेन
यदि रेजयसि कल मिद मेत दन ह्यम ।
४ ॥ सुदत्त कच केभयो रूपरि मणि मे
जरी रेजयत्त नव हृदय देशे ॥ रसत्त र
सनापि नव चन जचन मण्डले घोषय ।

सदति माय कोपिनी देहि खर नखर शरचा
तम । चटय भज वेधने जनय दद विरुनेमे
नवा भवति मरुजने ॥२॥ त्वमसि समभ
हो त्वमसि सम जीवने त्वमसि समजल
यिरत्नम् ॥ भवत भवतीह मणि मृगतमन
शोधिने तत्र सम हृदय मति यतनम् ॥३॥

रागो
गी

कदना नलो हरत नदयाहित विकारे ॥ १॥ ३
ति चंदल चाह पद चारु सर वैरिणो रायिका
माय वचन जाते ॥ जयति पद्मावती रमणा
जयदेव कवि भावती भाणिन मनि शातम
राग योग्य गीत गोविंद ताल ॥ ३॥ श्लोक ।
वैष्णव युति बोध बोध बोध मधुर स्त्रिय मधुर

श.गो.
गी

वर्तते रुचिर चित्र लेखे अवा वस्ते विवय यौ
वने वससितन्ति पृथ्वी गता ॥५२॥ मूषत
दे यन्त्रयोगान् वेगितानि वाणाशनाः अ
वण पालि रिति स्मरेण ॥ तस्या मनेग जम्भ
जंगम देवताया मस्त्राणि निर्जित जगति
किमपितानि ॥५३॥ मूषापे निहताः कटाक्ष

कच्चविः गेडे चेडिवकास्ति नीलनलिन श्री
मोदने लोचने । नासान्वेति तिल प्रसून पद
वी कुंदाभ दंति प्रिये प्रायस्सन्नाख सेदया
दिनयते विश्वेश प्रष्ठा पुत्रः ॥५१॥ दृशौ तन
मदाल से वदन मिद सेदीपने गतिर्जन म
नो रमा विजित रेभ मूरुदये रत्नवकला

विशालो निर्मात मर्मवायो श्यामात्मा ऊदितः
करोत कवये भारोपि भारोचमे । मोहे तावदये
च तत्त्वितवते विनाथो रागावान् सहनः स्त
न मेदल्लसव कये प्राणो मम क्रीडति ॥ ५॥
मानिनी मानु विधे सदसो जयति सोपते ॥
सुखेण समहृतः श्रीमद्गोपालकथकिः १५५

श-गो-
गो-

फली ऊरुषे ऊच कलशे ॥२॥ कतिन कथि
न मिद मन्व पद मविरे ॥ मापरि हरि हर मति
प्राय रुविरे ॥ किमिति विषीद सियो दिषि
विकला ॥ वहसति शुवति सभा तव विकला
॥ जनयसि मन्वसि किमिति शुरु विदम ॥
शृणु मम वचन मनीहित भेदे ॥५॥ हरि

उ चर्चा विवे प्रीतांश्च स्तपनो हि मेकत वहः
क्रोश सदो यातनाः ॥ ५० ॥ यथा रोथार शु
ष्टपदी ताल ॥ ३ ॥ हरि रमि सवति वरति
सुष्ट पवते किम परमयिक सांवि सति म
दते ॥ १ ॥ माथवे माकुरु मानि निमान मये ॥
ताल फला दपि गुरु मति सरसे ॥ किम वि

रा-गे-
गी-

वचन विष विद सखी सेवा सोये सखी वहिमा
निलो विष मिद सखा शशि र्यस्मिन् इतोति
मनो गते ॥ हृदय मध्ये तस्मिन्नेव पुनर्व
लते दलान् कवलय दृशा स्वामः कामो
निकाम निरेकशः ॥ ५६ ॥ गता यति शृणा
ग्रामे भामे श्रमा दपि नेहने वहति चप +

न मन्त्राय निदेशे ॥ ५ ॥ स्थल कमल गोजये
मम हृदय येनने जजि नरित रेवा परभायम
भगा मन्त्रा वाणि कर वाणि चरण हय
सुख लक्ष्म लक्षक शयाम ॥ ६ ॥ सुख गार
ल खेडने मम शिरसि मेडने देहि पद प
लव मदार ॥ ज्वलति सयि शरणा मदन

रा.गे.
गो

दिमे दिगे तत्तण्णत्के सप्पालस भूजित मि
ति व्या मोर कोलाहलः ॥६॥ सरुति मन्नन
येन प्रीणयित्वा मगादी गत वति कृतवेषे
कषावे कंज शय्यो रचित रुचिर भूषो दृष्टि
मोषे प्रदोषे स्वरति निरव मादो कापिरा
थो जगाद ॥६॥ ॥ सामो द्रव्यति वक्ष्य

विनोषे दोषे विमंचति ह्यतः ॥ सुवतिषु बलत
लो क्लृप्तो विहारिणा मोविना पुनरपि सतो
दामे कामे करोति कयोमि किं ॥ ५५ ॥ श्रीति
मस्तनतो हरिः कुवलयया पीडेन सादे रणे
रथा पीन एयोथर सारणा कृत्क मीन मेमे
हवान् ॥ यत्र स्थिति मीलति दणामथ

श. गं.
गी

मनो रथेन च समे शाने तमः सो दत्तो को कानो
करुणा स्वनेन सदृशी दीर्घा मद भ्यर्त्तना न
समये विफले विले विले नमसौ रम्यो मि
शारत्तणः ॥ ६३ ॥ आश्लेषा दन्त वेवता दन्त
नालो लोला दन्त स्वात्तज शोदोथा दन्त से
धुमा दन्तता रेभा दन्त प्रीतयोः प्रत्यार्त्त

ति प्रिय कथो प्रत्येग मास्तिगानै श्रीति यास्य
ति रेस्यते साविस्मा गत्येति विन्ताकृतः ॥
सत्त्वो पश्यति वेपते प्रसक्तय त्यानेदति स्वि
यति प्रत्यङ्गति मूर्च्छति स्थिर तमः पुंजे
निकेजे प्रियः ॥६२॥ त्वदाम्येन समं सम
प्र मथना तिरमोश्च रस्तेगानो गोविंदस्य

रा.गे.
गी.

धोतनील निवोल चारु सहशे प्रयोग मालि
ने ॥६५॥ काश्मीर गौर वषा मभि सारिका
ए ॥ मावदशेव मभिनो रुचि मेजगीभिः ॥
एतत् तमाल दलनील तमेतमिष्टे तस्येव
मिष्टे निकषो पलनान्ननोति ॥६६॥ राग
गंधार ताल ॥३॥ अष्टपदी ॥ विर चित्त वा

अतयो भुंक्तानि त्रयोः संभाव्यो जीवतो
इत्येतो विह कोन कोन तमसि वीरविमि
शोरसः ॥ ६४ ॥ अतः निर्दिष्टं संजने अतः
ये स्तापिष्ट यदावली मूर्द्धिण्याम सवोजस
स ऊचयोः कस्तुरिका पत्रकम् । अर्तो नाम
मि सार सत्वर हृदो विषड् मि ऊजे सति

रा-गे
गी

सुख रमणीय तरे तरुणी जन मोहन मधुरि
प्र रावे ॥ कसम शरासन शासन वेदिनिधि
क निकरे भज भावे ॥ ३ ॥ अतिल तरल कि
सत्य निकरेण करेण लता निकरेवे ॥ प्र
ण दिव कर मोरु करेति गति प्रति मेच वि
लेख ॥ ४ ॥ स्फुरित मन्त्रे तरे वशा दिव

इ वचन रचने चरणो रचित प्रणि पातम ॥ सप्र
ति मेजल वेजलसी मति केलि शयन मन
यातम ॥ १॥ मय्ये मथ मयन मन्गन मन
सर राथिके ॥ चन जचन स्तन भार भरे दर
मन्यार चरण विहार ॥ सार्वरित मणि मेज
री सपेहि विथेहि मयल विकारम ॥ २॥

रा'गे' लय कर्णानै रव बोधय हरि मणि निज गति
गी' शीलम् ॥७॥ श्री जयदेव भणित मयरी क
नहार सुदासित वामम् ॥ हरि विनिश्चित म
नसा मयि तिष्ठत केद तदी मविरामम् ॥ द।
राग गंधार जाल ॥३॥ श्लोक ॥ सा मान्द्रस्य
ति वक्षति प्रियकथो प्रत्येग मा लिखने श्री

सुखिन् इति परिदेये ॥ एह मनो हर हर विम
ले हर थार ममे कच केभस ॥ ५ ॥ अथिगतम
खिल साखी भिरि देतव वष रपिरति राग स
जम् ॥ चेदि राणात रशाना रव दिदिम मभि
सर सम लजम् ॥ ६ ॥ सर शर सभग सवेन
साखी सवलेव करेण सलीलम् ॥ चल व

शु'गो'
गो'

शमन विलंबन मन सरते हृदयेषु ॥५॥ थीरस
मीरे यमना तीरे वसति वने वन माली ॥ गोपी
पीत पयोधर मर्दन चंचल कर युग शाली ॥
नाम समेते कृत संकेते वादयते मृदवेणु ।
वद्ध मन्वते तन्वते तन संगत पवन चलि
त मपिरेणुस ॥२॥ पतति पतरे विचलित पत्रे

ति या स्यति वे सति सीति समा यातेति चित्ताक
लः ॥ सत्त्वा स्य सति वेपते पुलकय त्या नन्द
ति स्थियति प्रसन्नकृति मूर्च्छति स्थिरतमः
पुजे निकृजे प्रियः ॥ ६६ ॥ रागा रोथाय ताल
॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥ रति सत्त्वा सारे गत मभि सा
रे मदन मनो हर वेषम् ॥ नक्र निने विनि

रा-गे
गी

परीते राजसिख कृत विष्णुके ॥५॥ विगलित
वसनं परिहृत दशानं चटय जघने मणिताने
किमलये शायने पंकज नयने निधि मिवहर्ष
निताने ॥६॥ हरि रमि मानी रजति दिदानी मि
य मणियाति विदामम ॥ ऊरु मम वचने म
नर रचने पूरय मय रिषकामे ॥७॥ श्री जयदे

शेकित भवउपयानम् ॥ र्वयति शयने सच
कित नयने पश्यति तव पस्यानम् ॥ ३ ॥ म
खरमथीरे त्यज मेजीरे दिष मिव केलि सलोले
चल सखि केजे सति मिर पुजे शील य नील
निचोलम् ॥ ४ ॥ अरिसमारे रुप हित हारे च
न श्व तरल वलाके ॥ तरि दिव पीतेरति वि

रागे
गी

समस्त सभगः सत्त्वगुणधर्मैत कृतार्थता
म॥७॥ हाय वली तरल कांचन कांचिदाम
मेजीर कंकण मणि कृति दीपितम् ॥ हारे
निजेजतिलयस्य हरीं निरीक्ष्य व्रीडा वतीम्
य सखी निजगाद शयाम् ॥ ६८॥ रागगे
थारताल॥३॥ अष्टपदी ॥ ॥ मेज तर

व कृत हरि सेवे भगति परमणीयम् ॥ प्रस
दित हृदये हरि मपि सदये नमत्त सकृत्त क
सनीयम् ॥ ६ ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥ श्लोक
समय चकिर्ते विसृजेती दृशेति मिर पथि
प्रति कृतं मङ्गः स्थित्वा मन्द पदानि वितन्वे ।
नी कथमपि इहः प्राप्ता मेरी रनेगी तरेगिभिः

रा.गं.
गी.

लस रति वलितललित गीते । ४ । वितत वद्ध व
लि नव पल्लव चने । विलस विर मल सपीन
जचने । ५ । मथ सदित मथप कुल कलित रा
दे । विलस सदत रस सरस भावे ॥ ६ ॥ मथर
नर पिक तिकरति नद सावरे । विलस दश
न रुचि रुचिर शिखरे ॥ ७ ॥ विहित पद्मा ।

केजतल केलि सदने विलस रति रभ सहसित
वदने ॥१॥ प्रविश राये माधव समीप मिह न
व भवद शोक दल सायन सोरे । विलस कच
कलशा तदल सोरे ॥२॥ कसम चय रचित सु
चि वास मोहे ॥ विलस कसम सकुमार देहे
॥३॥ चल मलय वन पवन हरभि शीते वि

रा-गो-
मी-

य वेदा महे । ६४ ॥ अहमिह निवसासियाहि
राया अननय सद्वचने चानयेयाः ॥ इति म
शुविषणा सावीतिपक्ता स्वय मिद मेत्य अ
सर्जगाद रायाम । ७० । त्वाचिनेन चिरे बहेन
य सति श्रोतो भटशेतापितः केदर्येणाचपा
न मिच्छति सथा सम्वाथ विवा यरम् ॥ अ

वती साव समाजे ॥ भगति जयदेव कविगज
राजे ॥ ६ ॥ अष्टपदी ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥
श्लोक ॥ सात्वा नंद प्रेदरा दिदि विषहृदै रमेदा
दरा दानमै मेऊदेद नील माणिभिः सेदशिनेदी
वरम ॥ खलेदमकरेद सेदरा गलनात्दा कि
नी मेऊरे श्री गोविंद पदार् विंद मशुभस्कंदा

रा. गे.
गी.

नये तारयति तयोः ॥ तदानीं राधायाः प्रिय
तमः समालोकः समये यथातः खेदात्तु यम
र यिव हर्षात् निकरः ॥ १३ ॥ भजेत्या स्तुत्या
ते कृतं कण्टकया इति विहितः मित्रे याने
गोहाद्विद्वत् हिताली परिजने ॥ प्रियाये
यशेणाः स्वरः शरः समा कृतः सभगम्

शो कंत दले करुताण मिह भूतेप लक्ष्मी लव
क्रीते दास श्वोष सेवित पदो भोजे कृतः संभ
सः ॥ ७१ ॥ सास साधससा नेद गोविंदे लो
ल लोचन सिंजान मंज मंज मंजीरे प्रविवे
श निवेशतम ॥ ७२ ॥ अति क्रम्या णोरो प्रव
ण पथ पर्यंत गमन प्रवासे नैवात्तणो सखल

रागा
गी

इषे वषे वद वदन मनेग विकारसे ॥ हार ममल
तर नार सरसि दयते परिलेख्य विहरम् ॥
स्फुट तर फेन कदम्ब करेवित मिव यमना
जल हरम् ॥ २॥ श्यामल मडल कलेवर मे
उल मयि गत गौर उहलम् ॥ नीलतलि
न मिव पीत पद्म पटल भरवल यित म्

सलजाया लजा वगमदिव हरे मया दृशः ॥ २४ ॥
याया मेथार ताल ॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥ राधावद
न विलोकन विकसित विविध विकार वि
भंगम् । जल निधि मिव विश्व मेडल दर्शन
तल्लित तेरा तरेगाम ॥ १ ॥ हरि मेकर स
विर ममि ललित विलासम् ॥ सादृशं यरु

श-गे-
गी

किरणा छुरितो दरजल थर सेंदर सकसमके
शे निमिशे दित विथ सेंदल निर्मल मलयज
निलक निवेशे । ६ । विपुल पुलक भरदेतारि
ते शति केलिकला भिरथीरे । मणि गणकिर
ण समूह समज्वल भूषण स्वभग शरीरम
७ ॥ श्रीजयदेव भणित विभव दिशणी ह

ले॥३॥ तरल दृग्वल चलन मनोहर वदनम
नित्यरति श्याम । स्फट कमलोदर विलित
विजत श्यामिव शरदिन श्याम॥४॥ वदन
कमल परिशीलन मिलित मिश्रि सम केद
ल शोभन॥ स्मित रुचि कसम समलसि
ताथर पलव कृत रति लोभन॥५॥ शशि ।

रा.गे.
गी.

सर्वोच्च हरिः प्रियाम् ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥ अष्ट
पदी ॥ किशलय शयने तले करु कामिनि च
रणा कमल विनिवेशे ॥ तव पद पल्लव वैरण
राभव मिद मन भवत ह वैशाम् ॥ १ ॥ क्षणमथ
ना नाययान् मन्त्रयान् मनुसव रायिके ॥ अद-
कर कमलेन करोति चरण मन्त्रायाग मिता ।

न भूषण भारे ॥ प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं
सर्विरे सकृतो दयसारे ॥ ६ ॥ प्रष्टुपदी ॥ गग
शेयारतात् ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ गतवति सखी हे
दे मेदत्रया भरतिर्भर सर पर वशाकृतस्फी
तस्मिन् स्नायिता ययाम ॥ सरस मलसे दृष्टा
दृष्टा मूर्ध्नि व पलव प्रसर शयने तिष्ठिमादी

श.शे.
गी.

शो विनिवेशय शोषय मनसिज नायम् ॥४॥
मथर स्यात्स मापनय भासिति जीवय म
त मिव दासम् ॥ त्वयि विनि हित मनसे विर
हानल दय वपुष मविलासम् ॥५॥ शशिम
वि मावय मणि रशनायण मन यण केढ
तिनादम् ॥ अति सुगले पिक रुत मम श

सि विहरे ॥ तणा मुप कुरु शयनो यदि मामिव
नृपु मन्वगाति शूरे ॥ २॥ वदन स्रथानिधिग
लित मन्दत मिव रचय वचन मन्वकले ॥ वि
रह सिवापन यामि पयोथर रोथक मुरसिड
कले ॥ ३॥ प्रियपरिरेभगा रभस वलित मिव
लकित मतिडखापम ॥ मधुरसि कचकल

राशे
गी

ताल ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ प्रहृष्टः पुलको करेण दिवि
अश्लेषैर्निमेषेण चक्रीडा कृत विलोकिते धर
संथा पाने कथा नर्मभिः श्रान्तेदाभिगमते स
न्मय कला युद्धेण यस्मिन् न भू उद्धतः सतये
वैभूत सरता रेभः प्रिये भावकः ॥ ६ ॥ मीलह
ष्टि मिलनकोल पुलके सीत्कार थारा वशा द

मय विरादव सादम् । ६ । मामति विफल रुषावि
फली कृत मव लोकित मथुनेदम् । मीलति
लजित मिवन यने तव विरम विस्मयति एव
दम् । ७ । श्रीजयदेव कवेरिद मनपद निगदि
त मथुरिष मोदम् । जनयत रसिक जनेषु म
नोरम रति रस भाव विनोदे ॥ राग गेथार

राशे मलितः कचेथर मभस्यनेन संमोहितः कोतः॥
कामपि तन्निजापत दह्ये कामस्य वामायातिः
७८॥ वासो^{माशं}के रतिकेलि संक^{सं}सरणारेभातया। सा
हस प्राये कोत जयाय किंचिदपरि प्रारेभियन्तश्च
मा^{नि}ति स्पेदा जवनस्यली शायिलिता देविलि
रुत्कमिपते वक्षो^वत्कीलितं मत्ति पौरुष

यत्ता कलकेलि काक विक सदेता प्रथो ताथ
रे सा सोत्ताम्य ययोथरे भ्रशापरि खेगात करेगी
दृशो र्षोत्कर्ष विमुक्त निः सहननो र्थन्यो
ययत्तातनम ॥ ७७ ॥ दोर्ध्या से यमितः प
योथर भरेणा पीडितः पाणि जैस विहोदश
नैः सताथरषदः ओणी तदे नाहतः हस्तेता

रागो
गी

श्रोत्र मपि मेरुत वीक्षयानिज गाद निरावाधारा
या स्वाधीन भर्तृका । दश । इति मनसा निरादे
ते सुरतोते सानितोत विन्नागी राधा जगाद
सादर मिदमानेदेन गोविंदम् ॥ दश ॥ राग गे
धार लालतीन ॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥ करु यहु न
न्दन चन्दन शिशिरतरेण करेण पयोध

रसः स्वीर्णो कृतः सिध्यति ॥ ५४ ॥ तस्याः पाटल
पाणिजो कितमरो निश कषाये दृशो मतिर्ह
तो थरशोणिमा विललिता सस्तस्रजो मूर्ध
जाः कोचीदा मदरस्यो चल मिति प्रातर्नि
खितै दृशोरेभिः कामशोरेस्तद्वृत्तमभूत्य
सर्म्मनः कोलितम् ॥ ६० ॥ अथ कोते इति

शो-
गी-

मनसिज पाश विलास करे सभवेसतिवेषाय
जेडले ॥ ३ ॥ मरु चये रचयेत मपरि रुचि
रे सचिरे मम सत्तावे जित कमले विमले
परिकल्पय नर्म जत कमल केसवि ॥ ४ ॥
मयामदरस ललिते ललिते करु निल कमलि
क रजनी करे ॥ विस्ति कलेक कलेक ।

१॥ मृगा मदपत्र कमर मनोभव मेवाल कलश
सहोदरे ॥ १॥ निजगाद सायड नंदने क्रीडति
हृदया मेदने ॥ दयारुचन लेखित कजल
जलव प्रियलोचने प्रति कल मेजन मेजन
के रति नायक मोचने ॥ २॥ नयन करेगा
नरेगा विकामिति वास करे प्रति मेउले ॥

रा-गे
गी-

येदेव वचसि जयदे सदये हृदये ऊरु मंडने हरि
चरण स्मरण सत कृत कलि कलष ज्वर वि
डने ॥ ६ ॥ अष्टादी ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥
श्लोक ॥ वचय कचयोः पत्रे चित्रे करुष कपोल
यो र्चटय जचते कोची मेच सजा कवरी भ
रम ॥ कलय वलय श्रेणी पाणी पदे ।

मत्तानन विप्रमिन्न अम शीकरे ॥ ५ ॥ मम रु
चिरे चिकरे ऊरु मानद मानस जयज वाम
रे ॥ रति गलिते ललिते कसमा निशिखिदि
शिखिड कडामरे ॥ ६ ॥ सरसचने जचने मम
शेवर दारणा केदरे ॥ मणी रशना वसना
भरणाति शुभाशय वासय हृदरे ॥ ७ ॥ श्रीज

ग.गो.
मी.

जः ॥ ८५ ॥ पर्येको कृत नाग नायक फणाः
श्रेणी मणीनो गणो संक्रान्त प्रति विव संव
लनया विभ्रदिभ प्रक्रियाम् ॥ पादो भोरु
ह थारि वारिधि सजा मन्त्रो दिद्वः शतैः
काय ब्रह्म मिवाचरे नप चित्ती भूतो हरिः
पात्रवः ॥ ८६ ॥ तिर्यककंद विलोल मौलि

ऊरु नृपरा विति निगादितः प्रीतः पीतो वरो
पि तथा कथेत ॥ ६४ ॥ प्रातर्नील निचोलम
सुतसुरः सेवीत पीतोपके राथाय प्रकिते
तिलोका रसिति खेर सखी मेदले ॥ श्रीशते
चल मेचले नयनयो राथाय राथानवे खेर
खेर सखी वज्रोक्त जगदा नन्दाय नेदात्म

रागो
गी

न वेशे ॥ चलित द्यो चल चेचल मौलिकपोल
विलोल वसंतम ॥ १ ॥ रासे हरि मिह विहित
विलासे । स्मरति मनो मम कृत परिहासे ॥
चेद्रकचारु मयूर शिखिद्रक मेडल दल धित
केशाम् ॥ प्रचर प्रदेद यन रन रेजित मेडर
मदित सवेशे ॥ २ ॥ गोपकदेव विनेव वती

नरलोते सस्य वेशो हरजीति स्थान कता वथान
ललता लक्षणा संलक्षिताः प्रेम्णा कन्दलि
ताः समग्र्य मथरे तथा खलितौ तथा सरे
वो मथसूदनस्य ददम तेमे कटाक्षोर्मयः ॥
६० ॥ राया मथारताल ॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥
संचर दथर तथा मथर धति मखरित मोर

श-गं. हे ॥ पीत पयोधर यदि मर मर्दन निर्दय हृदय
कपाटम् ॥ ५ ॥ मणिमय मकर मनोहर कुंड
ल मेरितगंड सुदारे ॥ पीत वसन सनरात
सुति सवज स्या सर वर परिवारम् ॥ ६ ॥
विशद कदेव तले मिलिते कलि कलष भये
शमयेतम् ॥ मामपि किमपि तरेण दने

साव चेवन लेवित लोभे ॥ देय जीव मयरा
थर पल्लव मल्ल सित सित शोभम् ॥ ३ ॥ वि
पल पलक भज पल्लव दल्यित दल्लव सब
ति सहस्रम् ॥ कर चरणो दसि मणि गणाम्
षण्ण किरण विभिन्नत मिस्रम् ॥ ४ ॥ जलद
पटल चलदिउ विनिन्दक चन्दन विउलला

श'गे-
गी

श्रीगोदस्यते ॥ सामहोत्य विलज्जितसितसुधा
सुधा ननेकानने गोविंदे व्रज संदरी गणा वृ
ते यशसि दृष्टा मित्र ॥ दद ॥ अंतर्भोजन श्री
ति हृष्टेन चलन मंदम विसेसनः स्वव्याकर्ष
ण दृष्टि दृष्टेण महा मेरे ऊरेगी दृष्टो दृष्ट्यात
व ह्य सात दिविष उर्वीरुः लापते ॥ धेसः

गच्छन् मनसा वसयेते ॥१॥ श्रीजयदेव भ
गिन्त मति हेदा मोहन मयुविषु शृपे । हवि
चरणा स्मरणे प्रतिसेप्रति शरण वता मनव
पम ॥ दगायाग गेथार ताल ॥३॥ श्लोक ॥
हस्त स्वस्त विलास वेशम नञ् मूवलि म
दलदी हलेत्तारिह्योतवी हित मति हेदा

रागो
गी

माथीक विज्ञान भवति भवतः शक्यै कर्कश
सिद्धात्ते इत्येति केत्वा नमते स्त ससि दीर
नीर रसस्ते ॥ माकंदे कंद कोत्ता थर पर
णितले राक्ष यच्छेति यावद्भावे शृंगार सा
रसत मय जय देवस्य विष्णवचासि ॥ ५॥
श्री भोजदेव प्रभवस्य रामादेवी सत श्रीज

केसरियो व्यो इयत्तवो अयोसि वेशोरकः । २५ ।
यस्योयव कला स कौशल मन्त्र ध्यानेन यदैतवे
यत्त स्येगार विवेक तन्त्र मपि यत्कावेष ली
सागिते ॥ तत्सर्वे जयदेव पेडित कवेः ह्री
लेक तन्नात्मनः सानेदाः परिशोध येन
हृथियः श्रीगीत गोविन्दतः ॥ २५ ॥ साधी

रा.गो.
गो.

थार गीत गोविंद परिच्छेदः समाप्तः ॥ ॥

७८५
७८५

७५

यदेवस्य ॥ पद्मशरादि प्रियवर्ग कंदे श्रीगी
त गोविंद कवित्तमस्त ॥ जय श्रीविमलैर्म
हि इव मंगलकस्यैः स्वये सिंहदण्डिपि
णमदा मदित्त ३४ ॥ भज्या पीड क्रीडा हन
कवत्तया पीड करिणाः प्रकीर्णा हरिवेर्ज
यति भजदेडो मयसिस्त ॥ ५३ ॥ इति रामो

रा. हो. कृत सकृत् कामिनी ४ अरुह कलयासिवलया
गी. दिमणि भूषणं । हरि विरह दहन वहनेन वरुह
षणं ५ ऊरुम सकृत् तन मतन शरलीलया स
गपि हृदि हंति मामति विषम शीलया ६ अरुमिर
निवसामित गणित वन वेतसा । सरति मधु सूद
नो मामपि नवेतसा ७ हरि चरण शरण ।

रूप मयि यौवनं १ यामिहेक मिह शरणं सखीजन
वचन वंचिता । यदन्तगमनाय निशिगमन मयि शी
लितं । तेन सम हृदय मिदमसम शरकीलितं २
सम शरण मेव वरमति वितथ केतना ॥ किमिह
विसहामि विरहा नलमचेतना ३ मामहह विधु
रयति मधुर मधुयामिनी । कापि हरमनभवति

रा.रा. रागिनी रास कली ताल चर्वरी विस्रपद ॥

२६

मेरी मति रायिका चरण रजमै रहो ॥ इति अस्या

26

ई इहे निहचे कस्यो अपने मनमे थस्यो भूलिके को

उ कछू औरइ फल कहो ॥ अंतरी । अथ आभो

राः करम कोऊ करो ज्ञानइ अभ्यसो सकतिके ज

तन करि वृथा देखो दही ॥ रसिक बलभ चरण

न क्षत कीने ॥ रागिनी रास कली ताल २ ॥
विस्मयद माई गिरि धरन के गुण गाउं ॥ इति अ
स्थाई मेरे तो ब्रत पढ़ै निस दिन औरन रुचि उप जा
उं ॥ इत्येतदा । अथ आभोगः । विलन ओगन आ
उ लारिले नै कड़े दरसन पाउं ॥ केभ निद सदि
लग के कारण लाल चला गिर हाउं ॥

रा-रा-

२७

27

उदि वेदि मिलि सीत सौ मेरो हित वचन जिति भूलि
फेरे ॥ रसिक प्रीतम संग विहरि रस रेग सौ क्योन
इव अनेग को सवति वेरे ॥ रागिनी राम कली
ताल ^३ विसपद ॥ बेलाल तेरी पैजनीया ऊन
कैंदी ॥ इति प्रख्याई मायेवे तेरे सकट विराजेरी
ऊ गवाल लटकैंदी ॥ इत्येतरा । अथ आभोगः भईरी

कमल जरा शरण परियह मरु प्रष्टि पय फल
लहो ॥ रागिनी राम कली ताल चर्वरी वि
स्रपद मानिनी मानि जिति मोन पनो करे आष
पाइन परै नाथ तेरे ॥ इति प्रस्थाई दरस जाको क
रन जगत नरसे सदा सो तोर कटक तेरो वदन है
रे ॥ इत्येतदा । अथ आभोगः हो कहति ससजि

रा-रा

२८

वड़े गोपकी वेदी ॥ कुंभन दाम गिरि धरन लाल

सौ भज ओढ़ नील पेदी ॥ रागिनी राम कली

नाल ॥ विस्मय द । हो मोहन हो हारी तम जीते

इति अस्याई । नागर नट पट देख हमारे कोपन

हेतन सीते ॥ श्येतन । अथ आभोगः रसिक गो

पाल लाल अवलति पर पनी कहा अनीते ॥ पर

चकोर चेशवलि गति मति रति अट कैदी ॥ आसक
रन प्रभ मोहन नागार चरण कमल वित देंदी ॥

रागिनी रासकली ताल ३ विस्रपद । हमारे

दान देरी गुजरेदी ॥ इति प्रस्थाई नित उठि आज्ञा

त चोरि दधि वेचन आज्ञा प्रदानक भेदी ॥ इत्येत

रा । अथ आभोगः अति सत रातकेसे कुदोशी

रा-रा

२५

29

वरस कुमारे ॥ रागिनी राम कली ताल ३ विस्र
पद । वनत नही जसना जूकोन हैवो ॥ इति अ
स्याई । चोली चीर कसले भाजे कदित भयो चर
जैवो ॥ श्येतया । अथ आभोगः । जोहरि हमसो
ऐसी करिहोतो इह चाटन ऐवो ॥ श्रीविठल गि
रि धरन लालसो वीतनी करि चर जैवो ॥ रागिनी

मानेद प्रभु हम सब जानत तब गालबजावत रीते-
रागिनी रामकली ताल ३ विस्रपद मोहन देहो
वसन हमारे ॥ इति अष्टाई । कहैगी जाय ब्रजपति
जहके आगै करत अनोतल लारे ॥ इत्येतश । अथ आ
भोगा । तब ब्रज राज कि सोरनेद सन सब हिनके
प्राण प्यारे ॥ गोविंद प्रभु पीयदासी निहारी सेंदर

श-श ली ^३ विस्मयद । मनोवल्लभा योश पद कमल सु
गले सदा वस तमस त्रिविध रस भाव वलिते ॥
इतिप्रसङ्गार्थे । अथ महिमा भास वासना वासिते सा
भवत् जात निज भाव वलिते ॥ इत्येतत् । अथ प्रा
भोगः । भजत् भजनीय मति शयति रुचिरे चिरे
चरणे अगले सकल गुण सुललिते ॥ वदत् हरिश्च

राम कली ताल २ विस्वपद । ग्वालिन मोरानि
वसन अणाने ॥ इति प्रस्यार । सीत काल जल
भीतर दाफो आवत नाही दयाने ॥ इत्येतरा ॥
अथ प्रभोगः । तम व्रज राज कुमार प्रवल अति
कौत परी यह वाने ॥ हम सब दासी तिसरी व्र
जपति तम वड निपट सयाने ॥ रागिनी राम क

रा-रा ३१
श्रावे स्याथि रही रास रसाभ्र अभेगे ॥ रागिनी रास
कली ताल ३ विस्रपद । हेलीन वति केजली
लारस हरित श्रीवल्लभ वनमोरे ॥ ^५श्रेया श्रेया विष
न क्षिप्रत चन दामिनि इति फल फल प्रति दोरे
इत्येतया । अथ आभोगः । करत श्रावेस विरह
विरहनी प्रति भूतल वरत कदोर ॥ पञ्च ताम

स इति सा भवतु मुक्त रपि भवतु मम देव सत जन्म
फलिते ॥ रागिनी राम कली ॥ विस्वपद ॥
श्रीमदलम्भ रूप सुरेयो ॥ इति अष्टाई । नख सिख
प्रति भावनके मूषण वेदावन सेपति अंग अंगे ॥ इमे
नरा । अथ आभोगः । अरस परस गिरि धरजू की
नाई ऐन मैत व्रज राज उक्तेयो ॥ पद्मनाभ देवे वनि

रा-रा

३२

३२

पद्मनाभ सत हितकीयो मारग नेह सरलिका वे
ह ॥ रागिनी रास कली ताल ३ विस्रपद ।

रुक मिनि चलन सिखावति पाउन ॥ इति प्रस्था
ई । सतकी राहै श्रेयारिया सेलति सोभा कोटिक
भाउन ॥ ३ मंतरा । प्रथमा भोगः । हुमकि हुम
कि पग थरत थरति परलेउ छेग उर लाउन ॥

मथुरेस विचारत श्री लक्ष्मन भट सत ओर ॥
रागिनी रास कली ताल ॐ विस्मयद । सखि
री सोभा रस मय भाव प्रकट करि श्रीवल्लभ वर
देह ॥ शतिप्रस्थाई । अंग अंग ब्रज वध विरहनी
व्यापी जगल सनेह ॥ श्येतन । अथ आभोगः
श्रीहेदारण्य देह प्रकटित हृदे निगल कंदरा देह-

रा-रा-

३३

३३

पश्य पश्यते ॥ दृग्गोचरः कस्य विहार एव
स्थितिस्तदीये तद एव भूयात् ॥ रागिनी राग
कली ताल ॐ विस्मयद । नैनं भरि देवि अत्र
भोजनं तनया ॥ इति ग्रन्थात् । केलि पियसो कौरे
भव रत वही परे अम जलति भरत आनेद मनया
इत्येतया । अथ आभोगः । वलति देहो होइलेति

हेरा वनको चेद श्रीवल्लभलवे लाउहुलराउन ॥

रागिनी रास कली ताल ३ विस्रपद । व्रजपरि

वृद्ध वल्लभे कदा तचरण सरोरुह मीतणास्य देसे

शतिप्रस्थाई । तब तदगत बालका कदाहे सक

ल निजो गगना सदा करिष्ये ॥ इत्येतदा । अथ

आभोगः । हेरावने चारु वृह दने मन्मनो रथे

रा.रा. कहत वारे वार सवन के अथारथन निर्हनके ॥ ३०

३४

तया ॥ अथ आभोगः ॥ लेत जसना नाम देत प्रभे

३५

पदथोम रसिक प्रीतम प्रिया वस जो जितके ॥

पिय कौ मोहि उन बिना रहति नहि एक छिनया ॥
रसिक प्रीतम रास करत जसना पास मानो निर्दन
न कीहो जयनया ॥ रागिनी रास कली ताल ५
विस्वपद । श्याम सखि रास जहो नाम उनके ॥
इति प्रस्थाई । तिस दिना प्राण पति आय हिय मै व
से जोई गावे सजस भाग तिनके ॥ एहि जग मै सार

रा-रा कस दास प्रभ निरिथर न पर वारि होत न प्रान ॥

३५

रागिनी रास कली ताल ३ षट्पदी कसजीके ॥

निपट खोटे कान्ह सति जननी कहु वान ॥ इति अ

स्थाई होत जब समदाउव करत तव सिस भाउ एको

तपाइके नैन भरि ससि कान ॥ इत्येतरा प्रया प्रामो

गः देवि रस रीतिकी प्रीति विपरीति गति मति मोन

राशिनी राम कली ताल ३ षट्पदी ॥ बोलन कोक
कला निधान ॥ इतिप्रस्थाई मम वचन सनि उदि च
लहि सखि कादि सेदरि मान ॥ इत्येतदा- अथप्राभोगः
तेव नाम सहित निकज महे पीय करत मरली गान ॥
कैलि कौतम रसिकनी प्रियस निहिदे किनि कोन ॥
मेम रजनी विसत उरु पति जनकि भयो विहोन ॥

रा-रा

३६

स्योम सेंदर रेति कहो जागे ॥ इति अस्याई रेवि वि

न श्या माल अथर अजन भाल जावक लग्यो

गाल पीक पागे ॥ अनेतरा ॥ अथ आभोग बाल

दग मगी अति सिथिल अंग सवतो तरे बोल

उर नाव नि दागे ॥ गड्यो केकन पीठ निपट विह

वल दीठ सर्वरी लालनरी पलक लागे ॥ कहिये

छाडि सेवा लगी रहो निमि प्रात ॥ जात नही विसरि
देवि ब्रजत जतन थरि समझि कहे चंद देखे कमल
विगसात ॥ इत चंचर जवे लाल जस मति हरे उर कि
यसि थरनि पाउ थरि सख किलकात ॥ मनहुं प्राणा
वन वादरी सुरत जिहान प्रानंद सब फूल प्रति जल
जात ॥ रागिनी राम कली ताल ४ ॥ षट् षटी-

रा-रा

३७

पदी पलटि परे पट अट पदे अभरन ॥ सिथिले अंग

अंग सबहि देखियत निमाके जागरन ॥ नवप्रिया

संग प्रहर व्यारो पलन पाए परन ॥ चतुर्भुज प्र

भुजी तिर तिरन कियो रति पति शरन ॥ ॥

रागिनी राम कली नाल ३ षटपदी ॥ मोहन ब

सन हमारे दीजे ॥ इति अष्टाई वारनै जाउ सुनौ नंद

सोचि बात कारे जीय सक बात कौन त्रिय जाके अरु
राग रागे ॥ रास कुंभनलाल गिरि धरन पते पर क
रत कुंदी सोह मेरे आगे ॥ रागिनी रास कली
ताल ३ छटपटी ॥ भले आण भोर गिरिवर धरन ॥
इति अस्याई अरुण नैन जभात आलस धरत उवा
मरो चरन ॥ इत्येतया अथ आभोगः पादा लट

ग. ग. गगिनी राम कली ताल ३ मलफाखता षट्पदी

३८

३८

लालन जागत रैन विहानी ॥ इति प्रस्थाई ॥

देवत पथ आविष्टो अति हारी कहे लाल रति

मानी ॥ इत्येतया ॥ अथ आभोगः कटो का

लकेहि लाल सखिन संग परब विविध कहानी

रंग अनग सरत चित आवत छनियो अथि कपिरा

नेदन सीतल गान नन भीजे ॥ अथ आभोगः कौ

न सभाव हृष्या अन औसर उनवानन कैसें जीजे ॥

सुनि आविपावे वज महर जसो मति जाउ कहै अव

हीजे ॥ पसव अवला जल मोऊ उचारी दारुण आव

कैस सहीजे ॥ प्रभवल राम हमदासो तिहारी जो

भावे सो कीजे ॥ इति आभोगः ॥ ॥

रा.रा.

३५

३९

हारें आवज सभा जवि रही निकसि वैनहि पाउ ॥ वि

न रापे पति वन छुटे हमे गोकुलगाउ ॥ श्यामगा

न सरोज आनन ललित लैले नाउ ॥ सुरहि ल

गन कहिन मनकी कहो काहि सनाउ ॥

रागि रास कली नाल ३ ॥ षट्पदी । लाल रस

समे नैन आज निमि जागे ॥ ३ नि अस्थाई अति वि

नी ॥ भोरभये आप मोरे गढ़ देखन सखी सिरानी-
रसिक प्रीतम दोऊ प्रीतियो प्ररुण भए कहो क
होरे निसिरानी ॥ रागिनी राम कली तालजप ३
षट्पदी ॥ किहि मिस जस मनी के जाउ ॥ इति
प्रस्थाई ॥ सकल सख निधि सख निरखि के नै
न तषा बुजाउ ॥ इत्येता- अथ आभोगः ॥

रा-रा रि कर आरो ॥
४०

५०

साल प्रसात प्ररुणा भप रति रनके रंग पायो ॥

इत्येतया । अथ आभोगः सुंदर श्याम सभगना

प्रदपटी प्रेया प्रेया नख लत दोगे ॥ मानद कोप

नि दोर सन्नाख सरसाथ भप प्ररिभागे ॥ चत्तर

भुज प्रभ गिरि थरन प्रथिक क्ववि वेदन भक्त

हीलागे ॥ मानद सन्मथ चाप भेट थरि रसो जो

रा-रा सरके प्रभ दरस दीजे ग्रहन कीरन छई ॥ ॥

४१

रागिनी रास कली ताल ४ षट्पदी मैया तेरे

तालको माव देवनरो आई ॥ इतिप्रस्थाई का

लि माव देवि गई दधि वेचन जातहि गयोहे वि।

काई ॥ उत्पन्नरा प्रथमभोगः दिनते हनौ दोस

लाभ भयो गाइनि वदिया जाई ॥ आईसवे छेभा

रागिनी राम कली जाल ३ षट्पदी कसजीके
मोहन जागिहों बलि गई ॥ इतिअस्याई बाल
बाल सब द्वार हाफे बेर वनकी भई ॥ इत्येतरा ॥
अथ आभोगा पीत पट करि हरसखतैं खादि दे अर
सई ॥ अति अनेदित होत जसमति देवि इतिनित
नई ॥ जागे जेगम जीव पशु त्रिग और व्रज सबई ॥

श.श.

४२

५२

आभोगः गलीजसोकरी एकजनीकी भेट भयो भ
द भयो ॥ अंकदे चली सयानी ग्वालिन हरिको वद
न फिरि हेयो ॥ प्रातही मंगल भयो सावीरी है है स
ब काज भलेयो ॥ परमानंदप्रभ साव निराखत मि
हो भव सागर केरो ॥ **गगिनी राम कली** ॥
ताल २ **षट्पदी** ॥ हो बलि बलि जोउ कलेउ

य सायकी गिरि थर देऊ जगई ॥ सुनि विय
वचन विहसि उदि वैदे नागारि निकट बुलाई ॥
परमा नेद सयाती ग्वालिन चली सेकेत बनाई ॥
रागिनी राम कली ताल ३ षट्पदी ॥ लाल
को दरसन भये सवेरो ॥ इति प्रस्थाई वदत ला
भ पाउंगी माई दस्यो विकैहै मेरो ॥ इत्येतरा ग्रथ

रा-रा

४३

५३

जे ॥ रागिनी रास कली ताल ॥ ङ षट्पदी ॥

जयति आभीर नाराय प्रान नाथे । जयति वज्र राज भू

षण जसो मति ललित देतन विनीत मिश्री सहाये-

इति अष्टाई जयति पात परभात दधि श्रीदामा

सेरा अखिल गोथन हृद चरे साथे ॥ इत्येतरा ॥

अथ आभोगः दोर रमणीक हृद विपिन सुभस्यत

1
कीजे ॥ इति अस्याई खीर खोड चूत अति मीठो
है अबको कोरवच्छ लीजे ॥ अंत्यरा ॥ अथ आभो
गः वेनी वड़े सुनो मन मोहन मेरो कस्यो जो पत्नी
जे ॥ ओहो हथ सय थोरी को सात चूट जो पीजे ॥
हो वारीया बदन कमल पर अंचरा प्रेम जल भीजे ॥
बहुँस्यो जाय विलो जमुना तट गोविंद संग करि ली

रा-रा-

४४

५५

वि सुदित भई मनहि मन कहति आये वचन भयो
प्राता ॥ इत्येतया । अथ आभोगा । नैन अर सात
अति बार बार जे भात केद सो लगि जात हरष गा
ता ॥ वदन पौक्षियो जमन जल निसों थोड़के क
ह्यो मस काइ कछु खाइताता ॥ हृथ औ ह्यौ ओनि
अधिक मिथी सोनि लेऊ सोवन पौनि पाए दता-

मेदरी केलि गुण गूढ गाथे ॥ जयति तरनि जा न
द निकट रास मंडल रव्यो तत्तना येई येई तत्तना
थे ॥ चतुर्भुज रास प्रभु विरिथरन बद्धि शुबष्ठी
विदल प्रकट व्रज कियो सनाथे ॥ रागिनी रास
कली ताल ॐ षडपदी ॥ लालहि जगाउ ब
लिगई माता ॥ इतिप्रस्थाई निरावि म्हाव चेद ब

श-श

४५

तनी श्रंगकीगति दीति जीयल जानी ॥ उपदि
केकन पीढ वक्र विह वल दीढ ईढ नालावी खानी
पाणि पलव प्रथर दसन सौ गहि रसी प्ररथ बेन
बोलि वचन हार मोनी ॥ मूरप्रभ प्रेक भरी प्रोण
पति नागरीन बल नागार उरह्छालि मोनी ॥
रागिनी राम कली नाल २ छटपदी ॥ जैये त

सूर प्रभु कियो भोजन विविध भोजि सौ पियो पय
मोद करि चूट साता ॥ रागिनी राम कली ताल
कं षट्पटी ॥ रायिका श्याम जन देवि मसका
नी ॥ इति अस्याई । हार विन शृणु लेख अथर
भेजन रेख नैन तेमोर तत रात बोनी ॥ इत्येतया
अथ आभोगः ॥ पाग लट पटी बनी उरह झूटी

रा-रा- व्रज प्रियनमै कौनसी नारि वह जाके तम लाल
४६
५६
प्रनराग रागे ॥ वनभोज दास प्रभ विरि थरा
काहे को करत ऊरी मोह मेरे आगे ॥ रागिनी
राम कली लाल ॐ वटपदी ॥ नैन उनीदे
भए रेग राते ॥ इति प्रस्थाई मनहु गुलाल
ऊखम पर सजनी फिरत भेगा मद माते ॥ इत्ये

हो जहो रेति जाये ॥ इति प्रस्थाई । वनी विन
गुणमाल ओह अजत भालसै उर लग्यो रोउ पी
क पाये ॥ इमेतरा । अथ प्राभोगः । प्रारक्त नै
न अति सिथिल सब अंग गति उरा मरा तरा विन
ही पलक लागे ॥ वपल चानर फीट उपटि केक
न पीट देखियत उर मोऊन खन दारो ॥ सकल

रा'रा' मन मया वैथो मोहन नैन वोनसो ॥ इति अस्याई ॥
४७
५७
गह्रभावकी सैन अचानिकत कितासो भुजरीक
मोनसो ॥ इत्येता । अथ प्राभोगः ॥ अथ स ताद
वलचेर निकटले मरली समक सर वेथानसो ॥ पाके
वे कविनै मथुरे हेसि चात करी उलरी सदनसो ॥ व
तर्भज दास पीर पातन की मिदतन औषध ओनसो ॥

तया । अथ आभोगः प्रेम पराग पोखरी पल दल
प्रफुलित मदनल नाते ॥ सदा सवास विलास वि
लोकनि प्रकट प्रेमके माने ॥ तैसिये मारुत मेद
जन्दा वरि मिलत सदिन खवि नाते ॥ सोचे स्वर
श्याम मानिनि निज हित करिकेलि कलाने ॥
रागिनी राम कली नाल ४ षट्पदी कसजी की

श-या

४८

५४

ते विते सि सत नरा खति केद लगा ३ सेदर श्यामस
भया मउवा नीत त रात मोयित वनीत खान भ
जन भाव जैसै जनावत वाल खरा ॥ चतुर्भुज प्र
भ गिरि थरके वाल विनोद नेद माव देखे हाफे
दगा दगा ॥ रागिनी राम कली ताल ३ वट्ठ
दी उपमा थीरज तज्यो निरावि कुवि ॥ इति प्रस्था

कैकै सख नवही उर अंतर आलिंगन गिरिधरसुजो
नसो ॥ रागिनी राम कली नाल ॥ छटपदी ॥
प्रेमरिया क्वाडिरे गति प्रया प्रया ॥ इति प्रस्थाई
नृप वज्रत न्योन्यो थरणी थरत परा ॥ इत्येतया ॥
अथ आभोगः कवड़े कजसौदा माहि भज पसारि
हेसि उग मगाइके उलटिउग ॥ जननी मरित मन वि

राधा रागिनी राम कली ताल ८ षट्पदी । हांछोरीव
रिक्त माई कौन को किसोर ॥ इति अस्याई सोवरी व
रन मन हरन वेसी थरन काम करण केसी गति जोर
इत्येतरा । अथ आभोगः पवन परसि जात चपल हो
न देवि पियरे पटको चटकी लो छोर ॥ सुभग सो
वरी छोटी चटाते निकसि आई वेकवीली बटा कौ जै

ई कोटि मदन अशुनो बल हासो केउल तेज कृष्णो
रवि ॥ इत्येतया । अथ आभोगः विजय मोन स्या
जहै जेते दीन रहै कौ हरेदवि ॥ गिरिधर पटन रह
महिल जावत सकुच तनही खोटे कवि ॥ ईषदहा
सदसन इति निरघन वज्र सिखरस ऊचाने सुरणा
मलीला वपुका छियो पटनर मेदि विराने ॥

रा-रा' इत्येतदा । अथ आभोगः । सब चत्तगई विमरि जातरे
५० खान पोनकी तात ॥ विन देवे छिन कलन परतरे प
ल भरि कलप विहात ॥ सति भामिनिके वचन मनो
हर सावि मन अति सकचात ॥ चत्तर्भज प्रभु गिरि
थरन लाल सेवा सदा वसो दित रात ॥ रागिनीरा
स कली ताल ॐ षट्पदी । चत्तर चारु चेदा वली

सो क्ववीलो ओर ॥ मृच्छति पाङ्गनी खारि हाहा होमे
री शाली कहा नाउ कोहै चित वित को चोर ॥ नेददा
सि जाहि वाहि चकचौथी आउ जाउ भूल्योरी भवन
गवन भूल्यो रजनी भोर ॥ रागिनी राम कली ताल
षट्पदी । करत हो सवे सयानी वात ॥ इति प्र
स्थाई जोलों देखे नाहिन सेदरि कमल नैन मसिकात

रा-रा ५१
ल मरति का दह मोरे ॥ सति कल दास सभ लग वह
थन चरी लाल गिरि धरन सौं हाथ जोरे ॥ रागिनी
राम कली लाल ३ छटपटी । देखो मेरे भाग की स
भ चरी ॥ इति अष्टाई । नवल रूप कि सोर मूरति के
दले भुज धरी ॥ इत्येतदा । अथ आभोगा जाके चरण
सरोज गंगा प्रेभले सिर धरी ॥ जाके चरण सरोज प

साव चकोरे ॥ इति प्रस्थाई अस्तमे चरण रति व्रज
जवति भूषणो कमल लोचन नंद नृपकि सोरे ॥ इत्ये
तरा । अथ प्रामोदः । मोनि मेरो कस्यो अति साल र
सरीति क्यो करावति सावी वद्धनि होरे ॥ मिलेकिति
थाइ अथ केवर चूरारत्न रसिक वर भूषणल चित्त तो
रे ॥ नवरंगा केज महेत वनो महित नाथ कृणित क

रा.रा. रहती करि कोति ॥ अतः हम पै कौं सही परति है
५२
५२
मणि मानिक की होति ॥ बुद्ध विवेक वचन चा
नरी सर्वस लियो बुराय ॥ सूरदास प्रभु के गुण
औ गुण का सौ कहिये जाय ॥ रागिनी रास क
ली ताल गीत सटपटी । यत यह राधिका के
चरन ॥ इति अस्याई । सभरा सीतल अतिस

रसत सिलास नियेत तरी ॥ जाके वदन सरोज निर
खित आस सगरी मरी ॥ सर प्रभुके संग विल सत स
कल कारज मरी ॥ रोगिनी राम कली ताल ३ षट्
पदी । गोपाले माई वारे हीनै देव ॥ इति प्रस्थाई ॥
जानौ नही कौन पैसी बिचारीके कल छेव ॥ इत्येत
रा । अथ आभोगः कवजेक डरते माखन खाते सुनि

रा-रा-

५३

ल ^{गीत} षट्पदी । यत्न यह रायिकाके चरन ॥ इति

प्रस्थाई । स्वभरा सीतल अति सकोमल कमलके

से चरन ॥ इत्येतदा । अथ आभोगः । नखवेद चा

रु प्रनूप राजत विविध सोभा धरत ॥ ऊर्णित नू

षर ऊँज विहरत परम कौतुक करत ॥ रसिक ला

ल मनमोद कारी विहर सागर तरत ॥ विवस

कोमल कमल कैसे वरन ॥ इति श्रेतरा । अथा
आभोगः । नखचंद्रचारु अतृप राजत विविध
सोभा धरन ॥ ऊणित नूपुर केंज विहरत परम
कौतुक करन ॥ रसिक लाल मन मोदकारी वि
हर सागर तरन ॥ विवस परमानंद छिनछि
न श्यामजीके शरन ॥ रागिनी राम कली ता

रा.रा. ग्राम जीतो बोधि अपनी परत ॥ सुरके प्रभ तरन
५४
५५
तारन राखि अपनी शरन ॥ रागिनी राम कली ता
ल ३ घटपदी ॥ बहे जोत बहि मान यरि आवे ॥
इति अष्टाई । स्नेह श्याम बद्धि सन्नाह कै अंबज
वदन दिखावे ॥ श्येतया । अथ आभोगः । तब
लग मान करु कोऊ कैसे जव लग बह दस नन

परमा नेद छिन छिन श्याम जीके शरन ॥ ॥

रागिनी राम कली ताल ^{गीत} छद्मदी । बहि बहि

वात लागी करन ॥ इति अस्याई । श्याम सेदर मद

न मोहन आप तेरे चरन ॥ इत्येतया । अथ आभोगः

उदिम उपर विकर कूटे विकर उपर छरन ॥ काम

को दल साजि आई आउ देदे लरन ॥ विहर को से

रा-रा' किति रुन रुन वानी ॥ शंभुतया । अथ आभोगः
५५
५५
सुतके कर्म गावति आनंदभरि वाल चरित्र जानि
जानी ॥ अम जल वंदराजे वदन कमल परमन
द सरद वराखानी ॥ पुत्र सनेह बुवात पयो थर
प्रसूदित अति हरषानी ॥ गोविंद प्रभु बुट रुन
चलि आप पकरि रई मथानी ॥ रागिनी राम

दि पावे ॥ दृष्टि परमेन मधु कर तिहि किन सहज
सरोज दि पावे ॥ त्रिभुवन मोह होउ वदै जवति
आरज पणहि दृष्टावे ॥ केभन दास प्रभ गोवर्धन
थर कुल मरजादा पावे ॥ रागिनी राम कली ता
ल ॐ षट्पदी । अहो दधि मयनि घोष की रानी ॥
इति प्रस्थाई । दिव्य वीर पदरे दखिन को करि किं

श-श

५६

56

प्यारी तनतै ॥ रसिकटरोजिति दसाश्यामकी कव
हे मेरे मनतै ॥ शशिनी शम कली नाल ^३ घट
पही । चरण कमल की चेरी तेरी छाउझ लालनेद
के ॥ केसोहे दोन कहा किति लीयो दीयो न कवहे
वचन वदन अर विदके ॥ देखत साखा साखी जन
सगरी चरित चपल ब्रज चेदके ॥ लालनस ऊचत

कली ताल ॐ षट्पदी । लटकत आवत केज भव
नै ॥ इति अस्थाई । छरि छरि परत रायिका ऊ
पर जागर सिथिल रावनै ॥ इत्येतया । अथ आ
भोगः । चोकि परत कवड़े मारग वित्त चले सुरो
य पवनै ॥ भण्ड सास भरम रायाके सकुच त
ह्यो सरवनै ॥ आलस मिस मारे नही नहेने कुन

रा.रा.

५७

57

शोभता । अथ आभोगः ॥ स्नेह प्रणाम कमल
दल लोचन हमहूँ दासी तिहारी ॥ जो कछु कहो
सोई हम करिहूँ चरण कमल परवारी ॥ अंग अंग
केपत मन मोहन विलसी सनद हमारी ॥ स्वर
दास प्रभु रासिक सिरो मति तम जीते हम हारी ॥
रागिनी रास कली ताल ~~बटपदी~~ ॥ चर्चरी ।

येवरापे चत पारन पावन विविध अट पटे फेटकी ।
मटकी खसत हसत सब ग्वालनि निरावति हारे
छेदके ॥ रसिक सदा मन वसो विविध गुण रस नि
धि आनंद केदके ॥ रागिनी राम कली ताल ३ षट्
पदी ॥ हमारी येवर देखो मराही ॥ इति प्रस्थान
लेकर चीर कटम पर बैठे हम जल मोक उचारी ॥

रा. रा. दिवङ्मनक सुत वासना भेरा भव जलधि तरणो ॥ वद
५८
५८ न हरि दास इति निज वरण मात्र कृत गोकुला थीश
५८ पद कमल वरणो ॥ रागिनी राम कली ताल
षट्पदी । चर्चरी । जयति राधिका रमण वरचरण
परिचरण इति वल्लभा थीश सुत विदलेश ॥ इति
स्याई ॥ दास जन लौकिका लौकिके सर्वथा कैवलि

रुचिर तरु वल्लभा दीश चरणो ॥ इति प्रस्थाई । प्रस्तुते
सर्वदा संस्था कति जगन्मोहने हृदि हता विहित कर
णो ॥ इत्येतया । अथ प्राभोगाः विहित माया वादवा
दि देव जादि जन संग ज नितात्त जनक मति हरणो-
प्राविल साधन रहित दोष शत कलष मति विमति
भर भरित निज दास शरणो ॥ अजसा कामको पा

रा-रा

५२

59

विद्यमसगति निज वलेशे ॥ रागिनी रास कली ता
न ॐ षट्पदी ॥ श्रीगोकुल नाथ निज वप्रथ
स्यो ॥ इति प्रस्थाई । भक्त हेत प्रकटे श्रीवल्लभ ज
गतै निधिरज हस्यो ॥ इत्यंतरा । अथ आभोगः ॥
नेद नेदन भय तव विरि गोप ब्रज उदस्यो ॥ नाथ
विदल सवनकैके परम हित अन सस्यो ॥ अति प्र

तो दयति हृदय देशे ॥ इत्येतत् । अथ आभोगः ॥ स्या
पयत मानसं सततं कृतं लालसं सहजं सख मातु चि
रूप देशे ॥ भालगतं तिलकं मृदादिशोभासहितं
मस्तकावहं सितकलकेषु ॥ सहजं हासादिभूतं
वदनं पेकजं सरसं वचनं रचनां पराजितं स्वदेशे ॥
अखिलं साधनं रहितं दोषं शतं सहितं मतिं दासं ह

रा.रा.

६

60

गाय प्रणव भव त्रिभिर्नादि प्रपन्नो कस्यो ॥ दसमा
यव ज्ञान देवे चरण शरण पश्यो ॥ रायिनी राम
कली ताल वदपदी ॥

रा.रा.

६३

खाल वाल खिलन कौ गोरे भन हूँ ॥ ब्रज ज
न सब हाँपी माव देवन अति आरत सब को ॥
उहि बैठे लपगोद जसोदा सेदर सन तिहे लो ॥
रसिक प्रीतम लागि गये जननिके मोगत रोटी रो
३ ॥ रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥
दग मग चलति अरु रही भोति ॥ इति अष्टपदी

रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥ भोर

भयो जागोहो ललना कहा तम अजहं रहेहो सोर

इतिअस्थाई पीओ थार अपनी थोरीकी जैसे देह

बल होइ ॥ इत्येतरा अथ आभोगः वैनी गुहे देउ

दग अजतन मसि बिडका सख थोर ॥ हसत वदन

स सदन निहारौ नान्हो नान्हो दतियो दोइ ॥ देखत

रा-रा

६४

64

नेद कुमार सरत सेवा लीने सरद विमल की रानी-
कल दास गिरिधर पियके सेवा अथर सधारस
माती ॥ रागिनी राम कली ताल ॥ अष्टपदी-
मवालिन पिछवा रेकै बोल सुनायो ॥ इति अष्टपद्या
३। कमल नैन हरि करत कलेउ कौरन मखलौ
आयो ॥ इत्येतदा ॥ अथ आभोगः ॥ मैया एक गा

तवनि केजते राधा भोमिति प्ररुणा उदैवर जाती
उत्पेतरा । प्रथमामोगा । रतिकी कलिसमिदि
मृग नैनी बार बार मस काती ॥ बदन जोतिने
सुनिरी भामिति मेदत उड पति कोती ॥ निसके
चिन्ह प्रकट देखि यत हैं काम केलि कुल काती ॥
प्रीतम प्राण रतन सेषट कुच भेटि जग ईछाती ॥

रा-रा

६५

65

नीरवालिन उलटि अक गिरिथर पिय पायो ॥

राशिनी राम कली ताल ३ प्रष्टपदी ॥ मोखन

तनिक देरी माय ॥ शतिप्रस्थाई तनिक कर परत

निकरोटी मोगत चरण चलाय ॥ श्येतन १ प्रथम

भोगः । कनक भूमि परतनि करेषा करत पकरौ

थाय ॥ केपियो गिरिसेस सेक्यो दधि हेत प्रकलाय-

यवन चार्दे वस्त्रा झाई वसायो ॥ वेन नल ईल कु
द नहि लीनी अरवराय कोउ साखान बुलायो ॥ च
कित नैन चहै दिस चित वत सत्य इहै कियो सप
नो पायो ॥ फले अंगन मातर सिकवर विभवन हर
रस कत्रनि छायो ॥ मिलि बैठे सेकेत सदन मै
विविध भोति कीनो मन भायो ॥ परमानेद सया

रा-रा ६६
66
चोरि मन मोखन जो मेरे धन होरी ॥ शोतरा ॥ अथ
आभोगः ॥ बोधो कंचन बिभ कलेवर उभय भजा द
रा शरी ॥ राखो कटिन कदोर ऊचन विच सकेन
कोउ छोरी ॥ अथर दसत तिरों रस गोरस कुवेन का
ऊ कोरी ॥ काम देउ देखे परचर को नाउन लेइव
होरी ॥ तव कुल कोति आनि तिरछी भई तमा अ

मेरे मतके तनिक मोहन लागो मोहि बलाय ॥ तनि
क सख परत निक वतियो बोलत है तनराय ॥ जस
मतीके शणा जीवन थन लीयो उरल पदाय ॥ नेद
ऊवर गिरिथरन ऊपर सूर बलि बलि जाय ॥
रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥ आज ह
रि पकरा पाए चोरी ॥ इति अष्टपदी लेखायो चोर

रा.रा.

६७

कोरे लगि देख्यो मेरी छात न आयो ॥ बेनीकी कर
गहरी चामरी चुचट माऊ दरवायो ॥ मत रोवो तम
सौ कौन कहत है लेउ छंवा झल रायो ॥ श्रीमखनै
उचरि गई देदतियो नवहेसि केठ लगायो ॥ परमा
नेद प्रभु प्राण जीवन थन विसद विमल जस गायो ॥
रागिनी राम कली ताल ^{गीत} सुष्टपरी । मोहि द

पराय किमोरी ॥ शिव पर हाथ थराइ मूर प्रभुसो
च सौच सिर छोरी ॥ रागिनी राम कली ताल ३
अष्टपदी । माखन चोररीमें पायो ॥ इति अष्टपदी
जैयत कहो जान कैसे पैयत वज्रत दिन नही लायो
इत्येतदा । अथ आभोगः । होज कहति ही होत कहा
है नित उरि भाजन लगन कुछायो ॥ वज्रत वार

रा-रा

६८

68

श्रीजसनाजी तिहारो दरस मोहि भावै ॥ श्रीगोकु
 लके निकट वसत है लहरन की खवि आवै ॥ सख
 करनी डख हरनी श्रीजसना जो जत प्रात उठि न्यावै-
 मदन मोहन जूकी खरी पियारी पटरानी जूक होवै-
 हंस वन में रास ख्यो है मोहन सरली बजावै ॥ सूर
 रास प्रभु तिहारो मिलन के वेद विमल जश गावै ॥

धि मयन देव लिगई ॥ जाउ बलि बलि बदन उप
र छाडि मया नीरई ॥ इतिग्रस्याई लालेदेजे नव
नीतलौंदा आरि कि तत मढई ॥ इत्येतया । अथा
भोगः सतेहेति विलोकी जस मती प्रेम पुल कित
भई ॥ लेउ छंगल गाय उरसौ प्राण जीवन जई ॥
बालकेली गोपालकी व्रज आस करन नित नई ॥

रा-रा

६२

69

रि सजन की तो प्रथम हे मंत के मास ॥ एवर होइ
नेद सत मेरे व्रत दासों इहि आस ॥ तव ही चीर ह
रे हरि नागर चढ़ि कदम की शरि ॥ परमा नेद
प्रभु वर देवे कोउ यम कियो मरारि ॥ रागिनी
राम कली ताल ३ अष्टपदी । ग्वालिति अर्पनै
वीर लेइ ॥ इति अष्टपदी । जलनै निहारि निकट

रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी । हरि जस गा
वति चली ब्रज सेदरि श्री जसना के तीर ॥ इति अष्टा
ई । लोचन लौने बाह जोटि करि अवगति कुल कत
वीर ॥ इति अष्टा । अथ आभोगः । वेनी सुथिर चारु
कोथेपरे कटि तट अंबर लाल ॥ हाथनि कूल लीये
इलीया भरि अरु सत्ता मणि माल ॥ जल प्रवेश क

रा-रा- स्वरसुभावहमारोक्त उर पति हो काम भय ॥ के
सीये भोति भजे कोऊ मो जेते सवे संसार जय ॥

रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥ समि

रो श्रीविटलेश कुमार ॥ इति प्रस्थाई । अति प्र

गाथ प्रणारभव निधि भयो चाहो पार ॥ इत्येत

रा । अथ आभोगः । मैवलि रहत करुणा सिंधु

कै होउ कर जोरि कै सीस देइ ॥ इत्येतरा ॥ अथ आ
भोगः ॥ कत हो सीत सहन ब्रज सेदरि होत असि
त कस गान सवे ॥ मेरे करे आनि पहिरो पट इत
नो अंग विधि होत अवे ॥ होअंतर जासी जानत
सबन कीकत उरा वत लाज के ॥ करि हो एत
काम कृपा करि सरद समै ससि रान के ॥ सेतत

रा-रा-

७१

7/

कोमल सदाचित उदार ॥ गोकुलेश हृदे वसो म
ममल पाल निहाल ॥ माल तिलक नत जीतक
हे परी जदपि प्रकार ॥ श्रेत भक्तन दीयो धीरज भ
ए पद दानार ॥ चार जगमै विसद कीरति भक्त
हित अवतार ॥ नव किशोर कल्याणके प्रभुगा
उे वारे वार ॥ रागिनी राम कली नाल । अथ

श-श

७२

72

गोप गोपीनवल प्रेम राति वेदिना तट मदिन रहत
जैसे चकोरी ॥ लहरि भावरि ललित बलका स
भग ब्रज बाल ब्रत हरना रास फलदा ॥ ललित
गिरि वर थरत प्रीयक लिरनेदिनी निकट कस द
स विहरत प्रवलदा ॥ निरावि हरवि ब्रज जवनि
घोष मगारि ॥ यकित जित तित प्रमर मनि रात

२
रागिनी राम कली ताल ४ अष्टपदी ॥ नमो नति
न नया परम प्रतीत जग पावनी कल मन भावनी
रुचिर नामा ॥ इति अष्टपदी श्रीविल सख दशनी स
व सिद्धि हेतु श्रीराधिका खन रति करन श्यामा ॥
श्वेतरा । अथ आभोगः । विमल जस वन नवका
ननो मोद पुन पुलित अनिरम्य प्रीय वज्र किशोरी ॥

रा.रा. तेज उतारि ॥ केहसो पजनील माणि मय मानरवी
७३ से वारि ॥ नील गिरि वर गारल मानों लाय लई म
73 दनारि ॥ वदन रजतन श्याम मेरित शोभ इहि अनु
हारि ॥ मनहुं येग विभूत राजत शोभ सोई मधुस
रि ॥ विदस पति जस मति के आगे असन कौ करे
आदि ॥ सूरदास विरेचि जाको जपत जस मात व्यादि-

नेद लाल निहारि ॥ विन वयन सिरके सलट चड़े दि
सा छटकी जारि ॥ सोस पर जानो जटा थारि सिस
रूप कियो विप्रारि ॥ रुचिर रचित ललाटके सारि
विंड सोभा कारि ॥ रोस मनज नदीय लोचन रहे
विप्रजन जारि ॥ कुटिल हरित लहिये हरिकें सभ
ग शरि प्रन सारि ॥ इसजन रजनी सगळो भाल

श-श

७४

७५

य ॥ उरत लालन ऊलत पलना खरेदेत ऊलाय-
जमला अर्जन तोरि नारे हरे प्रेम वढाय ॥ ऊढक
नात पलाम पलव देऊ देत दिवाय ॥ कीर पिंजरा
देत अंगरी लेत श्याम भजाय ॥ वका सरकी चौच
फारी दृष्टि अवरज लाय ॥ विनाही एक सदनेमै
हरि नेऊ धरत न पाय ॥ अचा सर सख पेदि निक

रागिनी राम कली जाल ३ अष्टपदी ॥ बलि ब
लि चरित्र गोकुल राय ॥ इति अस्याई । सब नल
को पान कीनी पीवत ह्य सिराय ॥ इमेत रा । अ
य आभोगः । एतनाके प्राण सोखि रहे उरल पदा
य ॥ कहति जननी ह्य जगत लोकि कहु बन
लाय ॥ विणा वर्त अकासतै राहि सिलाप दक्यो आ

श-श-

७५

75

लागत पाय ॥ चोष नारिन सेग मोहन रच्यो रास व
नाय ॥ कहति जननी व्याहकी तव लजत वदन उ
राय ॥ वृषभ भजन हतन कैसी हन्यो पुच्छ फिया
य ॥ भजन सावन समेत मोहन देवि व्याई गाय-
सेस सहसा कहिन आवे अनेक रसना पाय ॥ ए
करसना सुर कहा करे प्रेग प्रेग नित भाय ॥ ॥

से बालवक्षजिवाय ॥ हरे बालक वक्षन वक्षत
हेत दोरी माय ॥ फूटि पसु जब रहत बतमें डुम
ति फूटत जाय ॥ लिख्यो हारे नाग कारो देवि
श्याम उग्राय ॥ निर्ते काली फणाति ऊपर सप्त ता
न वजाय ॥ थर्यो गिरि वर दोहनी करत बाहे
पियाय ॥ सकट भंजन प्रसन्न कुच जग कहिन

रा-रा

७६

76

कौ उदिभ जोगे माति मेरी निहोर ॥ लेहे ललन
बलाउ तेरी खोरि अंवल थोर ॥ वदन चंद विलो
कि सीतल होत हिरदो मोर ॥ वैदि जननी मोदजै
बगलारो गोविंद थोर ॥ रसिक बालक सहज ली
ला करत मोखन चोर ॥ रागिनी राम कली ता
ल ३ अष्टपदी । मानहु वात लालन मेरी ॥

राशिनी राम कली ताल ^{गीत} अष्टपदी ॥ हाहाले
उ एको कोर ॥ इति अष्टपदी । वज्रत वेर भई है भू
खे देवि मेरी ओर ॥ इत्येतरा ॥ अथ आभोगः ॥
मेलि मिथो हय ओत्योपी औकै है जोर ॥ अबही
खिलन देखि है तेरे ग्वाल भयो अति मोर ॥ जयो पे
छी इम इम निप्रति करन लागे मोर ॥ खिलिखे

रा.रा. मेघान उदयो सूरज कमल विकास ॥ माइके स
७७ नि वचन हेसि उर आइल गेणाल ॥ कीयो भोज
न दीयो अति सावरसिक नैन विमाल ॥ रागि
नी राम कलो ताल जीत अष्टपदी । विलज मद
न सेंदर अंग ॥ इति अष्टपदी । जवति जन मन
निरति उपजत विविध भाव अनेग ॥ इत्येता ॥

इति अस्याई । करो भोजन रोस भूलो हो जमैया तेरो
इत्येतया । अथ आभोगः । हथ दथ नवनीत चूत
एक परु सियाबी प्यार ॥ कहा लोटत थरनि में मेरे
लाल होति प्रवार ॥ गोद वै हो होति बाऊं गाउं तेरे
गीत ॥ खिलि वेकों तोहि बोलत ग्वाल तेरे मीत-
कहौ जाकों ताहि देखौ वैदे तेरे पास ॥ करौ दथि

श-श- प्रलोकिक बाल लीला कौञ्जेन जानी जाइ ॥ मृग

७८

78

तासौ मरु सख रसदेत रसिक मिलाइ ॥ रावि

नी राम कली ताल चर्वरी ताले । वृजानेदके

दबोष पति भाग्य भवि जाते ॥ इति प्रस्थाई । रसि

क वर गोपिका पीत रस माननेतव जय तमम ह

शि खजाते ॥ अवे । इत्येतत् । अथ प्राभोगः । रुचि

अथ आभोगः । पकरि वच्छरा ऐच्छै चत अपनी दि
स करजोर ॥ कवड़े वच्छले भजत हरिकों जवति
जनकी ओर ॥ देवि परवस भए प्रीतम भयो मन
आनंद ॥ मैंन आकल भई व्याकल गई लाज अमेद ॥
कोउ देखति गहतिको उह सत छाडति गेह ॥ कर
ति भाया अपने मनको प्रकट करि निज नेह ॥ अति

रा.रा. निहित निज वाङ्मयति मन्त्र राज राज इव रुचिरे ॥ वि
७५
२१
रह विरहानले चारु प्रस्फुर चलत शीकरे रूप शमय
रुचिरे ॥ प्ररुण तरला पोषा शर निहत ऊल वधूध
ति तव विलोचन सरोजे ॥ मम वदन स्रष्ट मासरासि
विल सत्त सतत मलस गति निर्जित मनोजे ॥ नेद
गे हाल वालो दिनस्वी राग सेक सेहह सुर वृत्त ॥

१८२ हास गाल दमल परि मल लव्य मधुप कुल म
वि कमल सदने ॥ अमृत चय गर्व निर्वीसना थर
सिंध पायय मनो जाति शमने ॥ स्मित प्रकटित
चारु दंत रुचि वदन विध कौमदी हन निखिल
तापे ॥ विलसलिलता हय कनक कल सदयो
मारकत मणि विवश्यापे ॥ सुभगा सुसखी केद

रा. रा.

८०

८०

ह जयति हत भाव चित्ते ॥ जो वसी मेतिनी विमुक्त
घट्टेण केल निनद गार्जितस्य मिह सतते ॥ वचन
करुणा कृत दृष्टि दृष्टी रेग नव जलद मणि करु स
हसिते ॥ रागिनी राम कली जाल चर्वरी
जयति श्री बलभ सवन उदरणा विभवन फेरिनेद
के भवन की केलि होनी ॥ इति अष्टाई ॥ इष्ट

ब्रज वर कुमारिका बाहु हाट कलना सतत मा प्रयत्न
कृत लक्ष ॥ ब्रज स्नात शृणु रसिकता शृणु गोपना
निशय रुचिर लाप लीले ॥ तादृशी क्षण जनिता
कुसम शर भाव भर प्रवृत्तिषु प्रकट तर निखिले ॥
रुचिर कौमार चापल जय व्रीडया बलवी हृदय मृ
दुशमे ॥ प्रकट यन्त्रिज नाखर शरवयै रसम शर सि

रा-रा-

८१

81

नकसे भक्त को सनेदसे याही ते वसकीयो ब्रह्म रा
सी ॥ मनहु इंदवजीति कस सौकरी प्रीति निरा
मकी चलितोति अति विवेकी ॥ रहित अभि मा
नते वडे सन मोनके शील अरु दोन गोविंद देकी-
सदा निर्मल बुद्धि अष्ट सिधि नव निधि द्वार सेवत
जहो भक्ति दासी ॥ राम राउ गिरिधर जाजोति आ

गिरि वर यरण सदा सेवत चरण द्वार चारो वरण
भरत पौनी ॥ इत्येतदा । अथ आभोगः । वेदपथवा
स सेरुन मोन दास से ज्ञान को कपिल से कर्म जोयी
साथ लक्ष्मन निषन मद्र व्रज राज प्रकट सखरसि
मनो डेड भोगी ॥ सिंधु समरो भीर मिलन रेग
नीर प्रीतिको जल हीर व्रज उपासी ॥ थोन को स

रा. रा. ननु जन्ताये ॥ इत्येतया । अथशाभोगः ॥ दृष्टित
८२
माया वाद वर्ति वदत येसि विहित निज दास जनप
द पाते ॥ अष्टि पय कयन रचित नेक स ग्रेय म
थित भागवत पीयूष सारे ॥ रास प्रवती भावसत
त भावित हृदय सदय मानस जनि तमो दभारे ॥
निज चरण कमल थरणो परि क्रमण कृति मात्र

पावित वितत तीर्थ जाले ॥ कसल सेवन विहित श
राग गत शिलाण क्षपित सेदेह दासै कपाले ॥ निज
वचन पीयूष वर्षणो वित सतत साहित्य प्ररुष जन
भक्त्युक्ते ॥ विविध वाचो शक्ति निगम वचनोदि
नैरपिच हरित दुष्ट जन उरुक्ते ॥ ईदृशे सति शि
रसि सर्वदा बलभे सकल कर्तारि दयालौ ॥ केवप

श-श रि देवता भवति हरि दास के सकल साथन रहित

८३

जन कृपालो ॥

83

रागिनी रास कली ताल ॐ जसनाके पद ॥ जस
नसी नाहिकोउ औरदाता ॥ इति प्रस्थाई ॥ जेउन
की सरण जातहैं दोरिकें नाहिकोतेहि छिन करि
स नाथा ॥ इत्यंतश । अथ प्रभोगः ॥ एहि प्रणामो
नरसाखो नरसना एक सहस्र रसना कौन दई विधा
ता ॥ गोविंद बलि तन मन धन बारनै सबनकी जी

श-श

८५

वन इनहीके हाथा ॥ रागिनी राम कली नाल
जमनाके पद ॥ श्याम सेरा श्याम कैर हीरो जसने
इति अस्थाई ॥ सूरत अम विडुतै मिथ सीवहि चली
मानो आनर आली रहीन भवने ॥ श्येत रा । अथ
आभोगः ॥ कोटि कामहि वारों रूपनैननि हारों
लाल गिरिथरन सेरा करत रमने ॥ हरषि गोविंद

रागिनी रास कली ताल ॐ जसनाके पद ॥ जस
नसी नाहिकोउ औरदाता ॥ इति प्रस्थाई ॥ जेइन
की सरण जातहैं दोरिकें नाहिकोतेहि छिन करि
स नाथा ॥ इत्यंत रा । अथ प्राभोगः ॥ एहि गणगो
नरसाखो नरसना एक सहस्र रसना कौन दई विथा
ता ॥ गोविंद बलि तन मन धन बारनै सबनकी जी

श.श.

८६

86

करै गोविंद जसना की जापर कृपा सोई बलभक्त
ल शरण आयो ॥ रायिनी राम कली ताल ॥
जसना के पद ॥ चरण ऐक जरेण जसना देनी
इति प्रस्थाई ॥ कलि जरा जीव उदारत कारण
काटत पाप अवधार पेनी ॥ इत्येतरा । अथ आभो
गः ॥ शरण प्रति शरण यह आय भक्त नेह सकल

प्रभु देवि इनकी और मानो नव डल हनी आईग
वने ॥ रागिनी राम कली ताल ॐ जमुना के पद
जसत जस जगत में जोई गायो ॥ इति अष्टाई ॥
ताकी आसक्त कै रहत है प्राण पति नैन में बैन मे
रस जो छाये ॥ इत्यंत रा । अथ आभोगः ॥ वेद
प्रमाण की बात यह प्रगम है प्रेम को ऊन पायो ॥

राधा

८७

87

मन मोहन प्रियके संग भक्तन की कैज भीरे ॥ स्त्री
त स्वामी गिरि धरत श्रीविदलता विना नै कनही
थरत थीरे ॥ रागिनी राम कली ताल जस
नाके पद ॥ जोई सख जसना यह नाम आवे ॥ ३
तिअस्थारि ॥ तारुपर कृपा करत श्रीवल्लभ प्रभु
सोई जसना जीको भेद पावे ॥ इमेतरा ॥ अथ

यह सबकी होज सेनी ॥ गोविंद प्रभु विना रहत न
हि एक बिना अतिहि आनंद चंचल जो नेनी ॥ रागि
नी राम कली नाल ॐ जसना के पद ॥ थाइ के जा
इजे जसना तीरे ॥ इति अम्याई ॥ तिनही की महि
मा कहो लौ वर नीये जाई परसत प्रेम भोग नीरे ॥
इत्येतदा । अथ आभोगः ॥ तिस दिन के लि करत